हिन्दी दैनिक
# प्रत्यूष नवबिहार
जोहार
रांची संस्करण
www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com
रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित
रांची ● रविवार ● 05.01.2025 ● वर्ष : 15 ● अंक : 164 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

## एनआईए की बोकारो और हजारीबाग में दबिश भाकपा माओवादी बच्चा सिंह को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** एनआईए (राष्ट्रीय जांच एजेंसी) ने झारखंड के बोकारो जिले के बच्चा सिंह उर्फ बच्चा बाबू सिंह को गिरफ्तार किया है। इस पर प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी और उसके शीर्ष नेताओं से जुड़े होने का आरोप है। वह नक्सली संगठन की विचारधारा को बढ़ावा देता था। झारखंड समेत अन्य जगहों पर नक्सली गतिविधियों के लिए पैसे जुटाने का काम करता था।

### पूछताछ के बाद एनआईए ने किया गिरफ्तार

डीवीसी पावर प्लांट के सीएचपी में बतौर सप्लाई मजदूर के रूप में कार्यरत और प्रतिबंधित मजदूर संगठन समिति के पूर्व केंद्रीय महामंत्री बच्चा सिंह को एनआईए की टीम ने शुक्रवार को रांची में पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया था। इसके पूर्व एनआईए की टीम ने बच्चा सिंह को पूछताछ के लिए तीन जनवरी को रांची में बुलाया था। बोकारो थर्मल थाना के इंस्पेक्टर भौलेंद्र कुमार सिंह ने पूछे जाने पर बताया कि एनआईए ने बच्चा सिंह को पूछताछ के लिए रांची बुलाया था और एक नोटिस तामिला कराने को दिया गया था। नोटिस को 1 जनवरी को बच्चा सिंह को तामिला करवा दिया गया था। सरकार द्वारा मजदूर संगठन समिति को प्रतिबंधित कर दिए जाने के बाद से डीवीसी पावर प्लांट में सप्लाई मजदूरों की नयी समिति असंगठित मजदूर मोर्चा का गठन किया गया था, परंतु बच्चा सिंह उस संगठन में किसी भी पद पर नहीं था।

### 2012 में भी किया गया था गिरफ्तार

इससे पहले वर्ष 2012 में भी बोकारो थर्मल के तत्कालीन थाना प्रभारी सुजय विद्यार्थी ने बच्चा सिंह को गिरफ्तार किया था। बाद में मजदूर संगठन समिति में कार्य के दौरान भी उसकी गिरफ्तारी हुई थी। बच्चा सिंह के परिजनों का कहना है कि तीन जनवरी को एनआईए के बुलावे पर वे रांची गए थे परंतु लौटकर घर नहीं आए हैं।

### एनआईए की आठ टीमों ने की छापेमारी

एनआईए की आठ टीमें शनिवार को बोकारो पहुंचीं और नक्सली समर्थकों के यहां छापेमारी कीं। बोकारो के एसपी मनोज स्वगीर्यारी ने एनआईए की छापेमारी की पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि एनआईए की टीम सुबह में ही बोकारो जिले के गोमिया और चतरोचट्टी पहुंची और कई जगहों पर छापेमारी की। बोकारो पुलिस ने भी छापेमारी में एनआईए का सहयोग किया।

### उग्रवाद प्रभावित इलाके में एनआईए का एक्शन

उग्रवाद प्रभावित चतरोचट्टी क्षेत्र के चुट्टे, लोधी सहित गोमिया थाना क्षेत्र के धमधरवा जैसे सुदूरवर्ती गांवों में एनआईए की टीम पहुंची। नक्सलियों के मददगार और अवैध गतिविधियों में संलिप्त लोगों के खिलाफ एनआईए ने कार्रवाई की।

### हजारीबाग के नवादा गांव में भी एनआईए की टीम ने दी दबिश

जिले के विष्णुगढ़ थाना क्षेत्र के नवादा स्थित में दिल मोहम्मद नामक शख्स के घर पर आज अहले सुबह एनआईए की टीम बोकारो पुलिस और हजारीबाग पुलिस के सहयोग से पहुंची। जहां उन्होंने घंटो उनके घर पर छापामारी की और कई प्रमुख जानकारी भी इकट्ठा किया। इसके साथ ही जाने वक्त एनआईए की टीम ने इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस जैसे लैपटॉप और फोन भी साथ लेकर चले गए हैं। बताया जाता है कि विगत वर्ष अपने आप को झारखंड पुलिस के समक्ष सरेंडर करने वाले बोकारो जिला के गोमिया प्रखंड अंतर्गत झुमरा पहाड़ के आसपास क्षेत्र में एमसीसी नक्सली संगठन से जुड़े सक्रिय सदस्य दुर्योधन महतो उर्फ मिथिलेश सिंह उर्फ बडका दा नें सरेंडर किया था। विगत दो दशक पूर्व यह नक्सली संगठन के एरिया कमांडर बताया जा रहा था। जिसको लेकर पुलिस लगातार छानबीन और जांच कर रही थी। बताया यह भी जाता है कि बोकारो जिले के गोमिया प्रखंड व चतरो चट्टी थाना अंतर्गत लोधी पंचायत के रहने वाले दिल मोहम्मद एमसीसी नक्सली संगठन के एरिया कमांडर दुर्योधन महतो के करीबी है और यह कई वर्षों से अपने ससुराल नवादा में रहा करता था। पुलिस सूत्रों के मुताबिक एनआईए की टीम हजारीबाग पहुंची और उन्होंने नक्सली गतिविधियों से जुड़े लोगों से पूछताछ की इसके साथ ही कई सबूत इकट्ठा कर साथ ले गए हैं। वही एनआईए के रडार पर आए नक्सल संगठन से जुड़े सदस्यों को पूछताछ के लिए एनआईए ने समय भी दिया है।

## मंईयां सम्मान समारोह में जुटेंगी तीन लाख से अधिक महिलाएं, मुख्यमंत्री होंगे शामिल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** उपायुक्त मंजूनाथ भजन्त्री ने राज्यस्तरीय मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान कार्यक्रम के सम्पूर्ण कार्यक्रम की तैयारियों की क्रमवार समीक्षा के दौरान संबंधित अधिकारियों को कई निर्देश दिए। उपायुक्त ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कार्यक्रम संचालन के साथ-साथ सभी व्यवस्थाओं जैसे-लाभुकों के खाने, पेयजल, बैठने, शौचालय, बिजली, पार्किंग, बस और वाहनों के लिए रुट मार्किंग, अग्निशमन, मेडिकल टीम, साइनेज, एम्बुलेंस एवं अन्य सभी व्यवस्थाएं ससमय कराने को कहा। पूरे कार्यक्रम स्थल पर सेक्टरवार दंडाधिकारियों और पुलिस पदाधिकारियों की तैनाती की जा रही है, जो विधि व्यवस्था को संभालेंगे। साथ ही इतने बड़े कार्यक्रम आयोजन को लेकर ट्रैफिक की समस्या उत्पन्न ना हो इसके लिए क्यूआरटी टीम तैनात रहेगी, जो पूरी तरह ट्रैफिक को सुगम बनाए रखने की जिम्मेदारी निभाएगी।

मंईयां सम्मान योजना कार्यक्रम के मद्देनजर शनिवार को रांची के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) चंदन कुमार सिन्हा सहित वरीय अधिकारियों ने नामकुम पहुंचकर सुरक्षा से लेकर ट्रैफिक मैनेजमेंट तक के लिए सभी पुलिस अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने पुलिस अफसरों और कर्मियों को ब्रीफ भी किया।

सिन्हा ने बताया कि छह जनवरी को मंईयां सम्मान योजना को लेकर रांची में बड़े कार्यक्रम का आयोजन होगा। इसमें लगभग तीन-चार लाख लोगों के पहुंचने की उम्मीद है। इसी कार्यक्रम को लेकर सुरक्षा, भीड़ मैनेजमेंट और ट्रैफिक मैनेजमेंट को लेकर मंथन किया गया। साथ ही कार्यक्रम में जिन अफसरों और कर्मियों की ड्यूटी लगी है, उन्हें ब्रीफ भी किया गया। मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के राज्य स्तरीय समारोह की तैयारी जोर-शोर से चल रही है। छह जनवरी को नामकुम खोजा टोली स्थित आर्मी ग्राउंड में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन, विधायक कल्पना सोरेन, मंत्री और अन्य नेता शामिल होंगे। कार्यक्रम में सबसे ज्यादा महिलाएं आएंगी। ऐसे में राज्य के अलग-अलग हिस्सों से आने वाली महिलाओं को किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत न हो इसका पूरा ध्यान रखा जा रहा है। उनके आने-जाने वाली सड़कों पर किसी तरह की परेशानी न हो। जब वे सभा स्थल पर पहुंचे तो उनके लिए वाशरूम के साथ पानी की समुचित व्यस्था हो। इन सबके लिए हर तरह के इंतजाम किए जा रहे हैं। समारोह स्थल की सुरक्षा को लेकर पांच हजार बलों की तैनाती की जाएगी। इसके साथ अलग-अलग विंग बनाकर उसमें मजिस्ट्रेट की भी तैनाती की जाएगी। कार्यक्रम वाले दिन के लिए अलग से ट्रैफिक प्लान जारी किया जाएगा। कार्यक्रम में राज्य के सभी जिलों से लाभुकों को आना है। ऐसे में उनके बैठने के लिए अलग-अलग ब्लॉक बनाए गए हैं।

**एक नजर**

### नौ जनवरी को लगेगा ऋण वसूली सह ऋण मेला

**बरही** : बरही प्रखंड के करियातपुर पंचायत भवन में आगामी 9 जनवरी को ऋण वसूली सह ऋण मेला का आयोजन किया जाएगा। इस मेले का आयोजन बैंक ऑफ इंडिया करियातपुर शाखा के माध्यम से किया जा रहा है। मेले में हजारीबाग क्षेत्रीय कार्यालय के सभी महत्वपूर्ण अधिकारी उपस्थित रहेंगे। इस आयोजन की जानकारी रिकवरी डिपार्टमेंट के मुख्य प्रबंधक विमल कांत झा ने दी। उन्होंने बताया कि इस ऋण मेले में पुराने एनपीए खातों का समाधान किया जाएगा। इसके अलावा, किसानों के लिए केसीसी खातों का निष्पादन भी किया जाएगा ताकि उन्हें बेहतर आर्थिक सहायता मिल सके। मुख्य प्रबंधक विमल कांत झा ने यह भी कहा कि इस मेले के दौरान पुराने ऋण में रियायत देकर नए ऋण प्रदान करने की प्रक्रिया भी शुरू की जाएगी, जिससे किसानों और स्थानीय उद्यमियों को बड़ा लाभ मिलेगा। ऋण मेले का उद्देश्य वित्तीय सेवा उपलब्ध कराना और ग्रामीण क्षेत्र में ऋण से जुड़ी समस्याओं का समाधान करना है। स्थानीय लोगों से अपील की गई है कि वे इस अवसर का लाभ उठाएं और अपनी ऋण से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए मेले में उपस्थित हों।

### आठ महीने से वेतन नहीं मिलने के कारण मजदूर बैठे भूख हड़ताल पर

**चौपारण** : प्रखंड पंचायत पाण्डेयबारा में संचालित जीटी रोड निर्माण कम्पनी राज केशरी कंस्ट्रक्शन कम्पनी व कौशल इंजिनियरिंग लिमिटेड द्वारा मजदूरों को लगभग 8 महीनों से वेतन नहीं दिया गया है, जिस कारण सभी मजदूर भूख हड़ताल पर बैठ गए हैं। मजदूरों से हुई बातचीत में उन्होंने बताया कि हमलोगों को 8 महीनों से वेतन नहीं मिला है, कंपनी द्वारा बार-बार सिर्फ आश्वासन मिलता है, इसके अलावा कुछ भी नहीं मिलता। हमनें इसको लेकर थाना में लिखित आवेदन भी दिया, हमनें विधायक मनोज यादव जी को भी बताया जिसके बाद विधायक जी ने एनएचआई के पीडी से बात भी किया। इन सब के बावजूद किसी तरह का कोई असर नहीं दिखा, अब हम सभी मजबूर हो गए हैं हमलोगों के पास अब एक ही रास्ता है प्राण त्याग देना। शुक्रवार से हम सभी मजदूर लोग भूख हड़ताल पर बैठे हैं, आज हमारा दूसरा दिन है लेकिन अभी तक कम्पनी का कोई भी अधिकारी देखने तक नहीं आया कि हम इतनी भारी ठंड में कैसे रह रहे हैं। और जब तक हमारा बकाया वेतन नहीं मिलता है हमारा हड़ताल जारी रहेगा। अगर इस बीच किसी मजदूर कि तबियत बिगड़ती है या कुछ होता है तो उसका जिम्मेदार यह कम्पनी होगी।

### संजीव बेदिया ने 100 बुजुर्गों के बीच किया कंबल वितरण

**बड़कागांव** : बड़कागांव प्रखंड गरसुल्ला पंचायत के अंतर्गत शिखर बाड़ा टोला में झारखंड मुक्ति मोर्चा का केंद्रीय सचिव सह झारखंड सरकार राज्य परिवहन प्राधिकार सदस्य संजीव कुमार बेदिया ने कपकपाती ठंड को देखते हुए 100 गरीब महिलाओं एवं बुजुर्गों को कंबल देकर ठंड से बचाने का काम किया। उपस्थित लोगों को बेदिया ने कहा अभी के समय में ठंड बहुत ही ज्यादा पड़ रहा है मौसम परिवर्तन होने के कारण ठंड बढ़ गया है आप सभी लोग सुबह में घर से बाहर न निकले सूर्य निकलने के बाद ही घर से बाहर निकले, ताकि आप सभी को तबीयत खराब ना हो, इसका भी ध्यान आप रखें। मौके पर झामुमो केंद्रीय सदस्य सोनाराम मांझी, जिला उपाध्यक्ष संजय करमाली, इत्यादि दर्जनों लोग शामिल है।

# चौपारण पुलिस ने डाक पार्सल वाहन लूट कांड के दो आरोपियों को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**चौपारण** : चौपारण पुलिस ने डाक पार्सल वाहन से चोरी के आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। थाना द्वारा मिली जानकारी के अनुसार चौपारण के वृंदा में नए साल के दिन यानी 1 जनवरी को पांच चोरों ने डाक पार्सल वाहन से करीब 3 लाख रुपए के सामान की चोरी की घटना को अंजाम दिया था। चौपारण पुलिस ने बताया कि डाक पार्सल वाहन लूटकांड में पांच में से दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। जिसमें एक निरुद्ध बालक और दूसरा सुधीर कुमार है, दोनों वृंदा गांव के निवासी हैं। डाक पार्सल वाहन कोडरमा से चतरा जा रहा था, जिसे वृंदा के पास तीन से पांच चोरों ने लूट लिया। वाहन से लूटे गए सामान को वृंदा में ही एक पुलिया के नीचे छिपा दिया गया था, जिसे जब्त कर थाना लाया गया। साथ ही बताया कि ग्राम वृंदा में सुनसान स्थान पर डाक पार्सल वाहन की लूट हुई थी। इस संबंध में वादी के लिखित आवेदन पर चौपारण थाना कांड संख्या 02/25 दिनांक 02/01/25 धारा 310(2) भादवि दर्ज कर वरीय पदाधिकारी को सूचित कर कांड में संलिप्त अभियुक्तों के विरुद्ध अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बरही के नेतृत्व में छापेमारी टीम का गठन किया गया। जिसमें थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश चौपारण एवं जांच पदाधिकारी अवर निरीक्षक रोशन कुमार वर्णवाल द्वारा सशस्त्र बल के साथ छापेमारी की गई। छापेमारी के दौरान कांड का उद्भेदन किया गया तथा कांड में संलिप्त अभियुक्त (1) हिरासत में लिए गए एक बालक (2) सुधीर कुमार पिता-स्व. जुगल यादव दोनों निवासी वृंदा थाना चौपारण जिला-हजारीबाग को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों द्वारा दी गई जानकारी पर ग्राम वृंदा में पुलिया के नीचे छिपाकर रखे गए लूटे गए सामान को बरामद कर उचित जब्ती सूची तैयार कर जब्त कर लिया गया है। जिसमें शैडोफैक्स कम्पनी का बोरा मार्क ए से मार्क एफ तक जिसका सील टूटा हुआ, खोल के देखने पर विभिन्न कंपनियों का समान था साथ ही मार्क जी से मार्क एक्स तक सील बंद पाया गया। साथ ही घटना में प्रयुक्त दो मोटरसाइकिल भी जब्त की गई है। दोनों वाहन संख्या जेएच02डीएच- 4130 और जेएच02बीके- 6104 है। गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में भेजकर अन्य अभियुक्तों के विरुद्ध अनुसंधान किया जा रहा है। छापामारी दल में पदाधिकारी- पु०अ०नि० अनुपम प्रकाश थाना प्रभारी चौपारण, पु०अ०नि० रौशन कुमार बर्णवाल, पु०अ०नि० रवि रंजन, पु०अ०नि० सुबिन्द्र राम, स०अ०नि० बादल महतो और चौपारण थाना के सशस्त्र बल शामिल थे।

## स्थानीय वाहनों से टोल वसूली के खिलाफ 6 जनवरी से अनिश्चितकालीन धरना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बरही** : चंदवारा प्रखंड अंतर्गत मदनगुंडी स्थित टोल प्लाजा पर स्थानीय वाहनों से टोल वसूली के विरोध में शुक्रवार को सर्वदलीय बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिप सदस्य महादेव राम ने की, जबकि संचालन जेएलकेएम नेता सह पूर्व विधायक प्रत्याशी कृष्णा यादव ने किया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 6 जनवरी से स्थानीय लोग टोल प्लाजा के निकट अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन करेंगे। स्थानीय लोगों का कहना है कि पूर्व में भी इस मांग को लेकर जिला प्रशासन और वरीय अधिकारियों को सूचित किया गया था, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। वक्ताओं ने कहा कि हजारीबाग के नगवां टोल प्लाजा पर स्थानीय वाहनों को टोल फ्री रखा गया है, लेकिन मदनगुंडी टोल प्लाजा पर ऐसा नहीं किया जा रहा। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के नियमों का हवाला देते हुए कहा कि दो टोल प्लाजा के बीच कम से कम 60 किमी की दूरी होनी चाहिए, जबकि नगवां और मदनगुंडी टोल प्लाजा की दूरी मात्र 42 किमी है, जो नियम के विरुद्ध है। मौके पर पूर्व प्रमुख महेन्द्र यादव, मुखिया श्यामदेव यादव, युवा नेता अरविंद यादव, रामप्रसाद यादव, जेएलकेएम नेता रविशंकर यादव, पूर्व प्रत्याशी कृष्णा यादव, पूर्व मुखिया विरेन्द्र पासवान, पूर्व कांग्रेस जिला अध्यक्ष मनोज साहब पिंकू, बंटी ओझा, बस एसोसिएशन के अध्यक्ष महावीर यादव, उमेश यादव, रोहित कुमार, अज्जू सिंह, राजकुमार यादव, मोती दास, महेश रजक, अरुण यादव, सुरेश यादव, काली यादव, सनी यादव, रवि कुशवाहा, शीतल यादव, पप्पू यादव के अलावे कई लोग मौजूद थे। बैठक में निर्णय लिया गया कि जब तक स्थानीय वाहनों को टोल फ्री नहीं किया जाता, तब तक धरना प्रदर्शन जारी रहेगा।

## ग्रामीणों ने जेएसडब्ल्यू कोल कंपनी के खिलाफ किया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बड़कागांव** : कोल कंपनियों के खिलाफ पिछले कई वर्षों से गोंदलपुरा, बादाम, अंबाजीत, बाबूपारा, रावत पारा, गाली, बालोदर हाहे, मोतरा, व अन्य गांव के ग्रामीण द्वारा विरोध प्रदर्शन जारी है। शनिवार को अंबाजीत गांव में जेएसडब्ल्यू कोल कंपनी की बैठक या ग्राम सभा होने की संभावना को लेकर भारी संख्या में ग्रामीण अंबाजीत गांव एवं महुगाई खुर्द पंचायत भवन के समीप मैदान पहुंच कर कंपनी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने लगे। सुबह 9:00 बजे से लेकर दोपहर 2:00 बजे तक सैकड़ो ग्रामीण डंडे, पारंपरिक हथियार के साथ डटे रहे, कंपनी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते रहे। इस दरमियान जेएसडब्ल्यू कंपनी की किसी प्रकार का ना बैठक हुई ,और ना ही ग्राम सभा हुई। ग्रामीणों ने कहा कि, ग्रामीणों को बताएं बिना जेएसडब्ल्यू कंपनी चोरी छुपे ग्राम सभा करना चाहती है, दलालों के माध्यम से संभावित ग्राम सभा होने की सूचना हम लोगों की मिली थी। जिसे लेकर हम लोग इकट्ठा हुए और कंपनी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किए। हम ग्रामीण किसी भी कंपनी को स्थापित नहीं होने देंगे। अपनी तीन फसलीय जमीन से पूर्वज समय से ही हम लोग जीविपार्जन करते आ रहे हैं। हम अपने बच्चों की भविष्य के लिए हमें, अपनी जान की कुबार्नी भी अगर देनी पड़े, तो हम लोग पीछे नहीं हटेंगे। अपनी जमीन को बचाने के लिए हमें जो भी कुछ करना होगा हम करेंगे। लोगों ने आगे कहा की कुछ वर्ष पूर्व हम ग्रामीणों के विरोध के कारण एमटा कोल ब्लॉक, निको जायसवाल कोल ब्लॉक, और बिहार इलेक्ट्रिक बोर्ड को यहां से भागना पड़ा था। ज्ञात हो कि ग्रामीणों ने 23 दिसंबर को एकजूटता दिखलाते हुए एनटीपीसी बादाम कोल ब्लॉक के खिलाफ जन सुनवाई का पुरजोर विरोध किया था, जिसके कारण अंचलाधिकारी को जनसुनवाई रद्द करने की लिखित जानकारी ग्रामीणों को देनी पड़ी थी।

## डीएमएफटी मद द्वारा प्रदत उपकरणों का हो समुचित उपयोग, विभाग इसका रखे ख्याल : उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

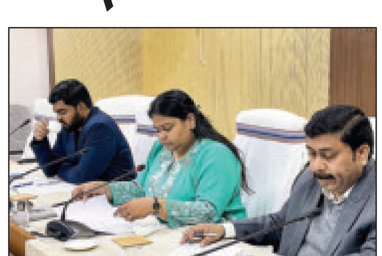

**हजारीबाग** : डीएमएफटी द्वारा संचालित कार्यों की अद्यतन स्थिति को लेकर समीक्षा बैठक 4 जनवरी को उपायुक्त नैंसी सहाय की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में उप विकास आयुक्त इश्तियाक अहमद मौजूद रहे। समाहरणालय सभाकक्ष में हुई डीएमएफटी प्रबंधकीय समिति की बैठक में डीएमएफटी मद द्वारा नए प्रपोजल पर चर्चा करते हुए उपायुक्त ने कहा कि जनहित से जुड़ी तथा प्राथमिकता क्षेत्र जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि एवं महिला एवं बाल विकास आदि से संबंधित कार्यों को शामिल करें। उन्होंने चुनाव पूर्व स्वीकृत कार्यों की निविदा प्रक्रियाओं की जानकारी ली। उन्होंने डीएमएफटी मद द्वारा स्वास्थ्य विभाग में उपलब्ध कराए गए उपकरणों के रख रखाव व क्रियाशीलता पर विशेष ध्यान देने को कहा। छोटे मोटे कारणों से महंगे उपस्कर बंद न हो तथा इसकी पूरी मॉनिटरिंग हो इस बाबत जिला स्तर पर टीम गठित करने का निर्देश दिया ताकि किसी भी प्रकार की तकनीकी अड़चनों को तत्काल दूर कर उन उपकरणों को क्रियाशील बनाया रखा जा सके। उपायुक्त ने कहा कि डीएमएफटी मद से किसी भी विभाग के जरूरतों या गैप को कम करना उद्देश्य है। उन्होंने कहा से सभी प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में डीएमएफटी मद से अनेकों उन्नयन के कार्य किए जा रहे है,जिनका समुचित सदुपयोग की अपेक्षा की जाती है। हर स्कीम की सस्टेनेबिलिटी संबंधित विभाग की जिम्मेवारी है। उपायुक्त ने सभी स्वीकृत किए गए योजनाओं के अद्यतन स्थिति व टेंडर प्रक्रिया की जानकारी ली। मौके पर उपायुक्त एवं उप विकास आयुक्त ने सभी अधिकारियों व एजेंसियों को निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने तथा अपनी जिम्मेवारी सुनिश्चित करने को कहा साथ ही संचालित योजना एवं निर्माण कार्यों कि नियमित रूप से स्थल का भ्रमण का मॉनेटरिंग करने का निर्देश दिया गया। बैठक में जिला खनन पदाधिकारी अजीत कुमार, जिला योजना पदाधिकारी पंकज कुमार तिवारी मौजूद रहे।

## बर्तन दुकान से 2 लाख 80 हजार की चोरी मामले दो गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**चौपारण** : पुलिस की गश्ती और निगरानी के दावों की पोल खोलते हुए चोरों ने सर्द रात में चौपारण थाना के समीप बर्तन दुकान में बड़ी चोरी की थी। चोरों ने दुकान में घुसकर करीब 2 लाख 80 हजार रुपये चुरा लिए थे। जिसमें चौपारण पुलिस द्वारा दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। यह घटना 15 दिसंबर को दुकान बंद होने के बाद घटी थी। पीड़ित दुकानदार मुकेश केशरी ने बताया कि वह वाटिका बर्तन स्टोर नाम से बर्तन की थोक दुकान चलाता है। शाम को दुकान बंद कर वह अपने घर चला गया। सुबह जब उसने दुकान खोली तो चोरी का पता चला। घटना की सूचना चौपारण थाना को दी गई, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और जांच कर प्राथमिकी दर्ज की। साथ ही दुकानदार मुकेश केशरी ने बताया कि जब वह दुकान खोलने पहुंचा तो देखा कि चोर दुकान में घुसकर 2 लाख 80 हजार रुपये चुरा लिए। इस घटना के संबंध में चौपारण थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश ने बताया कि मामले की जांच चल रही थी। जिसे 3 जनवरी को चौपारण थाना कांड संख्या 412/24 दिनांक 15-12-2024 धारा-331(4)/305 आईपीसी के तहत अभियुक्त 1.कारू कुमार, उम्र-लगभग 22 वर्ष, पिता-स्व.द्वारिका भुइयां, निवासी-ताजपुर एवं 2.बिक्रम कुमार, उम्र-लगभग 19 वर्ष, पिता-जगरनाथ राम, निवासी-बेंदुबारा, दोनों थाना-चौपारण, जिला-हजारीबाग को विधिवत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

## विधायक प्रदीप प्रसाद ने संजीवनी सेवा कुटीर का किया उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

- संजीवनी सेवा कुटीर मरीजों के परिजनों को राहत और स्वास्थ्य सुविधाओं को सुगम बनाने का सराहनीय प्रयास है : मनीष जायसवाल
- यह सेवा केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा : कालीचरण सिंह

**हजारीबाग** : हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने अपने जन्मदिवस के विशेष अवसर पर जनता को एक ऐतिहासिक सौगात दी। उन्होंने शनिवार को सदर अस्पताल परिसर में संजीवनी सेवा कुटीर का भव्य उद्घाटन किया गया। यह सेवा केंद्र शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले मरीजों और उनके परिजनों को राहत प्रदान करेगा। मुख्य अतिथि के रूप में हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल और चतरा सांसद कालीचरण सिंह मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथियों में बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी,मांडू विधायक तिवारी महतो और चतरा विधायक जनार्दन पासवान शामिल हुए,साथ ही कई प्रमुख नेता और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सर्वप्रथम सबसे पहले प्रदीप प्रसाद ने सभी अतिथियों को पौधा भेंट कर स्वागत व अभिनंदन किया जिसके बाद कार्यक्रम की शुरूआत फीता काटने के साथ हुई, जिसके बाद दीप प्रज्वलन किया गया। सांसद, विधायक और अन्य अतिथियों ने सेवा कुटीर का अवलोकन किया और इसके उद्देश्यों की सराहना की। इसके अतिरिक्त, भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह, चतरा भाजपा जिला अध्यक्ष रामदेव सिहं भोगता, प्रसिद्ध यूट्यूबर आर राजेश, हॉस्पिटल के सी.एस, जिला परिषद सदस्य, भाजपा नेतासैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता भी मौजूद रहें। कार्यक्रम के समापन पर मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों ने सदर विधायक प्रदीप प्रसाद को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं और बधाई दी। इस विशेष क्षण को और यादगार बनाने के लिए जन्मदिन का केक काटने का आयोजन किया गया। सांसद, विधायक सहित सभी विशिष्ट अतिथियों ने एक साथ केक काटा और प्रदीप प्रसाद को केक खिलाकर शुभकामनाएं दीं। इस दौरान सभी अतिथियों ने विधायक के स्वस्थ, सुखद और दीर्घायु जीवन की कामना की। कार्यक्रम का यह हिस्सा आत्मीयता और सौहार्द से भरा रहा। उपस्थित कार्यकर्ताओं और जनता ने तालियों की गड़गड़ाहट से इस पल को और खास बना दिया। मंच पर उपस्थित सभी नेताओं ने प्रदीप प्रसाद के सेवा और समर्पण भाव की सराहना की और उनके नेतृत्व में क्षेत्र के विकास के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की। संजीवनी सेवा कुटीर हजारीबाग के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले मरीजों और उनके परिजनों को 24 घंटे सेवा प्रदान करेगा। यह केंद्र कई सुविधाओं से लैस है, जो मरीजों के परिजनों को तत्काल मदद और स्वास्थ्य सेवा का भरोसा देता है। 24X7 सेवा के माध्यम से सेवा कुटीर में 24 घंटे एक प्रशिक्षित व्यक्ति तैनात रहेगा, जो मरीजों और उनके परिजनों को आवश्यक जानकारी और सहायता प्रदान करेगा। मरीजों को तत्काल सहायता हेतु शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले मरीजों को सेवा कुटीर के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंचाने में मदद मिलेगी।

**संक्षिप्त खबरें**

### सोनू इराकी ने मंत्री दीपक बिरुवा से की शिष्टाचार मुलाकात

**बड़कागांव** : बड़कागांव क्षेत्र के युवा नेता सोनू इराकी झारखंड सरकार के मंत्री दीपक बिरुवा से मिल कर क्षेत्र के समस्याओं से अवगत कराया। वही सोनू ने मंत्री दीपक बिरुवा को बुके देकर नव वर्ष की बधाई दी। सोनू ने जमीन संबंधित एवं बड़कागांव में ट्रैफिक की समस्या को लेकर मंत्री से बात की। इसके अलावा बड़कागांव में आए दिन जाम की समस्या को दूर करने तथा बस स्टैंड बनवाने का मांग किया। आगे उन्होंने ध्यान आकृष्ट कराते हुए बताया कि। अंचल में जमीन संबंधित काम को भी लेकर जनता को काफी चक्कर लगाना पड़ता है। विस्थापित प्रभावित परिवारों को कंपनी में रोजगार की भी बात कही। इस पर मंत्री ने भरोसा दिलाया की जमीन संबंधित एवं परिवहन की कोई भी समस्या हो तो आप लोग जिलाधिकारी से मिलकर अपनी शिकायत दर्ज कराए। समस्या का समाधान होगा।

### पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला ने दी नववर्ष की शुभकामनाएं

**बरही** : बरही प्रखंड के विजैया चौक स्थित शनिवार बाजार में पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला ने प्रमुख कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान उन्होंने सभी से 13 जनवरी को मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित होने वाले तिलकुट-चूड़ा कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया। पूर्व विधायक ने कहा कि यह कार्यक्रम हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आयोजित किया जाएगा और यह परंपरा क्षेत्र में भाईचारे और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। इस मौके पर उप प्रमुख देवलाल कुशवाहा, पूर्व मुखिया दशरथ यादव, पूर्व मुखिया रघुवीर यादव, सपा प्रखण्ड अध्यक्ष मो. वारिस अंसारी, मो. शरीफुल हक, अशोक ठाकुर, मुनिलाल ठाकुर, राजेन्द्र यादव, रामचंद्र यादव, अशोक ठाकुर, वीरेंद्र यादव, रामेश्वर पांडे शहंशाह समेत कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपना समर्थन और योगदान देने की बात कही।

### करियातपुर व धनवार पंचायत के कई गांवों में बनता है अवैध रूप से महुआ शराब

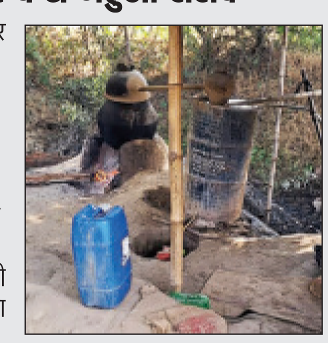

**बरही** : बरही प्रखंड के धनवार पंचायत अंतर्गत कई गांवों में अवैध रूप से महुआ शराब के भट्ठों का संचालन जोरों पर है। कोरियाडीह, सिंहपुरखुर्द (बांझीटांड़), बरदाग (पतरमरवा), करियातपुर और दुधपनिया जैसे क्षेत्रों में ये भट्ठियां सक्रिय रूप से चल रही हैं। इन भट्ठियों से तैयार की जा रही शराब का सेवन न केवल युवा वर्ग, बल्कि बुजुर्गों द्वारा भी बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। इसका प्रभाव सामाजिक और पारिवारिक ढांचे पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। आए दिन घरेलू हिंसा के मामले प्रकाश में आ रहे हैं, जो इस समस्या की गंभीरता को उजागर करते हैं। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि इन अवैध गतिविधियों के कारण इलाके में सामाजिक वातावरण बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। शराब की बढ़ती लत के चलते पारिवारिक कलह, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार और बच्चों के भविष्य पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। यह मामला प्रशासन के लिए एक चुनौती बन गया है। स्थानीय निवासियों ने पुलिस प्रशासन व उत्पाद विभाग से अपील की है कि इन अवैध भट्ठियों को बंद कराकर क्षेत्र को नशामुक्त किया जाए। साथ ही, दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं किया गया, तो यह स्थिति और भी विकराल हो सकती है। वहीं, जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को शराब की लत से बचाने की भी जरूरत है। प्रशासन की ओर से इस विषय पर क्या कदम उठाए जाते हैं, यह देखना महत्वपूर्ण होगा। ग्रामीणों की मांग है कि समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए ठोस प्रयास किए जाएं और क्षेत्र में शांति और सामाजिक समरसता बहाल की जाए।

### राशन गोदाम से ढाई लाख रुपये की खाद्य सामग्री की चोरी

**बड़कागांव** : हजारीबाग रोड स्थित पोस्ट ऑफिस के पीछे सीताराम खंडेलवाल के बने मकान में बना गोदाम से अज्ञात चोरों ने दरवाजा तोड़कर लगभग ढाई लाख रुपए की खाद्य सामग्री चुरा ले गए। जिसमें चावल, दाल, डालडा, तेल चूड़ा के अलावा अन्य खाद्य पदार्थ शामिल है। मामले को लेकर पीड़ित सीताराम खंडेलवाल ने थाने में आवेदन देकर पुलिस से जांच कर कार्रवाई करने की मांग की है। खंडेलवाल ने बताया कि पिछले माह ही मेरे भाई की पत्नी का इंतकाल हो गया था जिसके कारण उस नए घर में रहना छोड़ दिए थे। और चौक पर पुराने घर में रहने लगे थे। बैंक से कर्ज लेकर दुकानदारी चला रहा था।

### एनटीपीसी के सौजन्य से असहाय लोगों के बीच 100 कंबलों का किया गया वितरण

**केरेडारी** : प्रखंड क्षेत्र में बेहतासा बढ़ती हुई ठंड को देखते हुए कराली पंचायत के सभी 9 वार्ड में वृद्ध असहाय लोगों के बीच मुखिया अशोक राम के द्वारा कंबल का वितरण किया गया। एनटीपीसी कोल माइंस परियोजना केरेडारी द्वारा उपलब्ध कराए गए तकरीबन 100 कंबल का वितरण बुजुर्ग महिलाएं एवं बुजुर्ग पुरुषों के बीच वितरित किए गए। मौके पर बीस सूत्री अध्यक्ष अर्जुन राम पंचायत समिति सदस्य सुरेश भुईयां उप मुखिया भरत पांडेय वार्ड सदस्य विकाश कुमार पवन कुमार किरण देवी एवं मनोहर तिवारी भुगल भुईयां कृष्णा सिंह उपेंद्र राम युगल राम समेत काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

### बड़कागांव उप प्रमुख ने सदर विधायक को जन्मदिन की बधाई दी

**बड़कागांव** : शनिवार को हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद के जन्मदिन की अवसर पर बड़कागांव उप प्रमुख बचनदेव कुमार ने बुके देकर जन्मदिन की बधाई दी है। उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। साथ ही बड़कागांव की समस्याओं पर भी चर्चा की। सदर विधायक ने उप प्रमुख को हर समय हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया है।

## एक नजर

### नप गये राज्य सेवा के अफसर संजय प्रसाद, चलेगी विभागीय कार्यवाही

**रांची :** राज्य सरकार ने झारखंड प्रशासनिक सेवा के अफसर संजय कुमार प्रसाद के खिलाफ विभागीय कार्यवाही चलाने का निर्णय लिया है। हालांकि वे अब रिटायर हो चुके हैं। संजय प्रसाद पर पथ निर्माण विभाग में ठेके में गड़बड़ी का आरोप है। उन पर विभागीय निविदा समिति के सदस्य के रूप में टेंडर की दर से 10 प्रतिशत से ज्यादा कम कीमत वाले टेंडर को एल वन मानकर टेंडर आवंटित करने का भी आरोप है। इस पूरे मामले में विभागीय जांच संचालन पदाधिकारी रिटायर्ड आईएएस सुनील कुमार को बनाया गया है। साथ ही संजय प्रसाद से 15 दिनों के अंदर जवाब भी देने को कहा गया है।

### नगर निगम से निबंधित वेंडर्स के पुनर्वास की व्यवस्था सुनिश्चित करे प्रशासन : संजय सेठ

**रांची :** रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने शनिवार को कहा कि प्रशासन और नगर निगम अतिक्रमण के नाम पर वेंडर को क्षतिग्रस्त ना करें। नगर निगम ऐसे 5901 वेंडर, जो नगर निगम से निबंधित हैं उनके पुनर्वास की व्यवस्था सुनिश्चित करे। सेठ ने कहा कि 2016 में नगर निगम के सर्वे में रांची के विभिन्न जगहों पर 5901 वेंडर लाइसेंस निर्गत किए गए थे। सर्वे के मुताबिक, जहां पर वेंडर अपनी दुकान लगाकर व्यापार कर रहे हैं वहां से हटाने पर उन्हें दूसरी जगह स्थान मुहैया कराई जाएगी लेकिन प्रशासन के जरिये अभी अतिक्रमण के नाम पर दुकान उजाड़े जा रहे हैं। यही नहीं हद तो तब हो गई कि बिना नोटिस के दुकानदारों को बिना समय दिए सीधे दुकान उजाड़ दिए जा रहे हैं। ठेला को जेसीबी से तोड़ दिया जा रहा है। गाड़ी उलट दी जा रही है, जो बिल्कुल ही गलत है। सेठ ने कहा कि छोटे-छोटे वेंडर को प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत लोन भी मुहैया कराया गया है। हजारों वेंडर चलने वाले लोन लेकर व्यापार कर अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

### जेएसएससी-सीजीएल पेपर लीक मामले में सीआईडी ने जारी किए मोबाइल नंबर

**रांची :** जेएसएससी-सीजीएल पेपर लीक मामले में झारखंड सीआईडी ने परीक्षार्थियों और आम लोगों से अपील करते हुए साक्ष्य या जानकारी मांगी है। इसके लिए सीआईडी ने मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी जारी किए हैं। सीआईडी ने कहा है कि जेएसएससी-सीजीएल परीक्षा, 2023 में कथित गड़बड़ी और अनियमितता के संबंध में किसी परीक्षार्थी या अन्य किसी के पास कोई साक्ष्य या कोई अन्य जानकारी है तो मोबाइल नंबर 9934309058 और ईमेल आईडी (sp-cid@jhpolice.gov.in) पर उपलब्ध करा सकते हैं। इसके अलावा इस संबंध में किसी भी कार्य दिवस पर कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर अनुसंधानकर्ता से मिलकर जानकारी उपलब्ध करवाई जा सकती है। पहचान पूर्णतः गोपनीय रखी जायेगी।
जेएसएससी-सीजीएल पेपर लीक मामले में झारखंड हाई कोर्ट में जनहित याचिका दायर की गई है। चीफ जस्टिस एमएस रामचंद्र राव व जस्टिस दीपक रोशन की खंडपीठ ने सुनवाई करते हुए तत्काल प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया था। साथ ही सीजीएल परीक्षा-2023 का परिणाम अगले आदेश तक घोषित नहीं करने का भी निर्देश दिया था। प्रतिवादी राज्य सरकार, मुख्य सचिव, गृह विभाग के प्रधान सचिव और सदर थाना प्रभारी को प्रार्थियों द्वारा की गयी शिकायत पर तत्काल एफआईआर दर्ज करने, आरोपों की जांच करने और अगली सुनवाई की तारीख तक जांच का स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया है।

# मंत्री इरफान अंसारी ने मल्लिकार्जुन खड़गे से की मुलाकात, मंत्रालय की योजनाओं से कराया अवगत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड सरकार के स्वास्थ्य एवं खाद्य आपूर्ति मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने शनिवार को दिल्ली में कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात की। दोनों की यह मुलाकात लगभग आधे घंटे तक चली, जिसमें मंत्री इरफान ने झारखंड में कांग्रेस पार्टी के संगठन सशक्तिकरण और संबंधित मंत्रालय की योजनाओं से राज्य की जनता को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने के विषय में कांग्रेस अध्यक्ष के साथ चर्चा की। बता दें कि खड़गे ने डॉ इरफान अंसारी की हौसलाफजाई करते हुए कहा कि वो जामताड़ा से लगातार तीसरी बार विधायक बने क्योंकि उन्होंने कांग्रेस पार्टी की विचारधारा अपना कर हमेशा जनता की सेवा की है। इसके साथ ही कांग्रेस पार्टी के संगठन को भी मजबूत करने का काम किया है। इरफान अंसारी ने सिर्फ जामताड़ा ही नहीं बल्कि आम जनता की भलाई के लिए पूरे झारखंड में कार्य किया है। अब वो बतौर मंत्री पहले दिन से ही राज्य की जनता के हित के लिए पूरी मेहनत और ईमानदारी से कार्य कर रहें हैं। इससे मुझे काफी खुशी हुई। मेरा आशीर्वाद डॉ इरफान अंसारी के साथ है। पार्टी को ऐसे ही मजबूत और प्रतिज्ञाबद्ध कार्यकर्ता की जरूरत है। इस पर डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रोत्साहन और आशीर्वाद से मैं अभिभूत हूं। पार्टी ने मुझपर जो विश्वास दिखाया है, उसे मैं पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाऊंगा। बता दें कि इस अवसर पर राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव सैयद नासिर हुसैन साहब, आईसीसी के सचिव प्रणव झा, अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष इमरान प्रतापगढ़ी, कांग्रेस पार्टी के सीनियर नेता पूर्व सांसद मोहम्मद अजहरूद्दीन, झारखंड के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष मंजूर अंसारी सहित कई नेता मौजूद रहे।

## कैशियर लूटकांड और फायरिंग मामले में महिला सहित चार गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** शहर के पंडरा में 13 लाख की लूट और फायरिंग मामले में पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। एसएसपी चंदन सिन्हा के निर्देश पर कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोय के नेतृत्व में गठित एसआईटी की टीम ने रांची और रामगढ़ से एक महिला सहित चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। साथ ही पुलिस घटना में शामिल दो अन्य आरोपितों की तलाश में संभावित ठिकानों पर छापेमारी कर रही है।
उल्लेखनीय है कि बीते 30 दिसंबर को ओटीसी मैदान के पास स्थित आईसीआईसीआई बैंक के समीप से अपराधियों ने दिनदहाड़े आशीर्वाद आटा के कैशियर सुमित गुप्ता से 13 लाख लूटकर भाग गये थे। पहले तो अपराधियों ने पैसे लूटने की नीयत से उस पर हमला किया। यह देखकर बगल में बैठा सुमित कुमार बदमाशों से भिड़ गया। अपराधियों ने पकड़े जाने के डर से उसे गोली मार दी थी। इसके बाद पुलिस ने घटना में शामिल अपराधियों का फोटो जारी कर उन पर 20 हजार रुपये के इनाम की भी घोषणा की थी। आईजी और डीआईजी सहित अन्य अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए थे।

## राज्यपाल से हाई कोर्ट के जस्टिस ने की मुलाकात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से शनिवार को झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिस डॉ. एसएन पाठक ने राजभवन में भेंट की। इस दौरान न्यायमूर्ति ने राज्यपाल को स्वरचित पुस्तक "न्याय पथ के पथिक" भेंट की।
राज्यपाल ने पुस्तक रचना के लिए न्यायमूर्ति को बधाई दी और उनकी इस उत्कृष्ट साहित्यिक उपलब्धि की सराहना की। उन्होंने आशा प्रकट कि यह पुस्तक न्यायिक प्रक्रिया, उसके मूल्यों और आदर्शों को समझने में सहायक सिद्ध होगी।
दूसरी ओर, राज्यपाल से श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग के सचिव मुकेश कुमार ने राजभवन में शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने राज्यपाल को नव वर्ष 2025 की शुभकामनाएं दीं। राज्यपाल ने भी उन्हें नूतन वर्ष की शुभकामनाएं दीं।
इसके अलावा राज्यपाल से राज्यसभा के पूर्व सदस्य अजय मारू ने राजभवन में शिष्टाचार भेंट की। अजय मारू ने राज्यपाल को नव वर्ष की शुभकामनाएं दी। राज्यपाल ने भी मारू को नव वर्ष की शुभकामनाएं दी।

## एनएसयूआई का प्रतिनिधिमंडल रांची विवि के कुलपति से मिला, रखी मांग

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** एनएसयूआई का प्रतिनिधिमंडल शनिवार को रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा से मिला और नववर्ष की बधाई दी। प्रतिनिधिमंडल ने एक ज्ञापन भी सौंपा। प्रदेश उपाध्यक्ष अमन अहमद ने कहा कि रांची विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक आवश्यकता आधारित पद पर आवेदित एक पद के लिए सिर्फ 5 अभ्यर्थियों को डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के लिए बुलाया गया। कहा कि इनमें से सिर्फ तीन अभ्यर्थियों को साक्षात्कार में बुलाया जायेगा। उन्होंने कहा कि हमेशा से यह प्रचलन रहा है कि सभी अभ्यर्थियों को डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन एवं साक्षात्कार में बुलाया जाता है। कहा कि 25 विषयों में 299 नीड बेस्ट सीट है। कुल सीटों पर 1000 से अधिक अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है।

### सभी अभ्यर्थियों को डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन एवं साक्षात्कार के लिए बुलाया जाए

उपाध्यक्ष ने कहा कि हाल ही में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची में संपन्न हुए डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन एवं साक्षात्कार में आवेदित सभी अभ्यर्थियों को बुलाया गया था। भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन ने मांग की कि नया मोनोपॉली का प्रयोग नहीं किया जाये। आवेदन करने वाले सभी अभ्यर्थियों को डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन एवं साक्षात्कार के लिए बुलाया जाये।, ताकि सभी अभ्यर्थियों को मौका मिल सके और उचित व्यक्ति का चयन हो सके। मौके पर प्रदेश सचिव हुसैन अंसारी, डीएसपीएमयू अध्यक्ष आर्यन कुमार, आर्यन सिंह समेत अन्य उपस्थित थे।

## आज राज्य के 26 केंद्रों पर होगी आकलन परीक्षा, 11 हजार पारा शिक्षक देंगे एग्जाम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड में 5 जनवरी 2025 को पारा शिक्षकों की द्वितीय आकलन परीक्षा। इसे लेकर तैयारियां पूरी हो चुकी है। बता दें कि इसके लिए शुक्रवार को झारखंड एकेडमिक काउंसिल के अध्यक्ष डॉ अनिल महतो ने सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की। इस दौरान अध्यक्ष ने परीक्षा की तैयारियों का जायजा लिया। इसके लिए कुल 26 परीक्षा केंद्र बनाये गये हैं।
इस परीक्षा में कक्षा 1 से 5 तक को पढ़ाने वाले कुल 9650 और कक्षा 6 से 8 को पढ़ाने वाले 1600 शिक्षक शामिल होंगे। जानकारी हो कि आकलन परीक्षा वैसे पारा शिक्षकों के लिए ली जाती है, जो शिक्षक पात्रता परीक्षा में सफल नहीं हैं। इस परीक्षा में सफल होने पर शिक्षक के मानदेय में 10 फीसदी तक की बढ़ोतरी की जाती है। वहीं, प्राइमरी और मध्य विद्यालय के शिक्षकों के लिए अलग-अलग मानदेय निर्धारित होता है।

### शिक्षकों को मिलते हैं 4 अवसर

बताया जा रहा है कि पारा शिक्षकों को आकलन परीक्षा में शामिल होने के लिए 4 अवसर मिलते हैं। लेकिन ऐसे शिक्षक जो परीक्षा में शामिल नहीं होते हैं, तो उनका एक अवसर समाप्त माना जाता है। यह परीक्षा कुल 150 अंकों की होती है, जिसमें कक्षा एक से पांच की हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू क्षेत्रीय और जनजातीय भाषा, गणित, पर्यावरण विज्ञान, मानसिक दक्षता और रिजनिंग की परीक्षा ली जाती है। इसमें 30-30 अंकों की जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा व हिंदी और अंग्रेजी की परीक्षा होती है। बताया गया कि कक्षा 6 से 8 में हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और क्षेत्रीय व जनजातीय भाषा, बाल विकास व मानसिक दक्षता और रिजनिंग की परीक्षा अनिवार्य विषय के तहत होती है।

# गोगो दीदी योजना के नाम पर भाजपा ने किया फर्जीवाड़ा जनता से वसूले पैसों को रिकवर करेगी हमारी सरकार : सुप्रियो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झामुमो नेता सुप्रियो भट्टाचार्य ने गोगो दीदी योजना में फर्जीवाड़ा बताते हुए भाजपा पर निशाना साधा है। शनिवार को झामुमो दफ्तर में प्रेस वार्ता के जरिये सुप्रियो ने कहा कि चुनाव से पहले बीजेपी ने गोगो दीदी योजना के नाम पर फर्जीवाड़ा किया है। उन्होंने कहा कि गोगो दीदी के फॉर्म भरवाए जाने के नाम पर 500-500 रुपए वसूले गए थे, उन पैसों की अब रिकवरी कराई जाएगी। सुप्रियो ने यह भी कहा कि गोगो दीदी योजना को केंद्र से लागू करवा कर देश भर की सभी महिलाओं को 2100 रुपए दी जाये। सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि सामाजिक सुरक्षा हमारी पहली प्राथमिकता है। विशेष कर महिला शसक्तीकरण और आर्थिक रूप से उन्हें मजबूत करना हमारी प्राथमिकता है। हमलोगों ने कहा था दिसंबर से मंईयां सम्मान राशि 2500 रुपए करने का वादा किया था जिसे पूरा किया गया। देश में पहली बार कोई सरकार इतनी बड़ी संख्या में 56 लाख महिलाओं को 2500 रुपए प्रतिमाह दे रही है। देश में किसी सरकार ने इतने बड़े पैमाने महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण नहीं किया है। उन्होंने कहा कि जिनके खाते में दिसंबर महीने का पैसा नहीं गया उनके खातों में एकसाथ 5000 रुपए डाले जाएंगे।
बाबूलाल मरांडी पर साधा निशाना सुप्रियो ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा के वह बड़े विद्वान हैं। विधानसभा गठन के एक महीना से अधिक समय हो गया लेकिन उनको अभी तक विधायक दल का नेता नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि 3200 रुपए प्रति क्विंटल धान खरीदने को बात कही थी उसे पूरा नहीं किया। अपने कार्यकाल में भाजपा बताए कि एमएसपी पर कब धान की खरीदारी की है। देश में सैकड़ों किसानों की जान चली गई। कृषि मंत्री 4 महीने तक झारखंड में थे। एकबार फिर झारखंड में भ्रमजाल फैलाने का काम कर ही भाजपा।
भाजपा के कुचक्र में न फंसे युवा सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि सारी सरकारी नियुक्तियां इस वर्ष हो जाएंगी। लेकिन पेंच लगाना अब बंद हो। सभी युवाओं से मेरी आग्रह है कि आप भाजपा के कुचक्र में न पड़े। और हर बात को लेकर न्यायालय न जाए। ठोस सबूत हो तो आप राज्य सरकार को उससे अवगत कराएं। नियुक्ति प्रक्रिया अब शीघ्र चालू होगी। जहां भी नियुक्तियां होगी वहां झारखंड के स्थानीय लोग नियुक्त होंगे।

## संक्षिप्त खबरें

### रिम्स पीएचडी एंट्रेंस के लिए आवेदन 15 जनवरी तक

**रांची :** रिम्स ने पीएचडी एंट्रेंस एग्जाम के सत्र 2024-25 के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसके तहत रिम्स के कुल 41 विभागों के पीएचडी कोर्स में नामांकन की प्रक्रिया होगी। आवेदन वेबसाइट रिम्स के वेबसाइट से डाउनलोड कर सकेंगे। सभी जरूरी डॉक्यूमेंट के साथ 15 जनवरी तक जमा करना होगा। पीएचडी एंट्रेंस 18 फरवरी को संभावित है। परीक्षा ऑफलाइन मोड पर होगी। परीक्षा अवधि 120 मिनट का होगा। इसमें एमसीक्यू पैटर्न पर सवाल होंगे। परीक्षा केंद्र रिम्स, रांची में ही होगा। इसमें आवेदन फॉर्म शुल्क जनरल और ओबीसी कैटेगरी के लिए 300 रुपये एवं झारखंड के एससी तथा एसटी केटेगरी के लिए 200 रुपये निर्धारित है। साथ ही एंट्रेंस एग्जाम फीस 2500 रुपये निर्धारित है। ज्यादा जानकारी संस्थान के वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं।

### भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने क्षेत्रीय संगठन महामंत्री को जन्मदिन की दी बधाई

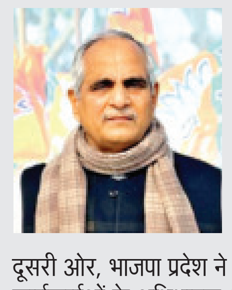

**रांची :** भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने पार्टी के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र को जन्मदिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। मरांडी ने शनिवार को सोशल मीडिया एक्स पर ट्वीट कर लिखा है कि बाबा बैद्यनाथ से आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु जीवन की मंगलकामना करता हूं। दूसरी ओर, भाजपा प्रदेश ने ट्वीट कर कहा है कि हम सभी कार्यकर्ताओं के अभिभावक क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र को जन्मदिन की बधाई और शुभकामनाएं।

### श्रीश्याम मंदिर में 140वां श्रीश्याम भण्डारा का हुआ आयोजन

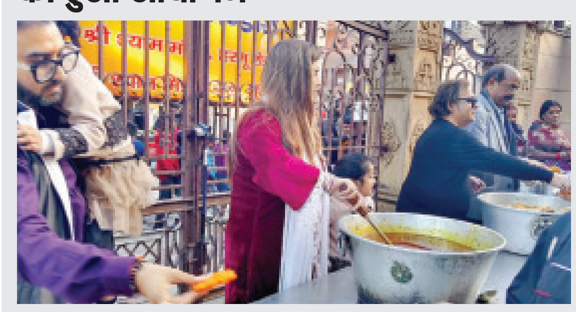

**रांची :** श्रीश्याम मित्र मण्डल द्वारा शनिवार को हरमू रोड़ के श्रीश्याम मंदिर में 140 वां श्रीश्याम भण्डारा का आयोजन किया गया। मंदिर में विराजमान सभी देवी-देवताओं को मंदिर में निर्मित प्रसाद का भोग अर्पित किया गया। श्री अलंकार ज्वेलर्स एण्ड संस के सुशील गुप्ता अपने परिजनों के साथ भण्डारा का प्रसाद अर्पित कर झारखण्ड के खुशहाली की प्रार्थना कर श्रीश्याम दरबार में मत्था टेका। भोग लगे प्रसाद को गुप्ता परिवार ने वृहद भण्डारे में मिश्रित करके उसे महाप्रसाद बनाकर रांची गौशाला की गाय माता के लिए भण्डारे का प्रसाद निकालकर पूजा अर्चना कर मंदिर के आचार्यो को प्रसाद खिलाया। श्रीगणेश जी महाराज जयकारो के बीच यजमानश्री गुप्ता परिवार व मण्डल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी के नेतृत्व में भण्डारे का महाप्रसाद वितरण प्रारम्भ किया गया। लम्बी लम्बी कतारें लग गयी। खाटूनरेश की जयकारो से पुरा मंदिर परिसर गूंज रहा था। मंदिर में प्रवेश करने वाले तिलक लगाया जा रहा था। 3100 से ज्यादा भक्तजनों ने भण्डारे का महाप्रसाद प्राप्त किया। इस अवसर पर सुरेश सरावगी, विश्वनाथ नारसरिया, श्रवण ढाढ़निया, प्रदीप राजगढ़िया, श्यामसुंदर शर्मा, अमित सरावगी, अनिल नारनोली, अजय मारू, रतन शर्मा, अनुज मोदी, आशीष डालमिया, राजीव मित्तल, वेदभूषण जैन, रंजना जैन, विवेक गुप्ता, शिवानी गुप्ता, यश गुप्ता, स्वर्णिका गुप्ता, अंकित सिंह, हर्ष कुमार, कृष्णा अग्रवाल, झूलन भुण्डा मुण्डा, मनीष वर्मा, उपेन्द्र पाण्डेय, कैलाश सिंघानिया, सहित 50 से ज्यादा कार्यकताओं ने भण्डारा वितरण में सहयोग किया।

### नमो पतंग महोत्सव का आयोजन 13 को

**रांची :** रांची में 13 जनवरी नमो पतंग महोत्सव का आयोजन होगा। इसका आयोजन रातू रोड के समीप ओटीसी ग्राउंड में होगा। महोत्सव के संयोजक मुकेश काबरा ने बताया हिंदू धर्म के अनुसार 13 तारीख को नमो पतंग महोत्सव का आयोजन मकर संक्रांति की धार्मिक धरोहर को बनाये रखने के लिए किया जा रहा है। बताया कि 2006 से इस उत्सव को लगातार मनाया जा रहा है । समिति द्वारा प्रत्येक वर्ष इसे बड़े उत्साह पूर्वक पूरे झारखंड सहित रांची नगर वासियों के संग विभिन्न स्थानों में मनाया जाता है।इस प्रतियोगिता में राजधानी सहित पूरे राज्य के लोग भी भाग लेंगे और पतंग महोत्सव का पूर्ण आनंद लेंगे। नमो पतंग महोत्सव से जुड़े अजय मारू, कुणाल आजमानी, प्रमोद सारस्वत, राज वर्मा, रविंद्र मोदी, संजय सिंह, नीरज चौधरी, रमाशंकर बगड़िया,संतोष सेठ, अमित चौधरी, मनीष लोधा, सुबेश पांडेय, संजय पांडेय सहित समिति के सदस्य आयोजन को सफल बनाने में लगे हुए है।

### धृति और मनस्वी ने लायंस क्लब के खिचड़ी वितरण में योगदान देकर दिखाया सेवा का जज्बा

**रांची :** रांची के सदर अस्पताल में लायंस क्लब ऑफ रांची ग्लोबल द्वारा आयोजित खिचड़ी वितरण कार्यक्रम इस बार खास रहा, क्योंकि इसमें स्कॉटलैंड से भारत प्रवास पर आईं दो बच्चियों, धृति यशस्वी परिदा (4 वर्ष) और मनस्वी अगम्या परिदा (7 वर्ष), ने अपनी पॉकेट मनी से योगदान कर समाज सेवा का प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया। इन बच्चियों ने अपनी बचत को जरूरतमंदों के लिए भोजन उपलब्ध कराने में खर्च किया। यह कदम न केवल उनकी सेवा भावना को दशार्ता है, बल्कि यह भी साबित करता है कि सही दिशा और संस्कार से बचपन से ही समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाई जा सकती है। उनकी मां पूजा गद्दयान ने बताया कि उन्होंने अपनी बेटियों को भारतीय संस्कृति और मानव सेवा का पाठ पढ़ाया है। पूजा ने गर्व से कहा, सच्ची खुशी दूसरों की मदद में है, और मेरी बेटियां इस बात को समझती हैं। कार्यक्रम में सदर अस्पताल के डीएस डॉ. बिमलेश रंजन ने बच्चियों के इस कार्य की सराहना करते हुए कहा, इतनी कम उम्र में सेवा भावना का प्रदर्शन एक प्रेरणा है और इससे समाज में सकारात्मक बदलाव आएगा। लायंस क्लब के सचिव मनोज कुमार मिश्रा ने बताया कि यह उनका सिग्नेचर प्रोजेक्ट का 24वां सफल सप्ताह था और इसे पूरे साल जारी रखा जाएगा। क्लब के कोषाध्यक्ष संतोष अग्रवाल ने समाज के सभी वर्गों से इस प्रयास में सहयोग करने की अपील की। कार्यक्रम को सफल बनाने में क्लब के जनसंपर्क अधिकारी सह मीडिया प्रभारी अल्तमश आलम ने विशेष भूमिका निभाई और प्रायोजकों का आभार व्यक्त किया। खासतौर पर मंजू गद्दयान और पूजा गद्दयान का योगदान सराहनीय रहा, जिनकी प्रेरणा से यह आयोजन सफल हुआ। कार्यक्रम में सैलेश अग्रवाल, राजीव चौधरी, संतोष अग्रवाल और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। धृति और मनस्वी ने अपनी बचत से यह साबित किया कि सेवा के लिए संसाधनों से अधिक जज्बा जरूरी है। उनका यह प्रयास समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत है, जो यह सिखाता है कि छोटी उम्र में भी बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं।

## एक नजर

### सड़क दुर्घटना में बाइक सवार की मौके पर मौत

**बोकारो:** बोकारो के चंदनक्यारी स्थित सबरा दहरा जुडिया के समीप एक ट्रक वाले ने बाइक संवाद को रौंदा जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई बताते चले की चंदन केरी के चंद्र निवासी 30 वर्षीय जयदेव झा की रोड एक्सीडेंट में दर्दनाक मौत हो गई वह अपने बाइक ज ह 09 ऐ डी 1723 से अपने घर लौट रहे थे इसी क्रम में सबरा दहरा जोड़ियों के समीप ट्रक ने जोरदार टक्कर मारी चंद्रा निवासी जयदेव शाह की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई इसको लेकर ग्रामीणों ने मुआवजे के लिए चंदनक्यारी रोड को पूरी तरह जाम कर दिया।

### कल गुरु गोबिंद सिंह जयंती पर छुट्टी, आदेश जारी

**रांची:** झारखंड सरकार ने गुरु गोबिंद सिंह जयंती पर 6 जनवरी, 2025 को कार्यपालक आदेश के तहत अवकाश घोषित किया है। इसका आदेश कार्मिक विभाग के विशेष सचिव ओम प्रकाश साह ने 4 जनवरी को जारी किया। जारी आदेश में कहा गया है कि कार्मिक विभाग की अधिसूचना द्वारा गुरु गोबिंद सिंह की जयंती के अवसर पर 6 जनवरी, 2025 को कार्यपालक आदेश के तहत अवकाश घोषित किया गया है।

### अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

**बोकारो :** पेटरवार थाना क्षेत्र के सदमा कला पंचायत के ग्राम पोरदाग में एन एच 23 स्तिथ छोटा नागपुर कोल्ड स्टोर के निकट बृहस्पतिवार के देर रात 9 बजे अज्ञात वाहन के चपेट में आने से बाइक पर सवार केवट टोला निवासी नीतीश साव 18 वर्ष की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वहीं परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल हो गया। जबकि अन्य दो युवक न्यू बस स्टैंड निवासी दीपक साव 24 वर्ष एवं विक्की साव 21 वर्ष गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना का अंजाम देकर अज्ञात वाहन भाग ने में सफल रहा । घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने एन एच 23 को लगभग दो घंटे जाम कर दिया। जिसके कारण वाहनों की लंबी कतार लग गया। वही अधिकारियों जनप्रतिनिधियों एवं समाजसेवी रितेश कुमार सिन्हा के बीच परिजनों से वार्ता के बाद जाम को हटाया गया। बताया जा रहा है की बाइक में तीनों युवक सवार होकर अपने दोस्त विक्की साव को पेटरवार से लुकैया उसके घर छोड़ने जा रहा था कि छोटा नागपुर कोल्ड स्टोर के निकट पीछे से एक तेज रफ्तार से आ रही वाहन ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। वही दुर्घटना को देखते ही आसपास के लोग पहुंचे और मृतक को छोड़कर दोनों घायलों को पेटरवार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र 108 एंबुलेंस से इलाज के लिए भर्ती कराया गया। वही डॉक्टरों ने दोनों घायलों को बेहतर इलाजक लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया। परिजनों ने विक्की साव को निजी अस्पताल चास में भर्ती कराया गया।

# उर्दू विद्यालयों और शिक्षकों के हितों की अनदेखी का होगा विरोध

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**चक्रधरपुर :** झारखंड राज्य उर्दू शिक्षक संघ पश्चिमी सिंहभूम जिला इकाई के बैनर तले उर्दू शिक्षक-शिक्षिकाओं का मिलन सह परिचय समारोह शनिवार को पंप हाउस पिकनिक स्पॉट पर हुआ। संघ के केंद्रीय महासचिव अमीन अहमद ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और सरकार के खिलाफ असंतोष व्यक्त करते हुए आंदोलन की चेतावनी दी।

**उर्दू विद्यालयों के साथ भेदभाव का आरोप**

समारोह में अमीन अहमद ने कहा कि राज्य सरकार उर्दू विद्यालयों और उनके शिक्षकों के साथ भेदभाव कर रही है। उनका आरोप है कि झारखंड की सरकार द्वारा शिक्षा विभाग चलाने वाले अधिकारी उर्दू विद्यालयों और शिक्षकों के हितों की अनदेखी कर रहे हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि 2024 में उर्दू विद्यालयों को नौ छुट्टियां कम दी गई थीं और 2025 की एकीकृत अवकाश तालिका में भी शुक्रवार को आठ छुट्टियां दी गई हैं, जबकि उर्दू विद्यालय शुक्रवार को बंद रहते हैं।

आंदोलन का ऐलान इस दौरान अमीन अहमद ने विरोध व्यक्त करते हुए कहा कि यदि एकीकृत अवकाश तालिका में संशोधन नहीं किया गया तो उर्दू शिक्षक संघ पूरे राज्य में आंदोलन शुरू करेगा और विभाग की ओर से जारी अवकाश तालिका को स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने राज्य के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के उस बयान का स्वागत किया जिसमें उन्होंने बंद पड़े विद्यालयों को फिर से खोलने की बात कही थी।

प्रोन्नति और रिक्त पदों पर चिंता

अमीन ने उर्दू शिक्षकों के रिक्त पदों पर नियुक्ति और 1994 बैच के उर्दू शिक्षकों के लिए प्रोन्नति में 10 प्रतिशत आरक्षण के आदेश की अनुपालन की मांग की। साथ ही उन्होंने पश्चिमी सिंहभूम जिला में ग्रेड 4 में प्रोन्नति में हो रही देरी पर भी चिंता व्यक्त की।

बैठक में लिए गए निर्णय

समारोह में एकीकृत अवकाश तालिका का विरोध करने और स्थानीय अवकाश के पर्व-त्योहार की तिथियां तय करने का निर्णय लिया गया। संघ ने उपायुक्त और डीएसई को इन तिथियों से संबंधित सूचनाएं भेजने का निर्णय लिया। इसके अलावा, सभी ग्रेडों में प्रोन्नति देने की अपील भी विभाग से की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रम मिलन समारोह में संगठन की पश्चिमी सिंहभूम नवगठित जिला इकाई के पदाधिकारियों और सदस्यों का अभिनंदन भी किया गया। इस दौरान बैलून फोर और गीत-संगीत मुकाबला का आयोजन किया गया, जिसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

## ऑटो और ट्रक में आमने-सामने भिड़ंत, चार की हुई मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**दुमका :** जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के दुमका-रामपुरहाट मुख्य पथ पर दासोरायडीह के समीप स्थित पेट्रोल पंप के पास ऑटो और धान लदा ट्रक की आमने-सामने की टक्कर में दो महिला सहित चार की मौत हो गई। घटना में ऑटो सवार छह से ज्यादा सवार घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए फूलो-झानो मेडिकल कॉलेज अस्पताल लाया गया। जहां एक युवती, एक महिला सहित चार को डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। बताया जा रहा है कि घायल और मृत सभी जिले के हंसडीहा थाना क्षेत्र के नोनीहाट के रहने वाले थे। जो पिकनिक मनाने मसानजोर गए थे। लौट के दौरान यह हादसा हुआ। धान लदा ट्रक पश्चिम बंगाल जा रहा था। मृतको में संजय साह(55), पुनम देवी (45) मुस्कान कुमारी (22) एवं टेम्पू चालक है। टेम्पू चालक नगर थाना क्षेत्र के शिवपहाड़ निवासी है। चालक की पहचान नहीं हो सकी है। जबकि घायलों में आठ वर्षीय नैंसी कुमारी, लवली कुमारी, सरिता देवी, पति जिंतेंद्र कुमार गुप्ता, रौशन कुमार है। नैंसी और लवली दोनों बहन है। घायल लवली और नैंसी की मां सरिता देवी है। नैंसी और लवली का मौसेरा भाई रौशन कुमार है। दुर्घटना में जहां एक परिवार से मां-बेटी घायल है। वहीं घायल सरिता देवी की बहन-बहनोई की मौत हो चुकी है। पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है।

## लोयाबाद क्षेत्रीय अस्पताल के निरीक्षण में पायी गयीं खामियां

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**धनबाद :** केंद्रीय वेलफेटर कमेटी के सदस्यों ने शुक्रवार को लोयाबाद क्षेत्रीय अस्पताल का निरीक्षण किया। सदस्यों ने अस्पताल में साफ-सफाई, पीएमई, पैथोलॉजी आकस्मिक विभाग, दवाखाना, एंबुलेंस, पानी, बिजली आदि व्यवस्था देखी। इस दौरान कई खामियां पायी गयीं।अस्पताल में पानी की समूचित व्यवस्था नहीं होने पर कमेटी के सदस्यों ने एपीएम चंदन श्रीवास्तव को एक सप्ताह के भीतर पानी की व्यवस्था करने को कहा। एक्सरे मशीन और एक्सरे तकनीशियन रहने के बावजूद रोगियों का एक्सरे नहीं होने के मामले को भी गंभीरता से लिया। आज मोदीडीह कोलियरी के कर्मी वृज बिहारी सिंह की पत्नी का बाए हाथ का एक्सरे नही होने पर कर्मी ने काफी हंगामा किया था। एक्सरे तकनीशियन ने उसे कहा कि वह एक्सरे कर देगा लेकिन फिल्म धोने वाला कोई नहीं है। एक्सरे तकनीशियन द्वारा एन ए लिख दिए जाने के बाद मामला शांत हुआ था। कोलियरी अभियंता को बिजली की समस्या को ठीक करने को कहा गया। उप मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अनुज कुमार द्वारा कई जगहों पर वह बल्ब लगाया जो बिजली जाने के बाद करीब चार घंटे तक रौशन देती है। अस्पताल में जेनरेटर की व्यवस्था नहीं थी। डॉ अनुज कहा कि कोलियरी से जो मजदूर भेजे जाते हैं उन सभी कर्मियों की पीएमई होती है। टीम में बीसीसीएल पीएफ एंड प्लानिंग मुख्यालय मनीष मिश्रा, संजीत सिंह, गंगाधर राम, एसके डे, एरिया इंजीनियर लोकेश जेन, कोलियरी अभियंता तरुण कुमार, डॉ रचित लोचन, डॉ पुष्पांजलि नाग, डॉ अभिषेक कुमार आदि थे।

## विधायक श्वेता सिंह और उमाकांत रजक ने किया धान अधिप्राप्ति केंद्र का उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो :** धान अधिप्राप्ति केंद्र पौखन्ना का उद्घाटन शनिवार को बोकारो विधायक श्वेता सिंह एवं चंदनकियारी विधायक उमाकांत रजक ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायकक श्वेता सिह ने कहा की क्षेत्र में मानसून के आधार पर किसान आश्रित है। यहां सिंचाई की व्यवस्था होने पर किसानो में लाभ के साथ साथ अन्य फसले उगाने में प्रोत्साहित मिलेगी । उन्होंने उपस्थित किसानो को विश्वास दिलाते हुए कहा की क्षेत्र में बंद पड़े लिफ्ट इरिगेशन को चालु कराया जाएगा और नई जगह नया इरिगशन का भी व्यवस्था किया जाएगा वही चंदनकियारी विधायक उमाकांत रजक ने कहा की धान खरीद में किसानों को विश्वास में लेना बहुत ही जरूरी है। वजन इमानदारी पूर्वक होना चाहिए। किसी भी धान अधिप्राप्ति केंद्र से ऐसी शिकायत मिलने पर उस पैक्स के अध्यक्ष को सहित अन्य अधिकारी नपें जायेंगे। इसके पूर्व प्रखंड विकास पदाधिकारी चास के प्रदीप कुमार ने धान अधिप्राप्ति के विषय पर किसानो को विस्तार पूर्वक जानकारी दी। मौके पर जीप सदस्य राजेश महतो,किरण चंद्र बाउरी, पवन झा, मुखिया कृष्णपद महतो, गुलाम अंसारी, पशुपति कुमार, शिबु बीसीओ राणा रमेश कुमार सिंह सोरेन, पैक्स प्रबंधक गोपन कुमार महतो अध्यक्ष उमेश चंद्र महतो राजकुमार गोप,संतोष कुमार, योगेश्वर महतो, राजु माहथा, निरंजन महतो, गौराचांद महतो सहित दर्जनो किसान उपस्थित थे।

## एसडीओ-एफएसओ ने विभिन्न मिष्ठान प्रतिष्ठानों का किया निरीक्षण

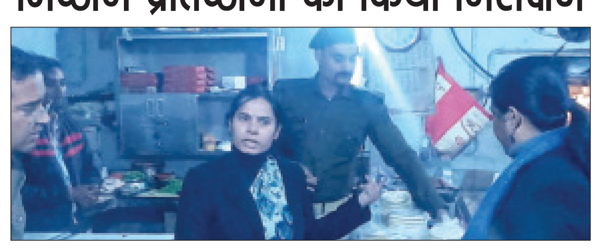

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो :** उपायुक्त विजया जाधव के निदेर्शानुसार अनुमण्डल पदाधिकारी चास सुश्री प्रांजल ढ़ांडा एवं खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी श्वेता लकड़ा के द्वारा सेक्टर 04 सिटी सेंटर स्थित विभिन्न मिष्ठान/खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया। द्वय पदाधिकारियों ने कोजी स्वीट्स, मानसरोवर स्वीट्स एवं रेस्टोरेंट, मोती महल डिलक्स, नटखट स्वीट्स आदि का निरीक्षण किया। टीम द्वारा सभी प्रतिष्ठानों में उपलब्ध खाद्य पदार्थों का सैंपल संग्रह किया गया। जिन्हें राज्य खाद्य प्रयोगशाला भेजा जाएगा एवं सैंपल में त्रुटि होने/मानक अनुरूप नहीं होने पर अग्रेतर कानूनी कार्रवाई* की जाएगी। एसडीओ चास ने प्रतिष्ठानों को साफ सफाई से संबंधित निर्देश दिया। वहीं, खाद्य सुरक्षा - मानक अधिनियम 2006 के निर्धारित मानक अनुसार प्रतिष्ठान में पाये गये कमियों को सुधारने को लेकर संबंधित प्रतिष्ठानों को इंप्रूवमेंट नोटिस दिया गया एवं निर्देश का 14 दिनों के अंदर नोटिस का अनुपालन सुनिश्चित करने को कहा। एसडीओ चास ने नियमित रूप से जाँच एवं सैंपलिंग किया जाएगा एवं किसी भी प्रकार के मिलावट खोरी के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। एफएसओ ने कहा कि सभी प्रतिष्ठानों से आग्रह है कि साफ - सफाई सुनिश्चित करेंगे, साफ पानी का उपयोग एवं खाद्य सामग्रियों में अनावश्यक रंगों के इस्तेमाल से परहेज करेंगे।

## रबी कार्यशाला सह शून्य बजट प्राकृतिक खेती का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो :** जिला कृषि कार्यालय बोकारो के सभागार में जिला स्तरीय रबी कार्यशाला का माननीय जिला परिषद अध्यक्षा श्रीमती सुनीता देवी एवं जिला परिषद सदस्य श्री उत्तम दास द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी माननीय एवं पदाधिकारीगण का स्वागत मो. शाहिद, जिला कृषि पदाधिकारी द्वारा किया गया । इस अवसर पर जिला कृषि पदाधिकारी, बोकारो द्वारा विभाग में संचालित योजनाएं जैसेः- किसान समृद्धि योजना, मिट्टी नमूना संग्रह, बिरसा फसल विस्तार योजना, बीज विनिमय एवं वितरण योजना, झारखण्ड कृषि ऋण माफी योजना, किसान क्रेडिट कार्ड योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, पी0 एम0 किसान योजना, लीफ कलर चार्ट योजना, बीज परीक्षण आदि योजनाओं के बारे में किसानों को जानकारी दी गई।

# प्रभात फेरी में कड़ाके की ठंड में नंगे पांव चले श्रद्धालु

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**जमशेदपुर :** सिखों के 10वें पातशाही श्री गुरु गोबिंद सिंह महाराज जी के 358वें प्रकाशोत्सव के उपलक्ष्य में साकची गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सर्दी में सड़कों पर पैदल चलते हुए कीर्तन किया और गुरुओं की स्तुति की।

प्रभात फेरी में श्रद्धालुओं का उमड़ा जोश

शनिवार को आयोजित प्रभात फेरी में शामिल संगत ने गुरु गोबिंद सिंह जी की गुरुबानी का शब्द गायन करते हुए साकची के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया। कार्यक्रम की शुरूआत गुरुद्वारा में अरदास से हुई, और फिर यह फेरी साकची काशीडीह और टुईलाडुगरी क्षेत्र होते हुए आगे बढ़ी।

समाजसेवी अमरप्रीत सिंह काले और खनूजा परिवार का योगदान

समाजसेवी और भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता सरदार अमरप्रीत सिंह काले एवं उनके परिवार ने श्रद्धालुओं का स्वागत किया। काले परिवार के निवास स्थान पर जलपान का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर सीजीपीसी के चेयरमैन सरदार शैलेंद्र, जसवंत सिंह भोमा, नानक सिंह, और रणवीर सिंह खनुजा जैसे प्रमुख लोग अरदास में शामिल हुए।

5 जनवरी तक जारी रहेगी प्रभात फेरी

कार्यक्रम के समापन के बाद साकची गुरुद्वारा में पुनः अरदास की गई, और परमजीत सिंह काले ने बताया कि यह प्रभात फेरी 5 जनवरी तक साकची क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में भ्रमण करती रहेगी। इस आयोजन ने श्रद्धालुओं के बीच उत्साह और धार्मिक भावना का संचार किया।

## संक्षिप्त खबरें

### युवा समाज विज्ञानी सम्मान से सम्मानित हुए मिथलेश दास

**धनबाद:** प्रज्ञा भारती शिक्षा एवं कल्याण न्यास, सिवान, बिहार द्वारा नवजीवन एकेडमी नुनुडीह के निदेशक मिथलेश दास को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य हेतु दिए जाने वाले युवा सामजिक विज्ञानी सम्मान-2024 से नवाजा गया। ज्ञात हो कि मिथलेश दास पिछले 10 वर्षों शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं और विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। मिथलेश दास शिक्षा एवं सामाजिक कल्याण को समर्पित नवजीवन रिसर्च एवं डेवलपमेंट सोसाइटी, धनबाद के सचिव भी हैं जिनके संरक्षण में शैक्षिक जागरूकता एवं विकास के लिए समय-समय पर कार्यशाला, परिचर्चा, परिसंवाद, संगोष्ठी आदि का आयोजन किया जाता है. सम्मान मिलने पर नवजीवन एकेडमी नुनुडीह के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने श्री दास का भव्य स्वागत किया एवं शुभकामनाएं दी।

### उपेन्द्र प्रजापति ने महाप्रबंधक को बुके देकर नववर्ष की दी शुभकामनाएं

**धनबाद :** बिहार जनता खान मजदूर संघ के सिजुआ क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र प्रजापति के नेतृत्व में शनिवार को सिजुआ क्षेत्र के महाप्रबंधक सुधाकर प्रसाद को बुके देकर नव वर्ष की शुभकामनाएं दिए व तेतुलमारी क्षेत्र में पीट वाटर को लेकर समस्या पर चर्चा किए। श्री प्रसाद ने आश्वासन दिया कि बहुत जल्द ही पीट वाटर की समस्या को हल किया जाएगा। मौके पर छोटू सिंह, आनंद सिंह, कृष्णा सिंह, चुनमुन सिंह,सतेंद्र कुमार सही अन्य मौजूद थे।

### दो दिवसीय श्याम अमृत महोत्सव को लेकर निकाली गयी निशान शोभा यात्रा

**धनबाद :** तीन बानधारी भक्त मंडल चिरकुंडा द्वारा दो दिवसीय श्याम अमृत महोत्सव को लेकर शनिवार की सुबह चिरकुंडा सोनारडंगाल के रेलवे साइडिंग लाइन के समीप स्थित प्रकृति फार्म से भव्य निशान शोभा यात्रा का शुरूआत किया गया महिलाए एव पुरुष अपने हाथों में निशान लिए श्री श्याम बाबा के भजन गाते नाचते पैदल नियामतपुर दादी श्याम पहुंचेंगे, जगह जगह भक्तों के लिए जल पान की व्यस्था की गई थी,जानकारी देते हुए मंडल के अनिल शर्मा ने बताया कि चिरकुंडा मंडल द्वारा दो दिवसीय 16 वां श्री श्याम महोत्सव आज 405 भव्य निशान शोभा यात्रा चिरकुंडा से पश्चिम बंगाल के नियामतपुर स्थित दादी श्याम मंदिर तक जाएगा वहीं 5 जनवरी रविवार की संध्या भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा जिसमें नागपुर से कृष्ण प्रिया व जमशेदपुर से कृष्णा मूर्ति भजन गाकर श्री श्याम भक्त के श्रद्धालुओं को भाव विभोर करेगें जिसमें आप सभी श्याम भक्त सादर आमंत्रित है। इस मौके पर चिरकुंडा मंडल के अजय शर्मा,संजय शर्मा, बुद्धराम शर्मा,धनंजय शर्मा,टिंका गाडिया,संदीप जिंदल,किट्टू सरदार,भोला सिंह,संदीप अग्रवाल,गप्पू शर्मा,संजय केजरीवाल,श्यामा सेन,मनोज हड्डा,विक्की अग्रवाल,छोटू अग्रवाल,संजय अग्रवाल,श्याम अग्रवाल,डब्लू बाउरी, अखिलेश्वर तिवारी शंभू केडिया,महादेव अग्रवाल सहित सैकड़ो की संख्या में महिलाए एव पुरुष उपस्थित थे।

### एमजीएम स्कूल में जूडो प्रतियोगिता पदक विजेता खिलाड़ियों का हुआ सम्मान

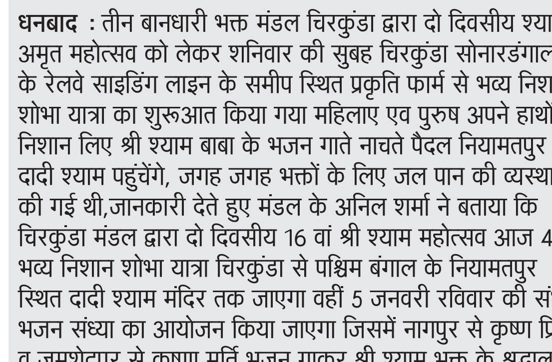

**बोकारो:** एम जी एम स्कूल बोकारो मैं 28 एवं 29 दिसंबर को हुए झारखंड राज्य सब जूनियर और सीनियर जूडो प्रतियोगिता के पदक विजेता खिलाड़ियों का प्रातः प्रार्थना समनभा में स्कूल के प्राचार्य के द्वारा सम्मानित किया गया झारखंड राज्य जूडो प्रतियोगिता जीडी गोयंका पब्लिक स्कूल रांची में हुआ जिसमें एमजीएम के कई खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया तथा कल 16 पदक जीतकर सब जूनियर कैटेगरी में ओवरऑल ट्रॉफी का खीताब बोकारो को दिलाने में अहम भूमिका निभाई पदक जीतने वाले खिलाड़ि सब जूनियर वर्ग में अमन कुमार, राहुल कुमार, प्रियांशी गौरव, प्रियदर्शनी सिंह,साक्षी सिंह सोलंकी, नमन ऋषि, सत्यम केसरी, रिचा नंदा,अर्पित टोप्पो,अंशु कुमार सीनियर वर्ग में आयशा रंजन, ओम आनंद, प्रियांशु राज सिंह,स्नेहा कुमारी, प्राची कुमारी एवं सक्षम कुमार सिंह इन जूडो खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन पर स्कूल के प्राचार्य फादर डॉक्टर जोशी वर्गीस खुशी जताते हुए उन्हें अपनी शुभकामनाएं भेंट की साथ ही साथ स्कूल के उप प्राचार्य श्रीमती रेखा बनर्जी, एकेडमिक डायरेक्टर जॉर्ज जोसेफ,हेड मिस्ट्रेस सपना जोशी के साथ स्कूल के अन्य खेल शिक्षकों में श्री राजेश्वर सिंह,मीनाक्षी कुमारी, सौरभ कुमार एवं वंदना कुमारी ने खिलाड़ी छात्रों को ढेर सारी शुभकामनाएं दी

# लातेहार के चर्चित मुंशी हत्याकांड का हुआ खुलासा, पांच अपराधी गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**लातेहार** : लातेहार में चर्चित मुंशी हत्याकांड का खुलासा करते हुए पुलिस ने हत्याकांड में शामिल पांच अपराधियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अपराधियों में भुवनेश्वर सिंह, रमेश सिंह, छोटेलाल उरांव, रामचंद्र उरांव और सनोज उरांव शामिल हैं। सभी अपराधी लातेहार के भूसुर पंचायत के रहने वाले हैं। अपराधियों के पास से तीन देशी राइफल तथा हत्या में प्रयुक्त टांगी बरामद किया गया। शनिवार को प्रेस वार्ता करते हुए एसपी कुमार गौरव ने बताया कि गत 26 दिसंबर को अपराधियों के जरिये औरंगा नदी पर पुल निर्माण कार्य में मुंशी और नाइट गार्ड के रूप में कार्य कर रहे ग्रामीण बाल गोविंद साहू की हत्या धारदार हथियार से मारकर कर दी गई थी। हत्या के बाद अपराधियों के जरिये एक उग्रवादी संगठन के नाम पर पर्चा भी फेंका गया था। हालांकि पुलिस के जरिये जब मामले की छानबीन की गई तो पता चला कि घटना को अपराधियों के जरिये अंजाम दिया गया था। सूचना के बाद पुलिस ने छापेमारी करते हुए घटना में शामिल पांच अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। वहीं उनके पास से तीन देशी राइफल तथा टांगी भी बरामद किया गया। पूछताछ के बाद गिरफ्तार अपराधियों ने बताया कि क्षेत्र में दहशत फैलाने के लिए इस प्रकार की घटना को अंजाम दिया था। छापेमारी दल में डीएसपी अरविंद कुमार के अलावे पुलिस इंस्पेक्टर दुलड़ चौड़े, सब इंस्पेक्टर विक्रांत कुमार उपाध्याय, भागीरथ पासवान, मनोज कुमार रमाकांत गुप्ता, राहुल सिंह, सुरेंद्र कुमार महतो समेत अन्य पुलिस अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

## एक नजर

### धारदार हथियार से मारकर युवक की हत्या

**खूंटी** : तोरपा थाना क्षेत्र में अज्ञात अपराधकर्मियों ने एक युवक की हत्या कर शव को सड़क किनारे फेंक दिया। युवक का शव शनिवार को तोरपा थाना क्षेत्र के ओरमेंजा गांव के पास से पुलिस ने बरामद किया। शव तोरपा-सिमडेगा मार्ग के किनारे पड़ा हुआ था। शव की शिनाख्त नहीं हो पायी है। मिली जानकारी के अनुसार शनिवार की सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकले लोगों ने ओरमेंजा गांव के पास सड़क किनारे शव को देखा और इसकी सूचना तोरपा थाना की पुलिस को दी। सूचना पाकर एसडीपीओ क्रिस्टोफर केरकेट्टा, थाना प्रभारी प्रभात रंजन पाण्डेय, सब इंस्पेक्टर अमरेंद्र मंडल आदि घटनास्थल पहुंचे। सूचना मिलने पर अम्मा पंचायत के मुखिया मंजीत तोपनो भी वहां पहुंचे। शव कंबल से ढंका हुआ था। शव पर गले में धारदार हथियार से काटे जाने के निशान थे। घटनास्थल पर देखने से प्रतीत होता है कि अपराधकर्मियों ने घटना को अन्यत्र अंजाम देकर शव को लाकर सड़क किनारे फेंक दिया।

### चोरी की चार बाइक के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

**खूंटी** : जिले के अड़की थाना की पुलिस ने चोरी की चार बाइक के साथ दो आरोपितों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पकड़े गए आरोपितों में अड़की थाना क्षेत्र के हितडीह गांव निवासी दिनेश मुंडा और तमाड़ थाना क्षेत्र के बइझुरी गांव निवासी परेश मुंडा शामिल हैं। इस आशय की जानकारी खूंटी के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी वरुण रजक ने शनिवार को अपने कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। एसडीपीओ ने बताया कि 27 दिसंबर को अड़की से एक बाइक की चोरी हुई थी, जबकि तीन बाइकों की चोरी 31 दिसंबर को सोसोकुटी मेला से हुई थी। इस संबंध में अड़की थाने में मामला दर्ज किया गया है।

## आरटीसी पब्लिक स्कूल में सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**अनगड़ा** : राष्ट्रीय कराटे चैंपियनशिप में मेडल जीतने वाले सभी बच्चों को आरटीसी पब्लिक स्कूल अनगड़ा की ओर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य नरेंद्र नाथ महतो ने सभी विजेताओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि, यह उपलब्धि न केवल विद्यालय, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व की बात है। आप सभी बच्चों ने कड़ी मेहनत और समर्पण से यह सफलता प्राप्त की है। भविष्य में भी इसी प्रकार अपना प्रदर्शन बनाए रखें और आगे बढ़ें। इस अवसर पर विद्यालय के कराटे इंस्ट्रक्टर और सुको-कई कराटे झारखंड ब्रांच के चीफ एग्जामिनर महादेव गोप ने कहा कि, यह सफलता बच्चों के अनुशासन और नियमित अभ्यास का परिणाम है। कराटे केवल एक खेल नहीं, बल्कि यह आत्मरक्षा, अनुशासन और मानसिक शक्ति का प्रतीक है। आशा है कि बच्चे आने वाले समय में और भी बड़ी प्रतियोगिताओं में देश और राज्य का नाम रोशन करेंगे। सम्मान समारोह में विद्यालय के शिक्षक, सुरेश कुमार महतो, आनंद प्रसाद महतो, विपिन प्रसाद, उमेश मंडल, भुनेश्वर कुम्हार, घासी राम महतो शिक्षिका पुतुल नीलू नाग, गायत्री सुदर्शी, फुलेश्वरी महतो, अंजलि टोप्पो, ललिता महतो, स्नेहा शालिनी, कुसुम कुमारी, अलका, प्रियंका कुमारी, आदि सहित विद्यालय के विद्यार्थी भी उपस्थित थे। समारोह ने सभी को प्रेरणा और ऊर्जा से भर दिया।

## सिल्ली में गुरुकुल डीडब्ल्यूएम नृत्य अकादमी की हुई शुरुआत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**सिल्ली** : हमेशा से ही भारतीय कला और संस्कृति को प्रस्तुत करने वाले एवम विभिन्न राज्यों में अपनी मंत्रमुग्ध प्रस्तुति देने वाले मुरी सिल्ली के मोहन सहीस आर्ट्स ऑफ कल्चर कि तरफ से विश्व रत्न सम्मानित है। मोहन ने अब अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अपने गुरुकुल डीडब्ल्यूएम की शुरूआत किए है। जिसके निदेशक स्वयं मोहन सहिस, सीईओ फाउंडर धीरज कुमार प्रमाणिक शामिल है। जानकारी के मुताबिक जब धीरज एवं मोहन को इसे शुरू करने का उद्देश्य पूछा गया तो उन्होंने बताया कि इसकी तैयारी वो काफी दिनों से कर रहे थे क्योंकि सिल्ली आस पास के क्षेत्रों में कला को उजागर एवं जगह देने के उद्देश्य से इस नृत्य अकादमी की शुरूआत की जा रही है। कला एक बहुत ही मूल्यवान चीज है जिसको जिंदा रखना हमारा कर्तव्य है। इससे हमारे संस्कृति को भी जिंदा रखा जा सकता है जिसके वजह से हम सभी कलाकारों को सादर सम्मान मिलता है और अकादमी के तहत कलाकारों को सफलता दिलवाने और उसे सहारने के काम किया जाएगा और कुशलता के माध्यम से लोगों को जगह देने का भी काम किया जाएगा जिसमें इंडियन क्लासीकल से लेकर वेस्टर्न तक के डांस सिखाए जाते है जैसे भरतनाट्यम, कथक, फोक डांस, लोकगीत, रवीन्द्र संगीत से लेकर बॉलीवुड, हिप हॉप, लिरिकल एवं बड़े बुजुर्ग महिला एवं पुरुष के लिए, जुंबा भी सिखाए जाएंगे। संगीत की कक्षाएं शुरू हो चुकी है जिसमें हार्मोनियम, तबला, गिटार, केसिया, शास्त्रीय संगीत, फोक संगीत जैसे विषय शामिल है। इसकी कक्षाएं रविवार को किया जाता है इसके साथ साथ दूसरे आर्ट्स और आर्टिस्ट जैसे,पेंटर और एक्टर को भी सहारने का काम भी शुरू किया गया है। इस संबंध में मोहन के पिता मोनी सहिस एवं माता रासमनी सहिस ने कहा कि इस तरह की कक्षाएं खोलना मोहन का एक सपना था जो आज पूरा होते हुए दिख रहा है।

## पंचायत राज विभाग की संचालित योजनाओं की हुई समीक्षा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**खूंटी** : डीआरडीए स्थित सभागार में शनिवार को जिला पंचायती राज पदाधिकारी शिशिर कुमार की अध्यक्षता में पंचायत राज विभाग के जरिये संचालित कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा और समीक्षा की गई। इनमें मुख्य रूप से जीपीडीपी-जीपीएफटी ट्रेनिंग के तहत टीएमपी पोर्टल में इंट्री की प्रगति, 15वें वित्त आयोग के तहत व्यय को एक सप्ताह में 50 फीसदी तक बढ़ाने, पंचायत ज्ञान केंद्र का अधिष्ठापन, जनप्रतिनिधियों के मानदेय, सभी पंचायतों में बायोमेट्रिक मशीन का अधिष्ठान और संचालन सुनिश्चित करने, पंचायत सुदृढ़ीकरण और 15वें वित्त आयोग की उपयोगिता प्रमाण पत्र की स्थिति, पंचायत भवन की स्थिति और भारत नेट रिचार्ज की समीक्षा की गई। बैठक के दौरान अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि सभी योजनाओं को समय पर और गुणवत्ता के साथ पूरा किया जाए। पंचायत स्तर पर डिजिटल साधनों और संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। बैठक में जिला परियोजना प्रबंधक, सभी प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी, प्रखंड समन्वयक, कनीय अभियंता, कंप्यूटर ऑपरेटर सहित अन्य उपस्थित थे।

## सरला बिरला विवि में स्टेट रैपिड चेस चैंपियनशिप का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**अनगड़ा** : नामकोम महिलोंग सरला बिरला विश्वविद्यालय में झारखंड स्टेट रैपिड चेस चैंपियनशिप का आठवां एवं अंतिम राउंड का खेल संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में पूर्वी सिंहभूम के अभिषेक दास साढ़े सात अंकों के साथ विजेता एवं बोकारो के अंकित कुमार सिंह सात अंकों के साथ उपविजेता बने। रांची के विभाष कुमार सिंह भी सात अंक बनाकर तीसरे एवं पश्चिमी सिंहभूम के मनीष शर्मा 6 अंकों के साथ चौथे स्थान पर रहे। सके बाद तीसरे झारखंड स्टेट ब्लिट्ज चेस चैंपियनशिप के प्रथम चार चरण का मैच खेला गया। अंतिम चार चरणों का खेल रविवार को खेला जाएगा। इसके उपरांत रैपिड और ब्लिट्ज दोनों टूर्नामेंट का पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम दोपहर 12 बजे किया जाएगा।

# सोलर चाक के उपयोग से बढ़ रही कुम्हारों की कार्य क्षमता और आमदनी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**खूंटी** : जिले के कुम्हार अब इलेक्ट्रिक सोलर चाक के उपयोग से अपने पारंपरिक व्यवसाय को नया आयाम दे रहे हैं। हाल ही में जिला प्रशासन के जरिये आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान सोलर चाक चलाने और इसके लाभ की जानकारी प्राप्त करने के बाद कुम्हार अब इस तकनीक का कुशलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं। प्रशिक्षित कुम्हार सोलर चाक की सहायता से मिट्टी के बर्तन, दीये, मूर्तियां और अन्य सामग्री का निर्माण आसानी से और कम समय में कर रहे हैं। इस आधुनिक तकनीक ने न केवल उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाया है, बल्कि उत्पादकता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। खूंटी के एक प्रशिक्षित कुम्हार ने कहा कि सोलर चाक से काम करना बहुत आसान हो गया है। पहले जहां हमें अधिक समय और मेहनत करनी पड़ती थी, अब उसी काम को कम समय में पूरा कर सकते हैं। इससे हमारी आय में भी सुधार हो रहा है। उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने कहा कि यह कुम्हारों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास है। सोलर चाक पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ उनके व्यवसाय को भी सशक्त बना रहा है। जिला प्रशासन भविष्य में भी ऐसे नवाचारों को बढ़ावा देगा। सोलर चाक के इस्तेमाल से कुम्हार पारंपरिक हस्तशिल्प को संरक्षित कर रहे हैं, उनके उत्पादों में भी वृद्धि हो रही है।

### दुश्मन को पहचानो अभियान के तहत जवानों का जरियागढ़ थाना में रिहर्सल

**खूंटी** : तोरपा के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी क्रिस्टोफर केरकेट्टा के जरिये शनिवार को जरियागढ़ थाना परिसर में दुश्मन को पहचानो अभियान के तहत जवानों का रिहर्सल कराया गया। मौके पर एसडीपीओ ने कहा कि अभियान का उद्देश्य क्षेत्र के सक्रिय नक्सलियों-उग्रवादियों और जमानत पर जेल से बाहर निकले अपराधियों को पहचानना और उनकी गतिविधियों को ध्यान में रखना है। उन्होंने कहा कि मुख्य रूप से कुख्यात नक्सली मार्टिन केरकेट्टा, दुर्गा सिंह और अमृत होरो के गतिविधियों की जानकारी मिलने पर इसकी सूचना थाना प्रभारी को देने का निर्देश एसडीपीओ ने दिया। एसडीपीओ ने कहा कि नक्सलियों को गिरफ्तार कराने वाली टीम को सरकार के जरिये घोषित इनाम उन्हें दिया जाएगा। मार्टिन केरकेट्टा पर पंद्रह लाख रुपये ,अमृत होरो पर एक लाख और दुर्गा सिंह उर्फ पंजरी पर दो लाख रुपए का इनाम रखा गया है। सूचना देने वालों का नाम गुप्त रखा जाएगा। मौके पर थाना प्रभारी राजू कुमार, कुलदीप रोशन बारी, श्यामल कुंभकार, तारकेश्वर गौड,के अलावा सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

## संक्षिप्त खबरें

### पुष्पिता ब्रजकिशोर सिन्हा को राष्ट्रीय प्राचार्य पुरस्कार के लिए किया गया नामांकित

**सिल्ली** : झारखंड राज्य के रांची जिले के सिल्ली लोवापीरी गांव निवासी पुष्पिता ब्रजकिशोर सिन्हा को प्रतिष्ठित स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय प्राचार्य पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया है। बताते चले कि वह दिल्ली पब्लिक स्कूल, रायगढ़, छत्तीसगढ़ में प्राचार्य के रूप में कार्यरत हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनके निरंतर ईमानदारी,समर्पण और निरंतर 30 वर्षों की शिक्षा जगत में अनुभव,सेवा और उपलब्धि ने उन्हें गौरव दिलाया है। वह झारखंड की मिट्टी की बेटी हैं, जो अमृता इंटरनेशनल स्कूल की निदेशक भी हैं, जो सिल्ली कॉलेज सिल्ली के पास स्थित है और उनके कुशल मार्गदर्शन में आसपास के क्षेत्र में शिक्षा का अलख जगाते हुए फल-फूल रही है। शिक्षा की महारथी के रूप में सम्मानित होते देख न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि झारखंड भी गौरवान्वित महसूस कर रहा है। अमृता इंटरनेशनल विद्यालय परिवार उनके जीवन में और अधिक यश और सफलता की कामना किया।

### सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

**खूंटी** : जिले में सड़क सुरक्षा माह के तहत लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से जिला परिवहन कार्यालय खूंटी में शनिवार को सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों को सड़क सुरक्षा के नियमों की जानकारी दी गई। मौके पर जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक निशांत रौशन ने बताया कि मार्ग के किनारे साइनेज अधिष्ठापित किए गए हैं, जो मार्ग से जुड़ी जानकारी के संकेतक हैं। वाहन चलाते समय सभी प्रकार के साइनेज को दृष्टिगत रखते हुए गाड़ी चलाएं। हमेशा वाहन निर्धारित गति सीमा पर ही चलाएं। समय बचाने के लिए ओवर स्पीड हरगिज न करें। ऐसा कर आप अपनी तथा दूसरों की जिंदगी बचा सकते हैं। वाहन का चालन वैध लाइसेंस के साथ ही करें।


**कार्यपालक अभियंता का कार्यालय**
**ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला।**
rdsdgumla123@gmail.com.

**शुद्धि पत्र**

इस कार्यालय के पत्रांक 1515 दिनांक 30.12.2024 द्वारा ई०-टेंडरिंग अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या-RDD/SD/GUMLA/23/2024-25 जिसका पी०आर०(PR)सं०-343317 Rural Development (24-25)#D है, में अपरिहार्य कारणों से निम्न संशोधन किया जाता है। जिसमें कार्य पूर्ण की अवधि 03 माह के स्थान पर कार्य पूर्ण करने की अवधि 06 माह पढ़ा जाय। शेष नियम यथावत् रहेगी।

कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल,
गुमला।

PR 343550 (Rural Development) 24-25 (D)

**कार्यालयः- जिला शिक्षा अधीक्षक, सिमडेगा**
**समाहरणालय भवन, 'सी' ब्लॉक, ग्राउण्ड फ्लोर, खुँटीटोली, सिमडेगा।**
Email Id- simdegamdm@gmail.comFax &Phone : 06525-226448

**आम सूचना**

सिमडेगा जिला अंतर्गत संचालित सभी गैर मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय के प्रबंधक/संचालक को सूचित किया जाता है कि RTE अधिनियम 2009 के तहत सभी गैर मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों को मान्यता प्राप्त करना अनिवार्य है।

उक्त आशय से RTE अधिनियम की कंडिका -19 एवं सरकार के प्रभारी सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग झारखण्ड, राँची के पत्रांक 1528 दिनांक 24.12.2024 तथा भारत सरकार के पत्रांक-D.O.No-23-2/2024-Stats दिनांक 10.12.2024 के आलोक में सभी गैर मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों को मान्यता प्रदान करने हेतु दिनांक 15.01.2025 तक ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित किया जाता है। सभी संबंधित को निदेश दिया जाता है कि दिए गए समय सीमा के अन्दर ऑनलाईन आवेदन करना सुनिश्चित करें, ताकि मान्यता प्रदान करने हेतु आवश्यक कार्रवाई की जा सके। विलम्ब से आवेदन करने पर आवेदन पर कोई विचार नहीं किया जायगा।

ऑनलाईन आवेदन https://rte-jharkhand-gov-in पोर्टल के माध्यम से आमंत्रित किया जाएगा।
नोट :- विशेष जानकारी के लिए अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में संपर्क किया जा सकता है।

जिला शिक्षा अधीक्षक,
सिमडेगा

PR 343564 Simdega(24-25)#D

**कार्यालयः- जिला अभियंता, लातेहार**

**अति अल्पकालीन ई-निविदा आमंत्रण सूचना**
ई०-संख्या- ZP/LATEHAR- 24/2024-25 (4th call)

1. कार्य का नामः-

| क्र | योजना का नाम | प्राक्कलित राशि | अग्रधन की राशि | परिमाण विपत्र की राशि | कार्य पूर्ण करने की अवधि | NIT रेफरेन्स संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | प्रखण्ड चन्दवा पंचायत बरवाटोली ग्राम बेलंगा में उप स्वास्थ्य केन्द्र का निर्माण। | 55,50,000 | 1,11,000 | 10,000 | 09 माह | 02/2024-25 /ZP/LATEHAR |

2. बेवसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथिः- 07.01.2025
3. ई-निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समयः-13.01.2025, 5.00 बजे अपराहन् तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समयः-15.01.2025 अपराहन 02:00 बजे।
5. परिमाण विपत्र की राशि घट-बढ़ सकती है तदनुसार परिमाण विपत्र का 02 प्रतिशत राशि अग्रधन की राशि के रूप में जमा करना होगा।
6. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार किया जाएगा।
7. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई-भुगतान जिस खाता से किया जाएगा उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी।
8. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पताः- जिला अभियंता, लातेहार।
9. ई-निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाश संख्या- 6205276661
10. प्राक्कलित राशि बढ़ या घट सकती है।
11. संवेदक को Ucan Certificate संलग्न करना अनिवार्य नहीं है।
12. प्राप्त पत्र के आलोक में उक्त निविदा में लातेहार जिला में निबंधित संवेदक ही भाग ले सकेंगे।
13. उक्त निविदा में BCD/ जिला परिषद, लातेहार में निबंधित समुचित श्रेणी के संवेदक निविदा में भाग ले सकते है।
14. विस्तृत जानकारी के लिए बेवसाईट www.jharkhandtendres.gov.in पर देखा जा सकता है।

जिला अभियंता,
लातेहार

PR 343545 Rural Development(24-25)#D

**कार्यपालक अभियंता का कार्यालय**
**ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला**

**अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना**
संख्या 24/2024-25

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | विज्ञापन दाता का नाम | :- | कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला। |
| 2 | परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि | :- | दिनांक 16.01.2025 को 10.00 बजे पूर्वाहन से 03.00 बजे अपराहन तक। |
| 3 | निविदा प्राप्त करने की तिथि | | दिनांक 18.01.2025 को 3.00 बजे अपराहन तक। |
| 4 | निविदा खोलने की तिथि | :- | दिनांक 18.01.2025 को 3.30 बजे अपराहन में। |
| 5 | परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान | :- | कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला। |
| 6 | निविदा प्राप्त करने का स्थान | :- | कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला। |
| 7 | निविदा खोलने का स्थान | :- | कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला। |
| 8 | कार्य मद | :- | जिला अनाबद्ध निधि मद |
| 9 | कार्यो का विस्तृत विवरण | :- | |

| ग्रुप सं० | प्रखण्ड | कार्य का नाम | प्राक्कलित राशि | अग्रधन की राशि | परिमाण विपत्र का मूल्य | कार्य पूर्ण करने की अवधि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 1 | रायडीह | Rennovation of Rajkiya Prathmik Vidyalay, Nicha Dumri, Village- Nichdumri, Panchayat-Kansir, **Block- Raidih**, District- Gumla | 17,41,200.00 | 35,000.00 | 5000.00 | 03 माह |
| 2 | रायडीह | Rennovation of Anganbadi Centre, Nicha Dumri, Village- Nichdumri, Panchayat- Kansir, **Block- Raidih**, District- Gumla | 8,09,100.00 | 16,200.00 | 1250.00 | 03 माह |

निविदा की शर्तेः- 1. ग्रामीण विकास विभाग के समुचित श्रेणी के अधीन निबंधित संवेदक ही इस निविदा में भाग ले सकते है एवं परिमाण विपत्र निर्गत किया जाएगा।
2. परिमाण विपत्र का शुल्क परिमाण विपत्र में अंकित राशि के अनुसार आवेदन के साथ बैंक ड्राफ्ट के रूप में जो कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला के नाम पर होगा, एवं अदायगी पर (जो नहीं लौटाया जाएगा) परिमाण विपत्र निर्गत किया जाएगा। बैंक ड्राफ्ट निबंधित संवेदक के स्वयं के खाता द्वारा निर्गत हुआ होगा एवं बैंक ड्राफ्ट की वैद्यता निविदा की प्रकाशन की तिथि से तीन माह का होना अनिवार्य है।
3. निविदा में 10% न्यूनतम दर से अधिक न्यूनतम दर उद्धृत दर करने पर प्राक्कलित राशि का अतिरिक्त अग्रधन राशि का डाकघर पासबुक/बैंक द्वारा निर्गत फिक्स डिपोजिट निविदा के साथ जमा करना अनिवार्य होगा।
जो निम्न हैः- 1. 10 से 20 प्रतिशत कम दर तक की राशि का 20% तक।
2. 20% प्रतिशत से अधिक कम दर की राशि का 30% अतिरिक्त जमानत का देय होगा।
3 निविदा में 10% न्यूनतम दर से अधिक न्यूनतम दर उद्धृत दर करने पर संवेदक को कार्य करने का Justification का शपथ पत्र देना अनिवार्य होगा।
4. निविदा की विस्तृत शर्तें www.jharkhand.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता,
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला

PR 343555 Rural Development(24-25)#D

# क्यों वीर सावरकर के नाम पर कॉलेज खुलने से क्यों खफा है कांग्रेस?

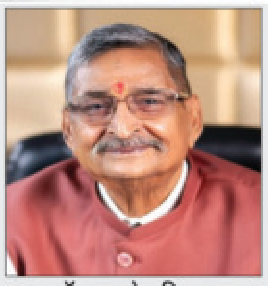

डॉ. आर.के. सिन्हा

**कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने कुछ समय पहले वीर सावरकर पर गैर- जरूरी टिप्पणी अपमानजनक की थी। उनकी बयानबाजी से शिव सेना नेता उद्धव ठाकरे भी नाराज हो गए थे। उनहोंने तब कहा था 'हम स्वातंत्र्यवीर सावरकर के बारे में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बयान से सहमत नहीं हैं। हमारे मन में सावरकर के लिए सम्मान है।' आपको कोई पसंद नहीं तो ठीक है। खैर, वीर सावरकर कॉलेज खुलने से राजधानी में उस महान स्वाधीनता सेनानी के नाम पर महत्वपूर्ण प्रतीक स्थापित हो जाएगा। देर से ही सही राजधानी दिल्ली में अब वीर सावरकर का एक अहम प्रतीक स्थापित होने जा रहा है।**

वीर सावरकर के नाम पर दिल्ली यूनिवर्सिटी एक नया कॉलेज खोलने जा रही है। वीर सावरकर जैसे महान स्वाधीनता सेनानी के नाम पर कॉलेज खुलने से देश भर के नौजवान निश्चित रूप प्रेरित ही होंगे। इस बारे में किसी को किसी तरह का शक भी नहीं होना चाहिए। पर कांग्रेस को तकलीफ हो रही है। कांग्रेस को वीर सावरकर के नाम से ही हमेशा ही चिढ़ रहा है। अब कांग्रेस को कौन बताए कि वीर सावरकर, जिनका पूरा नाम विनायक दामोदर सावरकर था, भारत के स्वाधीनता आंदोलन के एक ही अत्यंत महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे। वे एक महान क्रांतिकारी, राष्ट्रवादी विचारक, लेखक और वकील थे। उनका जीवन और कार्य भारतीय इतिहास के एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी अध्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

काश, सावरकर के नाम पर खुलने वाले कॉलेज का विरोध करने वाले वीर सावरकर के बारे में अपने महान नेत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की ही राय को जान लेते। इंदिरा गांधी जब भारत की सूचना और प्रसारण मंत्री थीं तब उन्हीं के निर्देश पर वीर सावरकर पर केंद्रित डाक्यमेंट्री फिल्म उनके विभाग ने बनाई थी। इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री रहते हुए सावरकर की स्मृति में डाक टिकट भी जारी हुआ। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने निजी खाते से सावरकर स्मृति कोष के लिये 11 हजार रुपये का अंशदान भी किया था।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने सावरकर को ' रिमार्केबल सन ऑफ इंडिया' कहा था। इंदिरा गांधी ने 20 मई 1980 को पंडित बाखले, सचिव, 'स्वतंत्रवीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक' के नाम से संबोधित चिट्ठी में सावरकर के योगदान का जिक्र किया था। इस पत्र में इंदिरा गांधी ने लिखा है, 'मुझे आपका पत्र 8 मई 1980 को मिला था। वीर सावरकर का ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मजबूत प्रतिरोध हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के लिए काफी अहम है। मैं आपको देश के महान सपूत के शताब्दी समारोह के आयोजन के लिए बधाई देती हूं।' मशहूर लेखक वैभव पुरंदरे ने अपनी किताब 'द ट्रू स्टोरी ऑफ फादर ऑफ हिंदुत्व' में लिखा है कि इंदिरा गांधी का लिखा पत्र सत्य है। किताब में लिखा है कि इंदिरा गांधी ने 1966 में सावरकर के निधन पर गहरा शोक भी जताया था। इंदिरा गांधी ने सावरकर को महान क्रांतिकारी बताते हुए तारीफ की थी और एक बयान भी जारी किया था। इंदिरा गांधी ने कहा था कि सावरकर ने अपने कार्यों से पूरे देश को प्रेरित किया था। अफसोस कि कांग्रेसियों को सच जानने से कोई मतलब ही नहीं रहा। उन्हें तो मीन-मेख निकालनी है। इसलिए इतनी पुरानी पार्टी सिकुड़ती ही चली जा रही है।

वीर सावरकर तो बचपन से ही देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे और उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध में भाग लेना शुरू कर दिया था। सावरकर 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित 'इंडिया हाउस' में शामिल होने के लिए लंदन चले गए। लंदन में, उन्होंने 'अभिनव भारत' नामक एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करना था। उन्होंने '1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने 1857 के सिपाही विद्रोह को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम बताया। इस पुस्तक को ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था। सावरकर ने इटली के क्रांतिकारी नेता गिउसेप्पे मैजिनी से प्रेरणा ली और उनकी क्रांतिकारी विचारधारा को भारतीय संदर्भ में लागू करने का प्रयास किया। 1910 में, सावरकर को नासिक के जिला मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।उन्हें दोषी ठहराया गया और 50 साल की कारावास की सजा सुनाई गई। उन्हें अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित सेलुलर जेल में भेजा गया, जहाँ उन्होंने कई वर्षों तक कठोर यातनाएं सहीं। काला पानी में उन्होंने एकांत कारावास, कठोर श्रम और अमानवीय परिस्थितियों का सामना किया।कोल्हू में बेल की तरह जोतकर उनसे सूखे नारियल से तेल निकलवाया जाता था। सावरकर ने भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाई। सावरकर हिंदू राष्ट्रवाद के एक प्रमुख पैरोकार थे। उन्होंने एक मजबूत और एकजुट हिंदू राष्ट्र की वकालत की। सावरकर ने जाति व्यवस्था और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने हिंदू समाज में सुधार लाने के लिए कई आंदोलन चलाए। वे एक कुशल वक्ता और लेखक थे। उनके भाषणों और लेखों ने लोगों को प्रेरित किया और उनमें देशभक्ति की भावना जगाई।

सावरकर के गृह राज्य महाराष्ट्र में कई संगठन और संस्थान हैं जो उनके विचारों और कार्यों को बढ़ावा देते हैं। वीर सावरकर महाराष्ट्र में एक सम्मानित और प्रभावशाली व्यक्ति हैं, और उन्हें कई लोगों द्वारा एक महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक के रूप में याद किया जाता है। वीर सावरकर का एक शानदार चित्र पुराने संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में लगा हुआ था। उनके चित्र का 26 फरवरी, 2003 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने संसद भवन में अनावरण किया था। इसे चंद्रकला कुमार कदम ने बनाया था। जब वीर सावरकर का चित्र लगाने की पहल हुई तब भी कांग्रेस ने यह कहकर विरोध किया था कि वे सांसद नहीं थे। तब कांग्रेसी भूल गए थे कि लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गांधी जैसे राजनीति व स्वाधीनता संग्राम में अहम योगदान देने वाले व्यक्ति भी तो सांसद नहीं थे। उनके त्याग व समर्पण को देखते हुए केन्द्रीय कक्ष में उनका चित्र स्थापित कर सम्मान दिया गया।

कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने कुछ समय पहले वीर सावरकर पर गैर- जरूरी टिप्पणी अपमानजनक की थी। उनकी बयानबाजी से शिव सेना नेता उद्धव ठाकरे भी नाराज हो गए थे। उनहोंने तब कहा था 'हम स्वातंत्र्यवीर सावरकर के बारे में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बयान से सहमत नहीं हैं। हमारे मन में सावरकर के लिए सम्मान है।' आपको कोई पसंद नहीं तो ठीक है। खैर, वीर सावरकर कॉलेज खुलने से राजधानी में उस महान स्वाधीनता सेनानी के नाम पर महत्वपूर्ण प्रतीक स्थापित हो जाएगा। देर से ही सही राजधानी दिल्ली में अब वीर सावरकर का एक अहम प्रतीक स्थापित होने जा रहा है।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

## संपादकीय

### अमेरिका के लिए चेतावनी

अमेरिका के न्यू ऑरलियंस शहर में नये साल का जश्न मना रहे लोगों पर आतंकवादी हमले में 15 लोग मारे गए और 30 से ज्यादा लोग घायल हो गए। पुलिस के अनुसार हमलावर ने शहर के फ्रेंच क्वार्टर में पैदल चलने वालों की भीड़ में अपना ट्रक चढ़ा दिया। इस आतंकी हमले से जाहिर होता है कि किसी आतंकवादी संगठन की मदद के बिना अकेले व्यक्ति द्वारा किए गए हमले का खतरा भी दूर नहीं हुआ है। इस हमले को अंजाम देने वाला 42 वर्षीय शमसुद्दीन जब्बार अमेरिकी नागरिक है और वह अमेरिकी सेना में अपनी सेवाएं दे चुका है। घटना के बाद पुलिस मुठभेड़ में वह मारा गया। उसके ट्रक से पुलिस को इस्लामिक स्टेट (आईएस) का झंडा मिला है। आतंकी वारदात से कुछ पहले उसने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी करके यह बताया था कि वह आईएस से प्रेरित है। इस हमले के कुछ देर बाद अमेरिका के ही लास वेगास में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक होटल के बाहर टेस्ला साइबर ट्रक में विस्फोट हुआ जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और करीब 10 लोग घायल हो गए। आईएस जो एक खतरनाक आतंकी संगठन है वह 2017 के अंत तक इराक और सीरिया में अपनी अधिकांश जमीन को दी है। अमेरिका के न्यू ऑरलियंस और लॉस वेगास के हमले से ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी खोई हुई जमीन और ताकत को पाना चाहता है। याद रखना चाहिए कि एक समय ऐसा था जब दुनिया भर से जिहाद समर्थक लड़ाकू सीरिया कूच कर रहे थे। यूरोप से भी अनेक गुमराह युवा सीरिया के जिहाद में शामिल होने के लिए पहुंचे थे। एक दशक पूर्व पूरी दुनिया में आईएस का आतंक कायम हो गया था। अमेरिकी जांच एजेंसी न्यू ऑरलियंस के आतंकी हमले और लास वेगास में ट्रंप के होटल के बाहर हुए हमले के बीच किसी संभावित कनेक्शन की जांच कर रही है। अमेरिका की भाभी टेंपरेचर के लिए न्यू ऑरलियंस की आतंकी घटना एक बड़ी चेतावनी है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, सहित पश्चिमी देशों को अपने नागरिकों के कट्टरवाद की जड़ों तक पहुंचना चाहिए और इसका मुकाबला करने के लिए प्रभावशाली तरीकों को अपनाना चाहिए।

#### चिंतन-मनन

### यक्ष-प्रश्न की युगीन व्याख्या

महाभारत में एक कथा आती है। अज्ञातवास के दौरान पांडवों को घूमते हुए प्यास लगी। नकुल पानी ढूंढते-ढूंढते जलाशय के पास पहुँचे। जैसे ही वे पानी पीने को उद्यत हुए, एक यक्ष ने उन्हें रोक दिया और कहा कि मेरे प्रश्नों का उत्तर देने के बाद ही तुम पानी पी सकते हो। नकुल और अन्य भाइयों को जोर की प्यास लग रही थी, अतः वे बिना यक्ष के प्रश्नों का उत्तर दिए ही पानी पीने लगे और मृत्यु को प्राप्त हुए। जब युधिष्ठिर की बारी आई तो उन्होंने न केवल यक्ष के सभी प्रश्न ध्यानपूर्वक सुने अपितु उनका तर्कपूर्ण उत्तर भी दिया जिसे सुनकर यक्ष संतुष्ट हो गया। यक्ष द्वारा युधिष्ठिर से पूछे गए प्रश्नों में एक प्रश्न स्थायित्व, धैर्य, स्नान और दान से संबंधित भी था। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि स्थायित्व किसे कहते हैं? धैर्य क्या है? स्नान किसे कहते हैं? और दान का वास्तविक अर्थ क्या है?

युधिष्ठिर ने इन प्रश्नों का जो उत्तर दिया, वह इस प्रकार था- अपने धर्म में स्थिर रहना ही स्थायित्व है। अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना ही धैर्य है। मनोमालिन्य का त्याग करना ही स्नान है और प्राणीमात्र की रक्षा का भाव ही वास्तव में दान है। महाभारत में एक कथा आती है। अज्ञातवास के दौरान पांडवों को घूमते हुए प्यास लगी। नकुल पानी ढूंढते-ढूंढते जलाशय के पास पहुँचे। जैसे ही वे पानी पीने को उद्यत हुए, एक यक्ष ने उन्हें रोक दिया और कहा कि मेरे प्रश्नों का उत्तर देने के बाद ही तुम पानी पी सकते। महाभारतकालीन यक्ष-युधिष्ठिर संवाद के प्रश्नों के उत्तर की प्रासंगिकता उस युग की तुलना में आज कहीं अधिक है। स्थायित्व या सिद्धांतवादिता को लोगों ने हठधार्मिता का रूप दे दिया है, जबकि संकल्प की दृढ़ता या स्थायित्व से आशय अपने कर्तव्य के प्रति दृढ़ता से है। उसे भौतिक सुख-समृद्धि से जोड़ना गलत है। धैर्य को लेकर भी समाज में अनेक गलत धारणाएँ प्रचलित हैं। हाथ पर हाथ धरे निठल्ले और आलसी बनकर अवसर की प्रतीक्षा करना धैर्य का पर्याय कभी नहीं हो सकता है। मनुष्य द्वारा श्रेष्ठ कार्यों के प्रति सक्रिय, तत्पर और आतुर बने रहकर अपनी समस्त इन्द्रियों पर अंकुश पाकर सदाचार का जीवन व्यतीत करना ही वास्तव में धैर्य है। शास्त्र और साधु-महात्माओं के प्रवचनों में पवित्र नदियों में स्नान की महिमा का बढ़-चढ़कर बखान किया गया है। लेकिन जब तक हमारे मन की मलीनता नहीं मिटती, तब तक बड़ी से बड़ी नदी में किया गया स्नान भी पूर्ण फलदायी नहीं होगा। अतः जिसने अपने मन को ऊँच-नीच, ईर्ष्या-द्वेष, तेरा-मेरा, बड़ा-छोटा आदि के भेद से पूरी तरह मुक्त कर गंगाजल की तरह पवित्र बना लिया, वह भले ही सौ दिन से नहीं नहाया हो, तब भी उसे सबसे पवित्र इंसान माना जाएगा। दान के बारे में भी लोगों को कई तरह की गलतफहमियाँ हैं। जो सक्षम हैं, वे मुट्ठी-दो मुट्ठी दान कर दाता भाव के अभिमान से चूर हो फूले नहीं समाते हैं।

# मणिपुर में माफी कोरा दिखावा न होकर सार्थक बदलाव करें

ललित गर्ग

मणिपुर में जातीय संघर्ष, व्यापक हिंसा एवं अराजक माहौल के लिए पूर्वोत्तर राज्य के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने बीते साल के आखिरी दिन शांति की दिशा में एक सराहनीय पहल करते हुए 'माफी' मांगी है, इस माफी को लेकर राजनीति के गलियारों में व्यापक चर्चा है। क्योंकि इस हिंसा में मई 2023 से 250 से अधिक लोगों की जान चली गई और हजारों लोग बेघर हो गए है। लम्बे समय से यह प्रांत अस्थिरता, असंतोष एवं अशांति की आग में जल रहा है। एन बीरेन सिंह ने माफी मांगते हुए हिंसा के इस लंबे कालखण्ड एवं सिलसिले को दुर्भाग्यपूर्ण बताया और सभी समुदायों से अपील की कि पिछली गलतियों को भुलाकर वे शांति और सौहार्द कायम करें। हालांकि मुख्यमंत्री की इस अपील के अपने मतलब निकाले जा रहे है। कुछ लोगों का कहना है कि यह माफी बहुत पहले मांगी जानी चाहिए थी। कुछ का यह मानना है कि माफी ऐसे समय आई है जब मुख्यमंत्री चौतरफा दबाव में है। विरोधी तो बहुत पहले से उनका इस्तीफा मांग रहे हैं, पिछले कुछ समय से खुद उनके विधायकों और सहयोगियों ने इस माफी को उनकी मजबूरी का परिणाम बताया है। निश्चित ही बीरेन सिंह के लिये माफी मांगना काफी नहीं है, अगर वह मानते हैं कि स्थिति को संभालने में नाकाम रहे तो उन्हें अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए था या केन्द्र को राष्ट्रपति शासन लगाना चाहिए था। अफसोसनाक यह है कि इस मसले पर अक्सर विवाद उभरते रहे और राजनीतिक शख्सियतों के बीच आरोप-प्रत्यारोप अक्सर बेलगाम बोल में तब्दील ही होते रहे, कोई ठोस समाधान सामने नहीं आया, जो गैरजिम्मेदाराना राजनीति को दशार्ता है।

मणिपुर में 3 मई 2023 से ही बहुसंख्यक मैतेई और कुकी के बीच आरक्षण और आर्थिक लाभ को लेकर जो हिंसा शुरू हुई वह अभी थमने का नाम नहीं ले रही। कभी अपनी सांस्कृतिक सद्भावना के लिए जाना जाने वाला राज्य अब गहराते विभाजन एवं जातीय संघर्ष का सामना कर रहा है और लोग लगातार भय में जी रहे हैं। तनाव कम होने का कोई संकेत नहीं दिख रहा। शांति एवं सद्भावना की तलाश अभी भी जारी है। मणिपु? में जब चंद दरिंदें दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर उनके साथ बर्बरतापूर्ण हरकत करते नजर आए तो पूरा प्रांत आक्रोश में आ गया। जनमानस की प्रतिक्रिया लोकतांत्रिक व्यवस्था में बहुत महत्व रखती है। न तो राज्य सरकार ने और न ही केन्द्र सरकार ने हिंसा को रोकने के लिए कोई ठोस उपाय किए और न ही शांति स्थापित करने के कोई प्रयास किए गए। मुख्यमंत्री एन. बीरेन सरकार डेढ़ साल से ज्यादा समय से खेमों में बंटती राजनीतिक उलझन में फंसी रही। सभी दल, नेता एवं सरकार नामुमकिन निशानों की ओर कौमों को दौड़ती रही। यह कौमों के साथ नाइंसाफी होने के साथ अमानवीयता की चरम पराकाष्ठा थी। क्योंकि ऐसी दौड़ जहां पहुंचाती है, वहां कामयाबी की मंजिल नहीं, बल्कि मायूसी का गहरा गड्ढा होता है।

मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह स्वीकारोक्ति कि 'मैं राज्य में जो कुछ हुआ उसके लिए खेद व्यक्त करना चाहता हूं। कई लोगों ने अपनों को खो दिया और कई लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा। मैं खेद व्यक्त करता हूं और माफी मांगता हूं। लेकिन पिछले तीन-चार महीनों में अपेक्षाकृत शांति देखने के बाद, मुझे उम्मीद है कि आने वाले साल में स्थिति सामान्य हो जाएगी।' प्रश्न है कि मुख्यमंत्री 18 माह के खून-खराबे के बाद अब क्यों माफी मांग रहे हैं? वे क्या संदेश देना चाहते हैं? अगर वह स्थिति को संभालने में नाकाम रहे थे तो उन्हें बहुत पहले इस्तीफा दे देना चाहिए था। ताकि स्थितियों लगातार इतनी विकराल नहीं होती, इतनी अधिक जनहानि नहीं होती। देश के नेताओं को गाल बजाने की बजाय आम आदमी को परेशान करने वाली सामाजिक असुरक्षा, जातीय संघर्ष तथा हिंसा जैसे मुद्दों से निबटने के लिये दूरगामी नीतियों के क्रियान्वयन के प्रयास करने चाहिए। यूं तो मणिपुर हिंसा में इतने मासूमों की मौत के बाद मुख्यमंत्री के माफी मांगने का कोई औचित्य नजर नहीं आ रहा। इसीलिये विपक्ष दल एवं कांग्रेस उन पर और केन्द्र सरकार पर हमलावर है। 19 महीनों में एन.बीरेन असंवेदनशील बने रहे और वर्ष के अंत में उन्होंने माफी मांगकर किस संवेदनशीलता का परिचय दिया है? अब सवाल यह है कि त्रासदी का अंत कैसे हो? कैसे शांति स्थापित हो? जरूरत है मनुष्य को बांटे नहीं, सत्य को ढंके नहीं।

बड़ा सवाल यह है कि राज्य द्वारा माफी मांगना केवल दिखावा है और राजनीतिक अपयश निवारण और क्षतिपूर्ति की आवश्यकता मात्र है या किसी सार्थक बदलाव की बुनियाद। हालांकि इस तरह की राजनीतिक माफी अक्सर संदेहास्पद ही होती है क्योंकि माफी में इससे कहीं अधिक की क्षमता होती है। सार्वजनिक रूप से माफी मांगने वाले नेताओं की संख्या में वृद्धि विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं चिन्तनीय रही है। माफी मांगना एक ऐसी युक्ति है जिसका इस्तेमाल नेता अब अक्सर अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिये करते हैं, ताकि वे कम से कम लागत पर अपनी गलतियों को पीछे छोड़ सकें या उनसे पीछा छूडा सके। लेकिन बीरेन सिंह की माफी की अच्छी बात यह है कि तमाम दबावों के बाद ही सही, राजनीति और समाज के हर प्रमुख हिस्से ने उनकी माफी को सकारात्मक कदम माना है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि इस माफी की पहल को विश्वसनीय बनाया जाये एवं ऐसे उपयोगी एवं जरूरी कदम उठाए जाये ताकि मणिपुर राज्य में मैतेई समुदाय और पहाड़ी क्षेत्रों में कुकी जनजातीय समुदायों के बीच चला आ रहा टकराव विराम पा जाये। जरूरी है कि केंद्र और राज्य की सरकार मुख्यमंत्री की इस पहल से उपजे सद्भाव को स्थायित्व देने की कोशिशें अविलंब शुरू कर दें।

2023 के मुकाबले 2024 की दूसरी छमाही में मणिपुर के हालात बेहतर रहे, संघर्ष की स्थितियां कम देखने को मिली। लेकिन पूर्व की हिंसक घटनाओं और मृतकों की संख्या को उससे बनने वाले माहौल से अलग करके नहीं देखा जा सकता। तनाव, संघर्ष और अविश्वास के जिस माहौल से मणिपुर गुजर रहा है, उसकी सचाई इसी हफ्ते कांगपोकपी जिले में कथित कम्युनिटी बंकरों को सुरक्षा बलों द्वारा नष्ट किए जाने पर हुए संघर्ष में 40 लोगों के जख्मी होने और कुकी नैशनल फ्रंट के कथित हमलों के खिलाफ चुराचांदपुर जिले में बंद का आह्वान किए जाने से स्पष्ट है। अभी भी असामान्य हालातों के बीच सवाल है कि मुख्यमंत्री की इस माफी का राज्य के अलग-अलग समुदायों के लोगों पर कैसा और कितना असर पड़ेगा? सवाल महत्वपूर्ण इसलिए भी हो जाता है क्योंकि यह आरोप संघर्ष शुरू होने के बाद से ही लगता रहा है कि मुख्यमंत्री और राज्य प्रशासन की भूमिका निरपेक्ष नहीं है। आरोप पूरी तरह गलत हो तो भी इससे इतना तो स्पष्ट है कि प्रदेश के लोगों का एक खेमा उन्हें अविश्वास भरी नजरों से देखता है। इतने गंभीर और मानवता के अस्तित्व को ही नकारने से जुड़े मसले पर भी समाज के लोगों में जो बंटवारे की प्रवृत्ति राजनीतिक कारणों से दिख रही है वो किसी भी नजरिए से देश की एकता और अखण्डता के लिये फायदेमंद नहीं है।

मुद्दा चाहे कोई भी, खांचों या खेमों में बांटने या बंटने का और आम लोगों को तोड़ने का या जोड़ने का- राजनीति से जुड़े लोगों, राजनीतिक दलों और नेताओं में तो शुरू से रहा है लेकिन जब समाज में आम लोग भी इस तरह के बंटवारे का हिस्सा बन जाते हैं तो इसमें नुकसान सिर्फ और सिर्फ देश के नागरिकों का होता है। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सरकार संकट में सही ढंग से नहीं निपटने के चलते अपनी विश्वसनीयता पहले ही खो चुकी है, लेकिन उसे पुनः हासिल करने के लिये माफी से आगे बढ़कर और अधिक सामाजिक एकता, समरसता एवं सौहार्द के प्रयत्न करने होंगे। हमारे देश की राजनीति की विडम्बना ही रही है कि लोगों को धर्म, जाति, वर्ग, भाषा, वर्ण के नाम पर बांट कर किसी न किसी तरह सत्ता हासिल करना। हालांकि सही मायने में लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीति की परिभाषा और दायरा उससे कहीं ज्यादा व्यापक है। जातीय हिंसा का समाधान संवाद से ही होता है। राज्य सरकार को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए मैतेई और कुकी समुदाय के साथ लगातार संवाद जारी रखना चाहिए।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

# नकली दवा कारोबारी : समाज के कोढ़ हैं ये

अजय प्रताप तिवारी

स्वास्थ्य प्रत्येक व्यक्ति का मूलभूत अधिकार है। मनुष्यों को स्वस्थ रहने के लिए उपचार की आवश्यकता भी होती है, लेकिन जब उपचार नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं पर आधारित हो तो इंसानों का स्वास्थ्य पूरी तरह से प्रभावित होता है। नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं का बढ़ता दायरा केवल पीड़ित लोगों के जीवन खतरे में नहीं होते हैं, बल्कि स्वास्थ्य प्रणाली और चिकित्सा उद्योग की विश्वसनीयता भी प्रभावित होती है।

भारत में इन दिनों नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। भारत का कोई ऐसा राज्य नहीं है जो नकली दवाओं से प्रभावित न हो। हाल में कोलकाता में कैंसर और मधुमेह जैसे गंभीर बीमारी में उपयोगी होने वाली नकली दवाओं को केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन और पश्चिम बंगाल के औषधि नियंत्रण निदेशालय के साझा सहयोग से पकड़ा गया है जिसकी कीमत 6.60 करोड़ बताई गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में कुल बिकने वाली दवाओं में बीस प्रतिशत नकली और गुणवत्ताहीन दवा शामिल हैं। भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में केवल दवा का बाजार लगभग दो लाख करोड़ का है जिसमें नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं की भागीदारी 15 से 20 प्रतिशत के करीब है। भारत में नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार जैसे राज्य शामिल है। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने केवल 2023 में नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं के लगभग 50 हजार मामले दर्ज किए थे। उद्योग संगठन एसोचैम की रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत के दवा बाजार में कुल उपलब्ध एक एक-चौथाई दवा नकली और गुणवत्ताहीन है। 'फेक एंड काउंटरफीट ड्रग्स इन इंडिया-बूमिंग बिज' नामक अध्ययन की रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत में नकली दवाओं का कारोबार 33 प्रतिशत की वृद्धि दर से प्रति वर्ष बढ़ रहा है। नकली दवाओं का बाजार बढ़ने के कई कारण हैं, जिसमें दवा की ऑनलाइन बिक्री, गुणवत्तापूर्ण दवा की अपेक्षा नकली दवा का सस्ती कीमत, दवाओं के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी, डॉक्टर द्वारा मरीजों के पर्चे पर लिखे गए दवा के नाम के साथ प्रमाणित दवा कंपनियों का नाम न लिखना, बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में स्वास्थ्य सुविधाओं का उपलब्ध न होना, नकली और गुणवत्ताहीन दवा की पहचान करने की तकनीकी का न होना, ठोस कानून का आभाव के कारण नकली दवा का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। भारत में नकली और गुणवत्ताहीन दवा की बिक्री शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक होती है। भारत में नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं का बढ़ता दायरा चिंता का विषय है। भारत जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा निमार्ता और निर्यातक है। एशियन लाइट की रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक फार्मा बाजार में भारत की हिस्सेदारी 13 प्रतिशत है। भारत में बढ़ते नकली दवा से केवल न इंसानों के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है बल्कि इससे भारत की वैश्विक स्तर पर दवा उद्योग में छवि भी धूमिल होती है। नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं के प्रचलन से चिकित्सा पेशे और स्वास्थ्य प्रणाली से जनता का विश्वास भी घटता है।

नकली दवा के रोकथाम के लिए कानूनी प्रावधानों में परिवर्तन करते हुए नकली दवाओं के उत्पादन और बिक्री में संलिप्त व्यक्तियों के लिए बहुत सख्त और दंड के साथ आर्थिक जुमार्ने का प्रावधान होना चाहिए। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन और राज्य स्तर पर दवा नियामक संस्थानों को दवाओं के प्रति साप्ताहिक प्रशिक्षण और जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। सभी दवा कमानियों को सभी प्रकार के दवा उत्पाद पर ट्रैक और ट्रेस तकनीक का उपयोग के लिए सरकार द्वारा बाध्य किया जाना चाहिए ताकि मरीज नकली और असली दवाओं की पहचान आसानी से कर सकें। दवा की प्रामाणिकता जांचने के लिए मोबाइल एप और ऑनलाइन डेटाबेस की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए।

नकली और गुणवत्ताहीन दवाओं की रोकथाम के लिए वैश्विक स्तर पर एकजुट होकर समस्या का समाधान तलाश करना होगा। भारत को नकली दवाओं को रोकने के लिए बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ाना होगा। बढ़ती जनसंख्या, निर्धनता और महंगी स्वास्थ्य सेवाओं के कारण लोगों को सस्ती और नकली दवाओं पर बाध्य होना पड़ता है। भारत को नाइजीरिया और अमेरिका की तकनीकी मेडिसेफर एवं ट्रैक एंड ट्रेस सिस्टम की पहल करना चाहिए। यह तकनीकी नकली आपूर्ति श्रृंखला नजर रखती है। सख्त कार्रवाई से ही स्वस्थ भारत और सशक्त भारत का निर्माण होगा।

## एक नजर

### बोकारो में दो फरवरी को होगा सेल हाफ मैराथन

**बोकारो** : बोकारो सेल के तत्वाधान मे आगामी दो फरवरी को हाफ मैराथन दौड़ आयोजित किया जायेगा। इसकी जानकारी सेक्टर 4 स्थित कुमार मंगलम स्टेडियम मे आयोजित प्रेस कांफ्रेस को सम्बोधित करते हुए सेल अधिकारीयों ने बताया की एक्टिव बोकारो हैल्थी बोकारो के नियत से यह कार्यक्रम सेल द्वारा आयोजित किया जा रहा है। इसमें 21 किलोमीटर तक का मैराथन दौड़ शामिल है। उन्होंने कहा की रजिस्ट्रेशन शुरू है, अबतक 600 से अधिक प्रतिभागियों ने रजिस्ट्रेशन करवाया है। इस बार 4 हजार प्रतिभागियों का लक्ष्य निर्धारित किया है। 21 दिसंबर से रजिस्ट्रेशन शुरू है जो 20 जनवरी तक होगा। उन्होंने बताया कि राज्य से बाहर के लोग भी मैराथन मे भाग लेंगे, पिछले बार भी कई राज्यों के प्रतिभागी भाग लिए थे। इसमें 2 किमी, 5किमी, 10किमी, और 21 किमी का मैराथन शामिल है। मैराथन मे भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन फीस 100 रुपए निर्धारित किये गए है। उन्होंने कहा कि भारत का एकमात्र ग्लोबल एक्टिव पार्टनर सिटी बोकारो है,अक्टर सर्टिफाइड रन है,बोकारोवासियो को स्वस्थ रखने मे भी यह सहायक होगा। प्रतिभागियों को पुरसस्कृत किया जायेगा।सभी प्रतिभागियों के लिए सभी तैयारियां पूरी की जा चुकी है, रास्ते मे पेयजल, मेडिकल टीम, वोलेटियर आदि भी तैनात रहेंगे। मौके पे कुंदन कुमार सीजेएम नगर सेवा, मणिकांत धान संचार प्रमुख सेल, कृष्ण चंद्र जीएम, सुभाष रजक मौजूद रहे।

### मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है पूरा नींद लेना : डॉ प्रशांत कुमार मिश्रा

**बोकारो** : बिरसा नर्सिंग कॉलेज चास बोकारो में तम्बाकू के दुष्परिणाम विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल के निर्देशक शैलेश कुमार के द्वारा की गई। जिला परामर्शी मो0 असलम द्वारा सभी बच्चों को तम्बाकू के दुष्परिणाम, तम्बाकू में पाये जाने वाले जहरीले तत्व के बारे में बताया गया। जिला परामर्शी ने बच्चों को अपने चर्चा के दौरान बताया कि तम्बाकू में पाया जाने वाला नशीला पदार्थ निकोटीन से बच्चों में चिन्ता, नींद न आना, चिडचिडापन एवं अवसाद जैसे गम्भी समस्यायें हो सकती हैं। जिला परामर्शी ने बच्चों को बताया कि यदि आप तम्बाकू का सेवन करते है या आपके आसपास कोई सेवन करता है और वह तम्बाकू के लत को छोडना चाहता है और कई बार प्रयास करने पर भी नही छोड पाता है तो उसे तम्बाकू नशा मुक्ति केन्द्र सदर अस्पताल के 13 नं0 ओ0पी0डी0 में भेजें ताकि उन्हें तम्बाकू छुडाने में मदद की जा सके। स्कूल के प्राचार्य ने सभी बच्चों को बताया तम्बाकू को एक लाईन में परिभाषित करें तो तम्बाकू का मतलब बीमारियों का भण्डारा। चाहे आप इसे धुएं के शकल में लें या चबाकर खाये। यह मानव शरीर में जाकर विभिन्न प्रकार के बीमारियों को उत्पन्न करता है और फिर उस बीमारी से लोगों की मौत हो जाती है। इस लिये तम्बाकू मानव शरीर को धीरे धीरे खोखला करता है।हम सभी से अनुरोध करना चाहते है कि इस लत से बचें और एक जिम्मेदार नागरिक के नाते अपने आसपास के लोगों को भी इसके दुष्प्रभाव से अवगत कराये। कार्यक्रम में स्कूल के निदेशक शैलेश कुमार, जिला परामर्शी मो0 असलम तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम, आरती कुमारी मिश्रा जिला कार्यक्रम सहायक सोशल वर्कर छोटेलाल दास, विद्यालय के शिक्षक, स्टाफ व बच्चे उपस्थित रहें।

# मानसिक रूप से बीमार महिला ने गला रेतकर अबोध बेटी को मार डाला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**गुमला** : घाघरा थाना क्षेत्र के बड़ाअजियातु गांव में मानसिक रूप से बीमार महिला ने डेढ़ वर्षीय पुत्री नीतू कुमारी की सब्जी काटने वाले बैठी से गला रेतकर हत्या कर दी। घटना शुक्रवार रात की है। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस दलबल के साथ घटनास्थल पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए गुमला सदर अस्पताल भेज दिया। पुलिस आरोपित मां फूलमनी देवी को हिरासत में लेकर थाने ले आई। घटना के संबंध में आरोपित महिला के पति कैलाश गोप ने कहा कि शुक्रवार की रात वह घर में खाना बना रहा था। इसी दौरान उसकी पत्नी फूलमनी देवी बच्ची

को गरम कपड़ा पहनाने के बहाने दूसरे कमरे में ले गई और सब्जी काटने वाला बैठी से गर्दन रेत हत्या कर दी। हल्की आवाज होने के बाद हमने झांक कर घर में देखा तो उसकी पत्नी ने बच्ची की गला रेतकर हत्या कर दी थी। इसके बाद उसने आसपास के लोगों को घटना की जानकारी दी। पुलिस को भी सूचना दी गई। कैलाश गोप ने कहा कि उसकी पत्नी की मानसिक स्थिति खराब थी। वर्ष 2018 से प्राइवेट अस्पताल में उसका इलाज चल रहा था। इधर कुछ दिनों से फूलमनी देवी की तबीयत खराब होने के कारण पहले की दवा को बंद कर दूसरा दवाई चल रही थी। इस बीच अचानक उसकी तबियत खराब हो गई और उसने अपनी बेटी को ही मार डाला। इस संबंध में थाना प्रभारी तरुण कुमार ने शनिवार को बताया कि आरोपित महिला को हिरासत में लिया गया है और घटना में प्रयुक्त तेज धार बैठी को जब्त किया गया है। बच्ची के शव को पोस्टमार्टम के लिए गुमला भेजा गया है। पुलिस अन्य पहलुओं पर भी जांच कर रही है।

## वन विभाग के सामने 40 हजार रुपये की लूट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**पलामू** : मेदिनीनगर शहर थाना क्षेत्र के कचहरी के समीप वन विभाग गेट के सामने एक व्यक्ति से 40 हजार रूपए लूट लिए गए। घटना शुक्रवार की है। लेकिन शनिवार को खबर लिखे जाने तक इस संबंध में एफआइआर दर्ज नहीं की गयी थी। पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच में जुटी हुई है। जानकारी के अनुसार छतरपुर के रहने वाले रामावतार राम ने शुक्रवार को एसबीआई मेन ब्रांच से 40 हजार रूपए की निकासी की थी। पैसे जैकेट में रखे थे। बैंक से निकलते समय एक युवक ने उनसे पोस्ट ऑफिस के बारे में जानकारी लेने की कोशिश की तो बताया कि उन्हें नहीं पता है। जोर से लघुशंका लगे रहने के कारण वन विभाग कार्यालय के सामने सड़क की दूसरी तरह जाकर लघुशंका की। लघुशंका

करने के दौरान जैकेट से रूपए निकाल कर पैंट के पैकेट में रखे थे। इसी क्रम में दो युवक आए और उनसे 40 हजार रूपए लूटकर भागने लगे। विरोध करने पर एक रूमाल में बंधा बंडल फेंका। उन्हें लगा कि विरोध के कारण लुटेरे उनके रूपए फेंक दिए हैं। गिरे हुए बंडल को अपना पैसा समझ कर उसे उठाने लगे, इसी क्रम में लुटेरों को मौका मिल गया और वे मौके से भाग निकले। फेंके गए बंडल को खोलकर देखा तो उसमें कागज के नोट नुमा बंडल थे। रामावतार राम ने इस संबंध में आवेदन देकर कार्रवाई करने की गुहार लगायी है। रामावतार राम की बेटी डा. जीपी सिंह के क्लिनीक में भर्ती है। रूपए निकाल कर वे वहीं पर जाने के लिए निकले थे। उन्होंने कहा कि रूपए छीनने के दौरान मदद की अपील की, लेकिन किसी ने सहयोग नहीं किया।

**लुटेरों को अविलंब गिरफ्तार करे पुलिस प्रशासन : जेकेएम**

झारखंड क्रांति मंच के संस्थापक सह केन्द्रीय अध्यक्ष शत्रुघ्न कुमार शत्रु ने शनिवार को प्रेस बयान जारी कर जेकेएम के पलामू के जिलाध्यक्ष विजय राम के बड़े भाई रामावतार राम से फारेस्ट विभाग के गेट पर लुटेरों के जरिये 40 हजार लूटने की घटना की कड़ी निंदा की और पुलिस प्रशासन से लुटेरों को शीघ्र गिरफ्तार कर लूटे गए रुपए वापस दिलाने की मांग की।उन्होंने कहा है कि 3 जनवरी को 12 बजे दिन में बैंक परिसर से ही उनका पीछा कर लुटेरों ने घटना को अंजाम दिया। जब उन्होंने शोर मचाया तो लुटेरों ने कागज के दोनों तरफ नोट से बने बंडल फेंक कर चकमा देते हुए फरार हो गए। उन्होंने बैंक परिसर में लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर लुटेरों की पहचान करने का आग्रह किया है।

### खादी मेला में उमड़ी भीड़

**रांची** : राष्ट्रीय खादी और सरस महोत्सव 2024-2025 अब अपने समाप्ति की ओर बढ़ रहा है, लेकिन लोगों का उत्साह कम नहीं हो रहा है। आज मेले में भारी संख्या में लोगों की भीड़ उमड़ी। इस वर्ष सरस मेला ने पारंपरिक आदिवासी कला और संस्कृति को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। पलाश ज्वेलरी और वस्त्रों से सजे मॉडलों ने मंच पर अनूठा प्रदर्शन किया, जिसे दर्शकों ने बेहद सराहा। मेले में झारखंड की कला, हस्तशिल्प और संस्कृति का जीवंत अनुभव देखने को मिला। मेले में झारखंड के स्थानीय स्वादिष्ट व्यंजनों, जैसे दीदी कैफे के पकोड़े, छिलका, बालूशाही और अन्य परंपरागत व्यंजन लोगों को खूब पसंद आए। खादी एवं सरस महोत्सव में भारतीय परिधानों, हस्तशिल्प और व्यंजनों के अलावा जो सबसे अधिक लोगों को पसंद आ रहा है वह है किताबें।

## अवैध खनन व परिवहन में शामिल तीन ट्रैक्टर जब्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रामगढ़** : रामगढ़ जिले में अवैध खनन, खनिजों के परिवहन पर पूरी तरह से रोक लगाने एवं दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करने के उद्देश्य से उपायुक्त, रामगढ़ श्री चंदन कुमार द्वारा अधिकारियों को योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने का निर्देश दिया गया है। इसी क्रम में कुज्जू ओपी अंतर्गत ग्राम बोंगाबार के पास दो ट्रैक्टर बालू लोड कर ले जाते हुए पाया गया गश्ती दल द्वारा दोनों ट्रैक्टर चालको से जांच के क्रम में बालू संबंधित कागजात की मांग करने पर कोई भी कागजात प्रस्तुत नहीं किया गया। दोनों ट्रैक्टरों में अवैध बालू परिवहन किया जा रहा था जो महिंद्रा लाल रंग ट्रैक्टर जिसका निबंधन संख्या जेएच18 एच1671 वहीं दूसरी वाहन संख्या पावर ट्रैक 434 ब्लू रंग का ट्रैक्टर इंजन नंबर ई3187429,चेचिस नंबर बी 3169037 एवं बासल थाना क्षेत्र में संध्या गस्ती के क्रम में जयनगर पतरातु की ओर से अवैध बालू

लोड लाल रंग का महिंद्रा ट्रैक्टर जिसका चेचिस नंबर पर अवैध बालू खनिज लोड पाया गया। उक्त तीनों ट्रैक्टरों में जांच पड़ताल किया गया परंतु बालू का परिवहन चालान कागजात नहीं पाया गया। जिसके उपरांत वाहन मालिक, चालक एवं अन्य संलिप्त लोगों के विरूद्ध सरकारी संपत्ति की चोरी, खनन राजस्व की छति, माननीय राष्ट्रीय हरित न्यायधिकरण के आदेश का उल्लंघन तथा खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम 1957 के धारा 4/21, झारखंड लघु खनिज नियमावली 2004 यथा संशोधित के नियम 4/54 एवं 2017 के नियम 9/13 के तहत जिला खान निरीक्षक रामगढ़ द्वारा प्राथमिकी दर्ज करायी गयी।

## विधिक जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**खूंटी** : नालसा और झालसा के निर्देश में शनिवार को सहयोग विलेज हुटार, खूंटी में प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह डालसा अध्यक्ष रषिकेश कुमार के निर्देश पर विश्व ब्रेल दिवस के अवसर पर विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साथ ही 90 दिवसीय आउटरिच कार्यक्रम भी आयोजन किया गया। जागरूकता शिविर में डालसा के पीएलबी ने कहा कि चार जनवरी को दुनिया भर में ब्रेल दिवस मनाया जाता है। यह दिन का ब्रेल लिपि का आविष्कार करने वाले फ्रांसीसी शिक्षक लुई ब्रेल की जयंती के रूप में मनाया जाता है। विश्व ब्रेल दिवस मनाने की शुरूआत करने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा की ओर से छह नवंबर 2018 को पारित किया था, जिसमें हर साल चार जनवरी को ब्रेल लिपि के आविष्कारक लुई ब्रेल के जन्म दिवस को उनके सम्मान एवं विश्व ब्रेल दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था। ब्रेल लिपि उन लोगों के लिए वरदान बन गई, जो आंखों से देख नहीं सकते हैं। ब्रेल लिपि नेत्रहीनों के पढ़ने लिखने की एक स्पर्शनीय कोड है। बताया गया कि दिव्यांग और दृष्टिहीन बच्चे अब अपना भविष्य निर्माण कर सकते हैं। उनके पढ़ने-लिखने के लिए एक विशेष प्रकार के विद्यालय की व्यवस्था की गई है। वहां ऐसे बच्चे निःशुल्क शिक्षा पा सकते हैं। दृष्टिहीनता का मतलब किसी शारीरिक अक्षमता से है नहीं है। इससे प्रतिभा या कौशल की कमी नहीं होती। ऐसे दृष्टिहीन व्यक्तियों ने जीवन में बड़ी-बड़ी सफलता पाई है। ऐसे लोगों के लिए हम सबों को उनकी मदद करनी चाहिए। साथ ही अभी पूरे जिले में 90 दिवसीय विधिक जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा हैं। डालसा के पीएलबी जगह-जगह 90 दिवसीय कार्यक्रम को लेकर लोगों को जागरूकता के बारे में जानकारी दे रहे हैं। यह जानकारी डालसा सचिव राजश्री अपर्णा कुजूर ने दी।

# राज्य स्तरीय फुटबाल टूर्नामेंट का भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष करेंगे उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**पलामू** : दिवंगत अनिल चौरसिया की याद में लोकेया में दिनकर स्पॉटिंग क्लब लोकेया चैनपुर पलामू के तत्वावधान में पांच से 11 जनवरी तक राज्य स्तरीय फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया है। इसका उद्घाटन पूर्व मुख्यमंत्री सह झारखंड प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी करेंगे। राज्य स्तरीय फुटबाल टूर्नामेंट मैच में पलामू भंडरिया के अलावा बिहार एलेवेन, छत्तीसगढ़, बक्सर, सोनभद्र, कोलकाता एवं मुगलसराय की टीम भाग लेंगी। चौनपुर प्रखंड के लोकेया गांव के खेल मैदान में बुधवार को

कार्यकर्ता बैठक कर विधायक आलोक चौरसिया ने कहा कि उनके पिता स्वर्गीय अनिल चौरसिया इस मैदान में निरंतर जिला एवं राज्य स्तरीय फुटबॉल मैच का आयोजन करते थे। उनकी विरासत को बनाए रखने के लिए प्रत्येक वर्ष इस मैदान में दिनकर स्पोर्टिंग क्लब-लोकेया के तत्वावधान में स्वर्गीय अनिल चौरसिया की याद में राज्य स्तरीय फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया जाने लगा है। पांच जनवरी को बिहार एलेवन एवं छत्तीसगढ़, छह को भंडरिया एवं बक्सर, सात को पलामू एवं सोनभद्र की टीम खेलेगी। आठ को कोलकाता एवं मुगलसराय की टीम भिड़ेगी। चारों टीम में से विजेता दो टीम नौ एवं 10 जनवरी को सेमीफाइनल खेलेगी। 11 जनवरी को फाइनल मैच खेला जाएगा। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी, पलामू सांसद विष्णु दयाल राम, भवनाथपुर के विधायक सह पूर्व मंत्री स्वास्थ्य विभाग भानु प्रताप शाही, पाटन छतरपुर की पूर्व विधायक पुष्पा देवी, पूर्व सांसद मनोज भुइयां, विश्रामपुर विधानसभा विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी, पांकी विधायक डॉ कुशवाहा शशि भूषण मेहता आदि इस कार्यक्रम में भाग लेंगे।

## संक्षिप्त खबरें

### केएस गंगा अस्पताल खूंटी में मरीज के ब्रेन का हुआ सफल ऑपरेशन

**खूंटी** : खूंटी के केएस गंगा हॉस्पिटल में बाइक दुर्घटना में ब्रेन हेमरेज के मरीज का जटिल ऑपरेशन कर मरीज की जान बचाकर अस्पताल के डॉक्टरों ने मरीज को तो नई जिंदगी दी है। इससे घायल के पूरे परिवार में खुशी की लहर है। इस संबंध मं अस्पताल के डॉक्टर अंजीव कुमार नयन ने शनिवार को बताया कि मातिश बागे नामके खूंटी का एक 60 वर्षीय व्यक्ति गत 22 दिसंबर को शाम तीन बजे पाहनटोली गुमला में ट्रैक्टर और बाइक के बीच हुई सीधी टक्कर में गंभीर रूप से घायल हो गया था। उसके सिर पर गंभीर चोट लगी थी।उसी दिन शाम के छह बजे उसके परिजनों के जरिये उसे केएस गंगा हॉस्पिटल खूंटी में भर्ती कराया गया। डॉ अंजीव नयन कुमार ने जांच में पाया कि उसका ब्रेन हेमरेज हो गया है। उन्होंने मरीज के स्वजनों को शीघ्र ऑपरेशन की सलाह दी। रात में ही डॉ अंजीव नयन कुमार और केएस गंगा की मेडिकल टीम के जरिये उसका जटिल ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन में ब्रेन के हड्डी को पेट में डाला गया है। उसे तीन महीने बाद पुनः ऑपरेशन कर हड्डी के हिस्से को पेट से निकालकर सिर में उसके स्थान पर लगा दिया जाएगा। मरीज अब बिलकुल स्वस्थ है। इस संबंध में मरीज के स्वजनों ने बताया कि उन्हें तो भरोसा ही नहीं था कि मातिश की जान बच जाएगी, पर डॉ अंजीव कुमार और उनकी टीम ने मरीज को नई जिंदगी दे दी। केएस गंगा अस्पताल में संभवतः यह पहली सर्जरी थी।

### पलामू में 17263 मनरेगा योजना लंबित एक सप्ताह में पूर्ण करने का निर्देश

**पलामू** : उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद ने डीआरडीए सभागार में मनरेगा और आवास योजना के तहत किये जा रहे कार्यों की शनिवार को समीक्षा की। वित्तीय वर्ष 2021-22 एवं उसके पूर्व की लंबित 17263 योजना को तीव्र गति से एक सप्ताह के अंदर योजनाओं की समीक्षा कर मनरेगासॉफ्ट में पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। समीक्षा के क्रम में हुसैनाबाद में 5348, पाटन में 2766 एवं पाटन में 1165 योजनाएं लंबित है। इन सभी संबंधित बीडीओ को कार्य पूर्ण करने को लेकर विशेष रूप से ध्यान देने का निर्देश दिया गया। मानव दिवस सृजन की समीक्षा में पाया गया कि माह जनवरी 2025 तक निर्धारित लक्ष्य के विरुद्ध प्रखंड मेदिनीनगर के जरिये 37 .27 प्रतिशत, पाटन के जरिये 43 .39 प्रतिशत, हुसैनाबाद के जरिये 46 .01 प्रतिशत, विश्रामपुर के जरिये 46 .51 प्रतिशत तथा पांकी के जरिये 49 .95 प्रतिशत काम किया गया है। इस पर उन्होंने अप्रसन्नता जाहिर करते हुए पंचायत वार समीक्षा कर सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले पंचायत को चिन्हित कर कारण बताओ नोटिस जारी करने, मानदेय में कटौती करने तथा कार्य मुक्त करने की अनुशंसा करने का निर्देश दिया गया। उन्होंने शत प्रतिशत आधार सीडिंग, जॉब कार्ड वेरिफिकेशन तथा जियो टैग कराने का निर्देश दिया गया। आवास योजना की समीक्षा के दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, अबुआ आवास, पीएम जनमन आवास एवं बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर आवास योजना की विस्तार पूर्वक समीक्षा की गयी। समीक्षा के क्रम में प्रधानमंत्री आवास योजना, अबुआ आवास योजना एवं पीएम जनमन आवास अंतर्गत स्वीकृति एवं प्रथम गैप को एक सप्ताह के अंदर कैम्प कर समाप्त करने का निर्देश दिया गया। अबुआ आवास योजना अंतर्गत प्लिंथ एवं लिंटल हो चुके आवासों में लंबित द्वितीय और तृतीय किस्त का अविलंब प्रस्ताव उपलब्ध कराने का निर्देश सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को दिया गया। सभी आवास के लाभुकों को मनरेगा अभिसरण के तहत अनिवार्य रूप से मजदूरी भुगतान सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रखंड विकास पदाधिकारी और प्रखंड समन्वयक उपस्थित रहे।

### पदक प्राप्त खिलाड़ियों को डीडीसी और डीईओ ने किया सम्मानित

**कोडरमा** : पांचवां खुला क्योरगी ताइक्वांडो चैंपियनशिप कार्यक्रम कोलकाता में सम्पन्न हुआ। इसमें कुल 18 राज्यों से करीब 15 सौ खिलाड़ी भाग लिए, जिसमें 18 राज्यों से खिलाडियों ने प्रदर्शन किया। इसे ताइक्वांडो फेडरेसन ऑफ इंडिया ने ऑर्गनाइज किया, जिसमें झारखंड राज्य के करीब अलग अलग जिलों से सत्तर खिलाड़ियों ने भाग लिए। इस दौरान ताइक्वांडो डे-बॉडिंग के 13 खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय लेवल पर भाग लिए, जिसमें झारखंड राज्य को रनर अप ट्रॉफी प्राप्त हुई और सात खिलाड़ी स्वर्ण पदक तथा छह खिलाड़ी रजत पदक प्राप्त किए। स्वर्ण पदक प्राप्त खिलाड़ियों में माना कुमारी, खुशी कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, नायशा कुमारी, रोजी प्रवीण, नाजिया प्रवीण, खुशबु कुमारी शामिल है। साथ ही रजत पदक प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों में खुशबु कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, सुहानी कुमारी, आदिति सिंह, पूनम कुमारी सहित अन्य शामिल थीं। कार्यक्रम में प्रशिक्षक अशोक कुमार को नेशनल में रनर अप प्राप्त हुआ। सभी विजेता खिलाड़ियों को शनिवार को उप विकास आयुक्त ऋतुराज एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी कोडरमा अविनाश राम जरिये सम्मानित किया गया।

### महिला के साथ दुष्कर्म की आशंका, पति ने करायी एफआइआर

**पलामू**: पलामू से सटे गढवा जिले के रमकंडा के बियाटांड़ जंगल में हाड़ीघाट के पास मवेशी (बकरी) चराने के दौरान बेहोश एवं नग्न मिली 26 वर्षीया महिला का लगातार इलाज किया गया। करीब 36 घंटे बाद शनिवार तड़के होश में आई। महिला बोल नहीं पा रही है। गला दबाए जाने के कारण उसे बोलने में परेशानी आ रही है। वह आठ माह की गर्भवती है। गर्भ में बच्चे की हार्ट बीट बढा होने के कारण उसे बेहतर इलाज के लिए रांची रिम्स रेफर कर दिया गया। मेडिकल जांच के बाद उसे रांची भेज दिया गया। इस बीच उसके पति ने खुलासा करते हुए कहा कि उसकी पत्नी जंगल के झाड़ी में बेहोश मिली थी। उसके तन पर कपड़े नहीं थे। किसी तरह उसे इलाज के लिए गुरूवार रात 10 बजे एमआरएमसीएच में भर्ती कराया था। पति ने दुष्कर्म की आशंका जतायी है। पति के अनुसार महिला गुरूवार सुबह हर दिन की तरह बकरियों को लेकर चराने निकली थी। शाम तक जब घर नहीं लौटी तो उसकी खोजबीन शुरू की गयी। जंगल में खोजते हुए पति एवं सास-ससुर जब रमकंडा-मंगराही के सिवाना पर हाड़ीघाट घाट के पास बियाटांड जंगल में पहुंचे तो वहां एक बकरी बंधी मिली, जबकि महिला झाड़ी में पड़ी मिली थी। पति के अनुसार दुष्कर्म के बाद उसकी हत्या करने के लिए गला दबाया गया था।

# मानगो नगर निगम क्षेत्र में व्याप्त गंदगी के खिलाफ कांग्रेसियों ने दिया धरना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**जमशेदपुर :** मानगो नगर निगम क्षेत्र में व्याप्त गंदगी एवं जगह-जगह जमा कचरा की सफाई की मांग को लेकर शनिवार को कांग्रेस कार्यकताओं ने निगम कार्यालय के समक्ष धरना दिया। इस दौरान कांग्रेसियों ने निगम के अधिकारियों एवं वर्तमान विधायक सरयू राय पर जनता को परेशानी में डालने का आरोप लगाया।

**सरयू राय की शिकायत से यह स्थिति बनी : नितेश मित्तल**

कांग्रेस नेता नितेश मित्तल ने कहा कि वर्तमान विधायक सरयू राय द्वारा एनजीटी में शिकायत करने से यह स्थिति उत्पन्न हुई है। जिसके कारण विगत 15 दिनों से मानगो में कचरा का उठाव बंद है। हर चौक चौराहे पर गंदगी का अंबार है। वहां से आने जाने वाले लोग परेशान हैं। क्योंकि कचरा से दुर्गंध आ रही है। जिसके कारण क्षेत्र में महामारी फैलने की आशंका बढ़ गई है।

**वर्तमान विधायक पर आंख में धूल झोंकने का आरोप**

उन्होंने मानगो नगर निगम पर आरोप लगाया कि ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव तक नहीं करवाया जा रहा है। जबकि आनन फानन में विधायक के कुछ लोग ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव करने लगे। मानगो की जनता समझ गई है कि वर्तमान विधायक सिर्फ और सिर्फ आंख में धूल झोंकने का काम कर रहे हैं। कांग्रेस नेता गुड्डू सिंह ने कहा कि अगर 48 घंटे के अंदर मानगो के कचरा का उठाव एवं इसका निष्पादन सुचारू रूप से नहीं किया गया तो मानगो वासियों के साथ कांग्रेस पार्टी मानगो नगर निगम में तालाबंदी करने को बाध्य होगी। जिसकी जवाबदेही मानगो नगर निगम एवं स्थानीय विधायक की होगी। धरना में यह लोग रहे शामिल कार्यक्रम में मुख्य रूप से पप्पू सिंह उज्जैन, अजय मिश्रा, अखिलेश सिंह, संजय तिवारी, बबुआ झा, नितेश मित्तल, संजय शर्मा, मोहम्मद अख्तर, राकेश दास, शाहनवाज अहमद, बबन शुक्ला, ताकू भाई, सुरेंद्र गुप्ता, प्रभाकर, अश्विनी सिंह, सुबोध पाल, जयदेव शर्मा, शिशु गोप, कृपा मुर्मू, पवन बिहारी ओझा, निधि मिश्रा, गोपाल यादव, सन्नी अनुराग, दिनेश लोहार, सूरज प्रकाश, रविशंकर केपी, उमेश शर्मा, अनुज प्रसाद आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## एक नजर

### धान अधिप्राप्ति केंद्र का विधायक समीर कुमार मोहंती ने किया उद्घाटन

**जमशेदपुर :** बहरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र अवस्थित लैम्पस में शनिवार को विधायक समीर कुमार मोहंती ने धान अधिप्राप्ति केंद्र का फीता काटकर विधिवत तरीके से उद्घाटन किया। इस अवसर पर विधायक ने कहा कि धान क्रय केंद्र का उद्घाटन होने से यहां किसानों को सरकारी दर पर धान बेचने में सुविधा होगी। किसानों को कोई परेशानी नहीं हो इस पर विशेष ध्यान रखें : विधायक विधायक ने अधिकारियों तथा धान क्रय केंद्र में उपस्थित कर्मचारियों को कहा कि किसानों का धान बेचने में किसी तरह का कोई परेशानी नहीं हो इस पर विशेष ध्यान रखें। इस बार साधारण धान 2400 प्रति क्विंटल तथा उत्तम किस्म का धान 2420 प्रति क्विंटल की दर से खरीदारी की जाएगी। इस मौके पर प्रखंड अध्यक्ष असित मिश्रा, उप प्रमुख मुन्ना होता, रास बिहारी साहू, पिंटू दत्त, बिस्वजीत पाल, जितेंद्र ओझा, सुमित मैती, कमल दत्त आदि उपस्थित थे।

### पुलिस ने 10 एकड़ में लगी अफीम की खेती को किया नष्ट

**चाईबासा :** सुदूरवर्ती जंगल क्षेत्र में होने वाले खेती व भंडारण रोकने को लेकर जिला प्रशासन की ओर से लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी के तहत शनिवार को बंदगांव के विभिन्न सुदूरवर्ती क्षेत्रों में अभियान चलाकर लगभग 10 एकड़ जमीन पर अफीम की खेती को नष्ट किया गया। इन इलाकों में की गई कार्रवाई प्राप्त जानकारी के अनुसार कटवा में करीब चार एकड़, टेबो थाना क्षेत्र के अंगरिया गांव में लगभग तीन एकड़ व कराईकेला थाना क्षेत्र के नवादा, सांडीसाई, उदयनारायणपुर, उलीगढ़ा, जाहिरडीह में लगभग तीन एकड़ अफीम की खेती को नष्ट किया गया। इस मौके टेबो, बंदगांव, कराईकेला थाना के अधिकारी व जवान मौजूद थे।

### पुलिस ने चलाया सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूकता अभियान

**ईचागढ़ :** शनिवार को सड़क सुरक्षा माह के तहत तिरुलडीह थाना क्षेत्र के शहीद चौक में तिरुलडीह थाना प्रभारी अलम चाँद महतो के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान लोगों के बीच हेलमेट पहनने हेतु जागरूक किया गया एवं लोगो के बीच हेलमेट वितरण कर हेलमेट पहनने हेतु प्रोत्साहित किया गया। इस दौरान तिरुलडीह थाना प्रभारी अलम चाँद महतो ने लोगों को यातायात नियमों की जानकारी दी। मालूम हो कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के उद्देश्य से जिला के सभी थाना अंतर्गत वाहन जांच एवं जागरूकता अभियान का आयोजन किया जा रहा है। इस क्रम में यातायात नियमों का उल्लंघन करनेवाले लोगों को गुलाब देकर यातायात नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। वहीं लोगों को वाहन से संबंधित सभी कागजात दुरुस्त रखने तथा वैध लाइसेंस के साथ ही वाहन का परिचालन करने एवं सड़क दुर्घटना की जानकारी मिलने पर पीड़ित की मदद करने की अपील भी की जा रही है।

# उपायुक्त ने किया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज/तालझारी :** जिला दंडाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती ने तालझारी प्रखंड के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया। सर्वप्रथम उपायुक्त के द्वारा पीएम जनमन मोबाइल मेडिकल यूनिट का निरीक्षण किया व आवश्यकता दिशा-निर्देश दिए। स्वास्थ्य केन्द्र के निरीक्षण के क्रम में स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर के उपस्थिति की रिपोर्ट एवं उपलब्ध दवाइयां की सूची का जायजा लिया। उन्होनें निर्देशित किया की उपलब्ध दवाइयों की सूची हिंदी एवं संथाली भाषाओं में डिस्प्ले के माध्यम से प्रदर्शित किया जाए। उन्होंने स्वास्थ्य केंद्र के वार्ड, शौचालय, प्रसूति गृह, दवाइयों के काउंटर, ड्रेसिंग रूम का भी निरीक्षण किए। उपायुक्त ने निमार्णाधीन डीपीएचयू का जायजा किया। उपायुक्त ने निर्माण में उपयोग की जा रही सामग्री बालू, ईट, सीमेंट की गुणवत्ता को परखा एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वहीं तालझारी प्रखंड के प्रखंड कार्यालय में उपायुक्त ने प्रखंड विकास पदाधिकारी समेत प्रखंड के सभी कर्मियों के साथ बैठक की जिनमें विभिन्न योजनाओं द्वारा दिए गए लक्ष्य एवं प्रगति के विषय में जानकारी लिए एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी पवन कुमार उपस्थित थे।

# कुकडू में लखटकिया फुटबॉल प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**ईचागढ़ :** शनिवार को कुकडू प्रखंड के चोकेगाड़िया फुटबॉल मैदान में कुकडू अंचल फुटबॉल समिति के तत्वाधान में एक दिवसीय आठ दलीय लखटकिया फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में ईचागढ़ की विधायक सविता महतो शामिल हुई। जहां फाइनल खेल से पहले विधायक सविता महतो एवं अन्य अतिथियों ने मैदान में जाकर खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। प्रतियोगिता का फाइनल मैच आदिवासी मुलवासी कुकडू अंचल बनाम एसबी कंपनी की टीम के बीच खेला गया। फाइनल मैच गोलरहित रहा। इसके बाद पेनाल्टी शूटआउट हुआ और पेनाल्टी शूटआउट भी ड्रा रहा। वहीं टॉस से एसबी कंपनी की टीम विजय हुई। विजेता एसबी कंपनी की टीम को नगद एक लाख रुपए और ट्रॉफी एवं उपविजेता आदिवासी मुलवासी कुकडू अंचल की टीम को नगद 75 हजार रुपए और एक ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया गया। मौके पर झामुमो प्रखंड अध्यक्ष इंद्रजीत महतो, समाजसेवी सुनील कुमार महतो, उप प्रमुख मों एकराम अंसारी, विधायक के आप्त सचिव सह झामुमो केंद्रीय सदस्य काबलू महतो, निरंजन महतो, सचिदानंद महतो, समीर कुमार,बिष्णु कुमार, रामभजन कुमार, कमल क्लब के अध्यक्ष रंजीत महतो, ठाकुर सिंह मुंडा,कृतिवास महतो, झूलन कुमार, मनोज कुमार मछुआ,नरोत्तम गोप, गुलाब गोप, गोपेश्वर कुमार, नरोत्तम महतो आदि उपस्थित थे।

# अपराधियों ने दिनदहाड़े युवक की गोली मारकर की हत्या

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज :** जिले में इन-दिनों पुलिस पस्त और अपराधी मस्त है,जिले में फिर एक बार अपराधियों का आतंक देखने को मिला है। जहां अपराधियों ने जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत हटिया परिसर के समीप पशुपालन विभाग के सामने एक युवक को दिनदहाड़े गोली मार कर मौत के घाट उतार दिया है। वहीं मृतक की पहचान नवल कुमार के रुप में हुई है। वारदात की क्या है वजह

वारदात की जानकारी देते हुए मृतक के चाचा गौतम कुमार ने बताया कि उनके बड़े भाई के मोबाइल पर फोन आया, और उन्हे हटिया परिसर बुलाया गया। किसी वजह से उनके बड़े भाई नहीं गये और अपने बेटे को भेज दिया। जिसके बाद अपराधियों ने इस घटना को अंजाम दिया है। और बताया कि घर के बगल के ही महेश ताती से पारिवारिक झगड़ा चल रहा है उन्होंने ही बोला था कि तुम लोगों को मरवा देंगे, अब मृतक के पिता के मोबाइल कॉल से ही पुलिस करवाई के बाद ही पता चलेगा की किसका कॉल आया था। गौतम कुमार ने बताया कि हम लोग का फूल डेकोरेशन का काम हैं और फूल डेकोरेशन के लिए बहुत सारा कॉल आया करता है। जहां फुल डेकोरेशन के काम के बहाने ही बुला कर अपराधियों ने गोली मारकर निर्मम हत्या कर दिया। मामले की जांच में जुटी पुलिस इधर घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचकर गोली लगे युवक को तत्कालीन उपचार के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वही डॉ के अनुसार मृतक नवल के बाएं सीने में गोली लगी है। आगे पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। वहीं पोस्टमार्टम डॉक्टर डीएस मोहन मुर्मू, डॉक्टर फारूक हसन, डॉक्टर चंदन कुमार ने किया। डॉक्टर ने बताया कि दाहिने तरफ सीने में गोली लगने से मौके पर मृत्यु हो गई।

# महिला ने अपने ही ससुर एवं देवर के विरुद्ध मारपीट को लेकर थाना में दिया आवेदन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज :** जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत शादीशुदा महिला ने अपने ही ससुराल पक्ष वाले पर ससुर और देवर के विरुद्ध मारपीट को लेकर जिरवाबाड़ी थाना में बीते दिनों 26 दिसंबर 2024 को लिखित आवेदन दिया था। वहीं पीड़िता आसमीन बीबी उम्र 28 वर्षीय पति मो हफीज, ग्राम श्रीरामचौकी मुस्लिम टोला के रहने वाली से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि 26 दिसंबर 2024 को शाम में 4:30 बजे किराना दुकान का सामान लेकर 5:00 बजे शाम में जब घर पहुंची तो घर से सटे दुकान खोलकर सामान रखने जा रही थी इतने में मेरे ससुर शेख सफरुद्दीन उर्फ सफ़्फो पिता स्वर्ग शेख तैमूर आकर गंदी गंदी असहनीय गाली देने लगा और मुझे दुकान में सामान रखने से रोकने लगा पीड़िता विरोध की तो हाथ में लिए डंडा से उस पर चला दिया। इतने में पीड़िता के ससुर ने पीड़िता के देवर मो निजाम को बुला लिया और दोनों मिलकर पीड़िता को जान से मारने की नीयत से लाठी से एवं लोहे के रड से दोनों मिलकर अंधाधुन

पीड़िता के सर और हाथ पर मारा एवं ससुर के कहने पर देवर पीड़िता के स्त्री लज्जा भंग करने के उद्देश्य से साड़ी खींचकर खोल दिया। जिससे पीड़िता अर्धनग्न हो गई वहीं देवर ने गलत नीयत से पीड़िता के छाती पर हाथ डाल दिया और मोबाइल से फोटो खींचा पीड़िता इज्जत बचाते हुए हल्ला की तो पति खबर पर जो बगल में काम कर रहे थे आए तो उसे भी मारा एवं मेरे गले से पांच भरी की चांदी का हार देवर ने खींच कर ले लिया और बाजार से लौटा 6 हजार रुपए भी जो छोटा पर्स में था उसे भी छीन लिया। दोनों मिलकर इतना मारा कि मेरा सर एवं हाथ में काफी चोट है जब चोट के कारण चक्कर खाकर गिर गई तो पति ने पीड़िता को सदर अस्पताल साहिबगंज में 6:00 बजे शाम को भर्ती कराया जहां इलाज किया गया।

# नौकरी केवल पैसे के लिए नहीं बल्कि समाज के उत्थान के लिए भी होनी चाहिए : डॉ. सुधाकर

- सड़क दुर्घटना में मृत्यु के बाद डॉ. सुधाकर ने की 108 एंबुलेंस सेवा की शुरुआत
- रोटरी क्लब ऑफ जमशेदपुर वेस्ट का बेल्डीह क्लब में सेमिनार आयोजित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**जमशेदपुर :** रोटरी क्लब ऑफ जमशेदपुर वेस्ट के तत्वावधान में बेल्डीह क्लब में आयोजित सेमिनार में बेंगलुरु से आए प्रसिद्ध डॉक्टर सुधाकर वाराणसी ने अपने प्रेरक अनुभव साझा किए। उन्होंने भारत में 108 इमरजेंसी एंबुलेंस सेवा की शुरूआत और इसके विस्तार की कहानी सुनाई। इस दौरान डॉक्टर सुधाकर ने गांधीजी के गीत पर आधारित बांसुरी की धुन भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम का मंच संचालन रोटरी क्लब ऑफ जमशेदपुर वेस्ट के अध्यक्ष डॉ. अमित मुखर्जी ने किया। अब तक बचाई जा चुकी है 1.5 लाख लोगों की जान

डॉ. सुधाकर ने बताया कि उनके मित्र की सड़क दुर्घटना में मृत्यु के बाद उन्होंने समाज में एंबुलेंस सेवा की आवश्यकता महसूस की। उन्होंने एक टीम बनाकर प्राइवेट कंपनियों के सहयोग से 108 एंबुलेंस सेवा की शुरूआत की। आज यह सेवा पूरे भारत में 37,000 एंबुलेंस के साथ सक्रिय है और भूटान व श्रीलंका में भी कार्यरत है। उनके प्रयास से अब तक 1.5 लाख लोगों की जान बचाई जा चुकी है।

**नौकरी समाज के उत्थान के लिए भी होनी चाहिए: डॉ. सुधाकर**

डॉ. सुधाकर, जिन्होंने आईआईटी खड़गपुर से मास्टर डिग्री और जीव विज्ञान में पीएचडी की है, ने युवाओं को देश की सेवा में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि नौकरी केवल पैसे के लिए नहीं, बल्कि समाज के उत्थान के लिए भी होनी चाहिए। अंत में धन्यवाद ज्ञापन अमरेश सिन्हा ने किया। कार्यक्रम में शहर के सभी प्रमुख रोटरी क्लब के सदस्य उपस्थित रहे।

## संक्षिप्त खबरें

### मलेरिया, डेंगू आदि बीमारियों की रोकथाम को लेकर की गई बैठक

**बरहरवा :** एनीमिया एवं रोग मुक्त भारत की परिकल्पना को लेकर शनिवार को प्रखंड मुख्यालय के सभागार में ब्लॉक टास्क फोर्स एवं बरहरवा अस्पताल प्रबंधन की संयुक्त बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख सुशीला हसदा ने किया, बैठक के दौरान मलेरिया, एवं कालाजार, की रोकथाम के साथ फाइलेरिया, तथा डेंगू एवं जापानी इंसेफेलाइटिस, तथा चाइना कलकूड़ा,जैसे जानलेवा बीमारी के संबंध में चर्चाएं की गई। बैठक के दौरान बताया गया कि मलेरिया एवं अन्य बीमारियों की रोकथाम के लिए जहां मच्छरदानी लगाकर सोना आवश्यक है, वह घर के अगल-बगल में गंदा पानी जमा नहीं होने देना है। वहीं घर के अगल-बगल की साफ सफाई एवं मच्छरदानी लगाकर सोने के फायदे के बारे में बताया गया। यह अभी बताया गया कि संभव हो सके तो रोग मुक्ति के लिए सप्ताह में एक दिन उपवास रखना चाहिए यह स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक है। इसके अलावा बैठक में अस्पताल मैनेजमेंट के कार्यों की समीक्षा की गई, साथ में अस्पताल में कैमरा लगाने एवं बिल्डिंग बनाने पर चर्चा की गई। इस मौके पर सांसद प्रतिनिधि अब्दुल कादिर, उप प्रमुख लंबू कादिर, नगर पंचायत के श्यामल दास, लोकेश कुशवाहा, डॉ ऋषभ कुमार देव, डॉ पंकज कर्मकार, डॉ नवल किशोर, अजय कुमार, दिनेश कुमार, स्वप्न मंडल, दिनेश शाह, आदि उपस्थित थे।

### सीनियर क्रिकेट लीग कम नॉक आउट टूर्नामेंट में कंबाइंड एलेवन 2 ने 7 विकेट से दर्ज की जीत

**साहिबगंज :** जिला क्रिकेट संघ के तत्वाधान में सिदो-कान्हू स्टेडियम में चल रहे सीनियर क्रिकेट लीग टूर्नामेंट में शनिवार को दी न्यूबीज बनाम कंबाइंड इलेवन टू के बीच मैच खेला गया। दी न्यूबीज ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए 22.1 ओवर में 123 रन बना कर ऑल आउट हो गई। रजनीश राज ने 38, अभिषेक पाठक ने 12 व सुमन कुमार ने 32 रन बनाए। कंबाइंड इलेवन 2 के गेंदबाज आदित्य यादव व मीर अबुल फजल ने 3-3, प्रतीक ने 2, केशव व आकाश ने 1-1 विकेट लिए। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी कंबाइंड इलेवन 2 ने 16.4 ओवर में 3 विकेट पर 127 रन बना कर मैच जीत लिया।आकाश दूबे ने 14, आदित्य यादव ने 26, अविनाश ने 10, केशव कुमार ने 36 रन बनाए। दी न्यूबीज क्लब के गेंदबाज आनंद अमृत ने 3 विकेट लिए। कंबाइंड इलेवन 2 ने 7 विकेट से जीत दर्ज की। कंबाइंड इलेवन 2 के खिलाड़ी आदित्य यादव को मैन ऑफ दी मैच घोषित किया गया। मुख्यातिथि प्रभाकर कुमार ने आदित्य को मैन ऑफ दी मैच की ट्रॉफी से पुरस्कृत किया। मैच में अंपायरिंग राकेश कुमार रोशन व प्रभाकर सिंह उर्फ गुड्डा एवं स्कोरिंग केएस सौरभ ने किया। मौके पर जिला क्रिकेट संघ सचिव अंकुर सिन्हा, टूनार्मेंट इंचार्ज मो अशफाक आलम, चंदन कुमार, आदित्य, सागर सुमन, मो जुनैद व अन्य मौजूद थे।

### सड़क सुरक्षा जागरूकता रथ को डीडीसी ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

**साहिबगंज :** उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, अपर समाहर्ता गौतम कुमार भगत, मुख्यालय डीएसपी विजय कुमार कुशवाहा, जिला आपूर्ति पदाधिकारी झुनू कुमार मिश्रा, जिला परिवहन पदाधिकारी मिथिलेश कुमार चौधरी ने संयुक्त रूप से समाहरणालय परिसर में सड़क सुरक्षा जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह जागरूकता रथ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करेगा।उप विकास आयुक्त ने कहा कि रथ के जरिए सड़क सुरक्षा एवं मोटर वाहन अधिनियम के बारे में प्रचार-प्रसार किया जाएगा। लोगों को ट्रैफिक नियमों से अवगत कराने, हेलमेट पहनने के फायदे, कार चलाते समय सीट बेल्ट का उपयोग करने, वाहन चलाते समय नशा नहीं करने, मोबाइल फोन व दूसरे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग नहीं करने, वाहन निर्धारित गति सीमा में चलाने, वाहनों को ओवरटेक नहीं करने के अलावा अन्य कई जानकारी लोगों को दी जाएगी।

### यूसिल के रक्तदान शिविर में 213 यूनिट रक्त हुआ संग्रह

**जमशेदपुर :** भारत सरकार की संस्थान यूसिल की ओर नरवा पहाड़ यूरेनियम प्रोजेक्ट के क्लब भवन में शनिवार को कंपनी की ओर से 82वां रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। जहां काफी संख्या में कंपनी कर्मियों ने रक्तदान किया एवं 213 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। इसके पूर्व कंपनी के नोडल अधिकारी एमके सिंघई, डॉक्टर पीके अधिकारी, एसआर हेंब्रम ने दीप प्रज्वलित कर रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। इस मौके पर कंपनीकर्मी प्रशांत महतो ने कहा कि यूसिल रक्तदान से एकत्रित ब्लड कंपनी कर्मियों समेत पोषक क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी रक्त की कमी होने पर या जरूरतमंदों को मुहैया कराती है। इसी उद्देश्य को लेकर यूसिल प्रबंधन हर साल रक्तदान शिविर आयोजित करता है। जिसका फायदा पूरे कोल्हान के जरूरतमंद लोगों को मिलता है। 18 सालों से रक्तदान करते आ रहे कई कंपनी कर्मी यूसिल की रक्तदान शिविर में दर्जनों ऐसे रक्तदाता मिले जो 18 सालों से रक्तदान करते आ रहे हैं, जिसमें कंपनी के कई अधिकारी भी शामिल हैं। ऐसे ही रक्तदाताओं में एक यूसिल के अधिकारी अजय महतो, जो नरवापहाड़ के शाफ्ट मैकेनिकल के सहायक अधीक्षक यांत्रिकी के पद पर पदस्थापित हैं, ने बताया कि वह बीते 18 सालों से रक्तदान करते आ रहे हैं। रक्तदान से ताजगी महसूस होती है। इसी तरह 18 सालों से रक्तदान करने वाले भैरव रजक की एक ही सोच है दूसरों की जान बचाना। ऐसे रक्तदाताओं का मानना है कि नया खून शरीर में दोबारा तैयार हो जाता है वही दूसरों की जान भी बच जाती है। जिसकी वजह से यूसिल के रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं की भीड़ लगातार हर साल बढ़ती जा रही है। कार्यक्रम को सफल बनाने में शामिल अधिकारी व उनकी टीम यूसिल की रक्तदान शिविर को सफल बनाने में कंपनी के महाप्रबंधक प्रबंधक एमके सिंघई, पीके अधिकारी एसआर हेंब्रम,डीएन सिंह,पीसी दास,हेमलता पी शिरोडकर, एनके सिन्हा, आरजी सिंह, जेएन मुर्मू, प्रशांत महतो, आनन्द महतो,एस सी महतो,बाला कृष्ण मिश्रा,गाजिया हासदा, प्रभात कुमार दास, विवेक दास, इमरान अहमद और सीआईएसएफ की ओर से ब्रजेश कुमार ने अहम योगदान योगदान दिया।

# प्रगति यात्रा के दूसरे चरण में गोपालगंज पहुंचे मुख्यमंत्री

## 138 करोड़ से 72 योजनाओं का किया शिलान्यास

**गोपालगंज।** सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रगति यात्रा के दूसरे फेज में गोपालगंज पहुंचे। इस दौरान उन्होंने विभिन्न प्रखंडों के विभिन्न विभागों की 138 करोड़ की लागत वाली 72 योजनाओं का जिले वासियों को सौगात दिया गया। सीएम ने सबसे पहले सिधवलिया प्रखंड के काशी टेंगराही स्थित आईटीआई भवन का उद्घाटन किया। इसके बाद करसघाट स्थित पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल का निरीक्षण किया। साथ पोखरे मछली का जीरा और बतख डाल कर जलाजीवन हरियाली की आगे बढ़ाया। इसके बाद मीरगंज के

लिए सड़क मार्ग से ही रवाना हुए जहां उन्होंने मीरगंज विजयीपुर बायपास का उद्घाटन करने के बाद जिला समाहरणायल सभागार में पहुंच कर समीक्षा बैठक करने के बाद वापस हैलीकॉप्टर से वापस पटना के लिए रवाना हो गए। सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का प्रगति यात्रा के दूसरा चरण की शुरूआत गोपालगंज से हुई। गोपालगंज आगमन को लेकर हेलिकॉप्टर से आने की योजना थी लेकिन अत्यधिक घने कोहरे के कारण सीएम का आगमन है। सड़क मार्ग से हुआ और उन्होंने

अपने यात्रा को आगे बढ़ाते हुए काशी टेंगराही स्थित 21 करोड़ 60 लाख के लागत से बनकर तैयार ITI भवन का उद्घाटन कर छात्र छात्राओं को सौगात दिए। साथ ही उन्होंने कुल 61 योजनाओं का उद्घाटन किया। इसके अलावा 3 करोड़ 51 लाख की राशि से बनने वाले जिला उत्पाद कार्यालय, चनावे जेल में एक करोड़ 62 लाख की लागत से बन रहे एक पुरुष कक्षपाल बैरक और एक करोड़ 39 लाख की लागत से बन रहे। महिला कक्षपाल बैरक समेत अन्य निर्माण कार्य शामिल हैं। कई नवनिर्मित पंचायत सरकार भवन का भी उद्घाटन हुअ। जिले के अलग-अलग गांवों में तालाब, स्वास्थ्य केंद्र, स्कूल तथा अन्य भवनों के जीर्णोद्धार का उद्घाटन हुआ। 63 लाख की लागत से हुए 13 कार्यों का उद्घाटन किया वहीं सिधवलिया प्रखंड के करसघाट पकड़ी टोला में अलग-अलग योजनाओं के तहत 63 लाख की लागत से हुए 13 कार्यों का उद्घाटन हुआ।
इसमें पोखर, पशु शेड, बत्तख शेड, बकरी शेड, रनिंग ट्रैक, चिल्ड्रेन पार्क, पुस्तकालय, स्ट्रीट लाइट,
आंगनबाड़ी केंद्र आदि शामिल हैं।

## शताब्दी समारोह के अवसर पर 24 फरवरी को 100 स्टूडेंट्स को मिलेगा गोल्ड मेडल

**पटना।** राज्य का सबसे बड़ा मेडिकल कॉलेज अस्पताल पीएमसीएच 25 फरवरी को 100 वर्ष का हो जाएगा। इस बार स्थापना दिवस के मौके पर कॉलेज शताब्दी समारोह मनाने जा रहा है। 100 साल पूरा होने पर कॉलेज में कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इसमें 100 छात्र-छात्राओं को गोल्ड मेडल दिया जाएगा। इसमें यूजी में 72 तो पीजी के 28 छात्र-छात्राओं को गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया जाएगा। यूजी में छात्रों से अधिक छात्राओं ने गोल्ड मेडल पर कब्जा जमाया है। छात्राओं को 39 गोल्ड तो छात्रों को 33 गोल्ड मेडल मिले हैं। इसकी जानकारी को लेकर शुक्रवार को पीएमसीएच एलुमनी एसोसिएशन की ओर से एक प्रेस कॉन्फ्रेंस किया गया। एसोसिएशन के कन्वेनर डॉ. सच्चिदानंद कुमार ने इसकी पुष्टि की। कॉन्फ्रेंस में एसोसिएशन के सचिव डॉ. नरेंद्र प्रताप सिंह और कर्नल डॉ. अंसारी भी मौजूद थे। 28 पोस्ट ग्रेजुएट के छात्रों को गोल्ड मेडल : 28 पोस्ट ग्रेजुएट के छात्रों को गोल्ड मेडल दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि स्थापना दिवस के पूर्व संध्या पर यानी 24 फरवरी को संबंधित छात्रों को गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया जाएगा।। इस कार्यक्रम में विदेशों में रह रहे करीब दो हजार से अधिक पूर्ववर्ती छात्रों को आमंत्रित किया गया है। साथ ही उन्होंने कहा कि कार्यक्रम ज्ञान भवन में होंगे।

# स्कूल में पढ़ाई छोड़ अलाव तापते नजर आए शिक्षक

**बक्सर।** में ठंड के मौसम में बच्चों के लिए स्कूल का समय बदल गया है। करहंसी उच्च स्कूल में शनिवार को शिक्षक कक्षाओं को छोड़कर अलाव जलाकर आग तापते नजर आए। बच्चे भी पढ़ाई छोड़ इधर उधर घूमते नजर आए है। जिसका वीडियो बना कर किसी ने सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। ग्रामीणों के मुताबिक, सुबह 11:30 बजे स्कूल परिसर में शिक्षक-शिक्षिकाएं अलाव के पास बैठे थे, जबकि बच्चे परिसर और उसके बाहर घूमते देखे गए। जब ग्रामीणों ने शिक्षकों से सवाल किया, तो उन्हें फटकार लगाकर भगा दिया गया। ग्रामीणों ने जताई नाराजग ग्रामीणों का कहना है कि बच्चों की पढ़ाई के प्रति इस तरह की लापरवाही

अनुचित है। उन्होंने कहा, अगर ठंड के मौसम में स्कूल खोले गए हैं, तो शिक्षकों को पढ़ाई करानी चाहिए। लेकिन यहां बच्चे अनदेखा किए जा रहे हैं, और शिक्षक खुद को आराम देने में लगे हैं। ग्रामीणों ने बताया कि जब उन्होंने शिक्षकों से बातचीत की कोशिश की, तो शिक्षकों ने नाराजगी जाहिर की और उन्हें धमकाकर वहां से भगा दिया। रशिक्षकों के इस रवैये से हम हैरान हैं। उनके पास बच्चों की जिम्मेदारी है, लेकिन वे इसे गंभीरता से नहीं ले रहे। इस मामले में जिला शिक्षा पदाधिकारी अमरेंद्र पांडेय ने मीटिंग में होने का हवाला देते हुए फिलहाल कोई टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। ग्रामीणों और अभिभावकों को उम्मीद है कि जिला प्रशासन इस मामले में सख्त कदम उठाएगा। जिलाधिकारी अंशुल अग्रवाल और शिक्षा विभाग शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार के लिए लगातार प्रयासरत हैं। उम्मीद की जा रही है कि इस मामले में उचित जांच होगी और दोषी शिक्षकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। ग्रामीणों ने प्रशासन से अपील की है कि स्कूलों में शैक्षणिक माहौल सुनिश्चित करने के लिए तुरंत कदम उठाया जाएं।

# फोटो जर्नलिस्ट नीलांबर यादव के घर पहुंचे सांसद पप्पू यादव

## 50 हजार की आर्थिक मदद दीः पत्नी को जॉब दिलाने की कही बात

**पूर्णिया।** सांसद पप्पू यादव शनिवार को मरहूम फोटो जर्नलिस्ट नीलांबर यादव के घर पहुंचे। उन्होंने पीड़ित परिवार, उनकी पत्नी और बच्चों से बातचीत की। हत्या की वजहों को करीब से जानकर न्याय का भरोसा दिया। साथ ही शोकाकुल परिजनों को 50 हजार की आर्थिक मदद दी। साथ ही नीलांबर यादव की पत्नी को जॉब दिलाने की भी बात कही। परिजनों से मुलाकात में सांसद ने कहा कि वे हर परिस्थिति में परिवार के साथ हैं। फोटो जर्नलिस्ट नीलांबर यादव उनके लिए छोटे भाई जैसे थे। वे जिंदादिल और मृदुभाषी थे। वे पत्रकार होने के साथ ही सामाजिक व्यक्ति भी थे। वे समाज हित में सदैव तत्पर रहे। 27 दिसंबर की रात फोटो जर्नलिस्ट नीलांबर यादव की घर बुलाकर हत्या कर दी गई थी। पुलिस ने इस मामले में आरोपी निशु यादव के चाचा प्रमोद यादव को गिरफ्तार किया है। वारदात में शामिल अन्य आरोपी भी जल्द ही पकड़े जाएंगे। कहा कि उन्होंने इस संबंध में एसपी कार्तिकेय शर्मा से फोन पर बातचीत की है। एसपी ने भरोसा दिया है कि जल्द ही सभी आरोपी सलाखों के पीछे होंगे। आगे सांसद ने कहा कि जिस वक्त उन्हें फोटो जर्नलिस्ट की मौत की जानकारी मिली, वे बिहार से बाहर थे। उनकी हत्या की बात सुनकर बेहद दुख हुआ। इसके ठीक बाद ही एसपी से फोन पर बात कर जल्द से जल्द सभी आरोपियों की गिरफ्तारी की बात कही है। पूर्णिया लौटते ही वे शोकाकुल परिवार से मिलने पहुंचे और उनका ढाढ़स बढ़ाया। दिवगंत फोटो जर्नलिस्ट की पत्नी को 50 हजार की आर्थिक मदद दी गई है। हर परिस्थिति में वे परिवार के साथ हैं। आगे फोटो जर्नलिस्ट की बहन की शादी होनी है, वे बहन की शादी में भी आर्थिक सहयोग करेंगे। साथ ही निलांबर यादव की पत्नी को जॉब दिलवाने की भी बात कही है। बता दें कि 27 दिसंबर की रात फोटो जर्नलिस्ट नीलांबर यादव की घर से बाहर विवाद सुलझाने का बुलाकर हत्या कर दी गई थी। पड़ोस में रहने वाले बदमाश निशु यादव समेत 6 लोगों पर मर्डर का आरोप है। जिसने हत्या की उसके ऊपर पहले से ही कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। मुख्य आरोपी और उसके परिवार में शामिल 5 लोग वारदात की रात से फरार हैं। जिसकी गिरफ्तारी अब तक नहीं हो सकी है।
उनकी गिरफ्तारी न होने से पूरा परिवार असुरक्षित महसूस कर रहा है।

## समस्तीपुर में जिला परिषद अध्यक्ष पर लगा अविश्वास

### सदस्य बोले- विकास कार्यों में रुचि नहीं लेते 3 साल बाद भी योजनाओं के कार्यान्वयन में असफल

**समस्तीपुर।** के जिला परिषद अध्यक्ष खुशबू कुमारी पर सदस्यों ने अविश्वास लगाया है। 14 जिला परिषद सदस्यों द्वारा एक आवेदन जिला परिषद कार्यालय में शनिवार को जमा कराई गई है। सदस्यों ने जिला परिषद अध्यक्ष पर विकास कार्य में रुचि नहीं लेने का आरोप लगाया है। जिला परिषद सदस्य ममता कुमारी, अरुण कुमार, उर्मिला देवी, अनीता कुमारी, रिंकी कुमारी, मंजू देवी, किरण कुमारी, लक्ष्मी कुमारी आदि द्वारा सौंपे गए ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि लगभग तीन साल पूरा होने के बाद भी जिला परिषद समस्तीपुर के संकल्पना और योजनाओं के कार्यान्वयन में असफल रही। जिला परिषद सदस्यों के साथ मंत्रणा नहीं करती हैं। मनमाने ढंग से कार्य करने, अपने कार्यालय प्रकोष्ठ में साल में केवल एक दो बार ही 26 जनवरी और 15 अगस्त पर आने का आरोप लगाया है। इसके अलावा लोगों ने यह भी आरोप लगाया है कि योजना संचालन में वह मनमानी करती हैं। आरोप यह भी है कि जिला परिषद समस्तीपुर के वित्तीय और प्रशासनिक मामलों पर नियंत्रण नहीं रख रही। अध्यक्ष

के रूप में निष्ठा पूर्ण अपने कर्तव्य के निर्वहन में वह नहीं रहती है। इसके साथ ही सदस्यों ने यह भी आरोप लगाया है कि जिला परिषद में योजनाओं की राशि पड़ी हुई है, लेकिन विकास कार्य पर खर्च नहीं किया जा रहा है। जिला परिषद सदस्य को जानकारी भी नहीं होती है। उनके क्षेत्र की योजनाओं के नाम पर राशि का उठाव तक कर लिया गया है। सदस्यों द्वारा अविश्वास की कॉपी डीएम के अलावा डीडीसी और जिला परिषद अध्यक्ष को भी दी गई है। जिला परिषद अध्यक्ष खुशबू कुमारी ने आरोपी को निराधार बताया है। उन्होंने कहा है कि दबाव की राजनीति के तहत उन पर अविश्वास के लिए आवेदन दिया गया है।

## संक्षिप्त डायरी

### ईंट भट्ठी के मुंशी की गला रेतकर हत्या

**गया।** जिले के डोभी थाना क्षेत्र के ग्राम पिरासिन में शनिवार सुबह ईंट भट्ठे पर काम करने वाले मुंशी की हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान रामवृक्ष यादव (55) के रूप में की गई है। जिनकी हत्या धारदार हथियार से गला रेतकर की गई है।

मृतक का शव कमरे के दरवाजे पर पड़ा मिला। लोगों ने बताया कि रामवृक्ष यादव अपने बहनोई के ईंट भट्ठे पर काम करते थे और भट्ठे में बने कमरे में ही रहते थे। शनिवार की सुबह जब लोग भट्ठे के पास से जा रहे थे तो कमरे के गेट पर शव देखा। जिसके बाद इसकी सूचना पुलिस को दी गई। मृतक का गला किसी धारदार हथियार से रेता गया है। घटना की सूचना मिलते डोभी थानाध्यक्ष मुकेश कुमार अपने दलबल के साथ मौके पर पहुंचे। जहां इलाके को घेरकर सुरक्षित किया। मामले की जांच के लिए घटनास्थल पर डॉग स्क्वाड, फॉरेंसिक टीम और तकनीकी विशेषज्ञों को बुलाया गया। प्रारंभिक जांच में कई सुराग मिले। जिसके बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए मगध मेडिकल हॉस्पिटल, गया भेजा गया है। गया के वरीय पुलिस अधीक्षक ने मामले की गंभीरता को देखते हुए नगर पुलिस अधीक्षक, गया और अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, शेरघाटी-2 के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की है। पुलिस अधीक्षक रामानंद ने कहा कि टीम आसूचना संकलन और तकनीकी अनुसंधान में लगी हुई है। अपराधियों की पहचान जल्दी हो जाएगी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। डोभी थाने में इस घटना के संबंध में केस दर्ज कर कार्रवाई जारी है। बता दें कि इस निर्मम हत्या से गांव और आसपास के इलाकों में भय और गुस्से का माहौल बन गया है। स्थानीय लोग इस घटना के बारे में कई तरह के कयास लगा रहे हैं और पुलिस से आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की उम्मीद कर रहे हैं।

### रिटायर्ड नर्स की गैंगरेप के बाद हत्या

**भागलपुर।** में 72 साल की रिटायर्ड नर्स की गैंगरेप के बाद हत्या कर दी गई। महिला के भांजे राजीव रंजन (65) ने अपने 4 दोस्तों के साथ पहले गैंगरेप किया फिर हत्या कर दी। पहचान छिपाने के लिए सभी ने सिर और धड़ को अलग कर दिया। दोनों को अलग-अलग जगहों पर फेंका था। पुलिस ने सिर और धड़ बरामद कर लिया है। पुलिस ने इस मामले में सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में भांजे ने बताया कि 'मामी के साथ मिलकर उसने कई लोगों से नौकरी के नाम पर पैसे लिए थे। 5 से 6 लाख रुपए को लेकर मामी से विवाद था, इसलिए वारदात को अंजाम दिया।' मामला सुल्तानगंज थाना इलाके का है। सिटी एसपी शुभांक मिश्रा ने बताया 'महिला के पति ने 30 दिसंबर को अपहरण का मामला दर्ज कराया था। इसमें कहा गया था कि महिला 27 दिसंबर को जमुई जाने के लिए निकली थी, लेकिन वापस नहीं लौटी। पुलिस ने तकनीकी जांच और मोबाइल लोकेशन के आधार पर अपराधियों को पकड़ा।''2 जनवरी को महिला का शव बांका के कुमरैल घाट से बरामद हुआ था। पुलिस ने आरोपियों से पूछताछ की। आरोपियों ने बताया कि हत्या 27 दिसंबर की रात को हुई थी।' महिला के अपहरण का आवेदन के बाद सीनियर एसपी ने इस मामले में सिटी एसपी की निगरानी में जांच टीम गठित की। इसके बाद तकनीकी टीम ने मोबाइल नेटवर्क और लोकेशन को खंगाला। मृतका का सिम राजीव के मोबाइल में ही लगा था। इसी आधार पर उसकी गिरफ्तारी की गई। फिर उसकी निशानदेही पर अन्य आरोपियों को पकड़ा गया। भांजे के फोन में लगा था मामी का सिम हत्या के मामले में पुलिस ने बांका के बेलहर थाना क्षेत्र के बिसनपुर से राजीव रंजन, दिलीप गिरी उर्फ कांकटा उर्फ बाबा, कुमरैल से श्रवण कुमार, अजय कुमार मांझी और रजौन थाना क्षेत्र के डुमरिया के संतोष यादव को गिरफ्तार किया है। आरोपी राजीव अपनी मामी का सिम कार्ड इस्तेमाल कर रहा था। उसके पास से पुलिस ने मृतका के कपड़े, साड़ी, स्कार्फ, स्वेटर समेत घटना में इस्तेमाल किया गया चाकू और अन्य सामान भी बरामद किया गया है।

### राज्य के किसी कोने से पटना साढ़े तीन घंटे में आ सकेंगे

**पटना।** राज्य के किसी कोने से साढ़े तीन घंटे में पटना पहुंचने का नया लक्ष्य सरकार ने तय किया है। उपमुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने शुक्रवार को कहा कि अगले 3 साल में (वर्ष 2027 तक) यह लक्ष्य पूरा करेंगे। राज्य के किसी कोने से पटना 5 घंटे में पहुंचाने का मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा तय किया गया लक्ष्य इस साल पूरा हो जाएगा। इसके लए पथ निर्माण विभाग नेशनल हाईवे और स्टेट हाईवे की निमार्णाधीन योजनाओं को तेजी से पूरा करने में लगा है।

## कॉल रिसीव नहीं करने पर दोस्तों ने मारी गोली, दो किशोर पकड़े गए हथियार बरामद

**पटना।** दोस्तों ने ही राजा कुमार को पैर में गोली मार कर जख्मी कर दिया। घटना शुक्रवार को दिन में करीब साढ़े ग्यारह बजे खाजेकलां थाना क्षेत्र के फौजदारी कुआं मोहल्ला में हुई। पुलिस ने आरोपी दो नाबालिग लड़कों को गिरफ्तार कर हथियार बरामद कर लिया है। फौजदारी कुआं मोहल्ला जख्मी राजा ने

बताया कि दोस्तों मोबाइल पर कॉल किया था। कॉल रिसीव नहीं किए जाने की वजह से दोस्त नाराज थे। कर रहे थे इंतजार दो दोस्त घर से कुछ दूरी पर उसके आने का इंतजार कर रहे थे। जैसे ही घर से बाहर निकला देखते ही दोस्तों ने गोली चला दी। गोली उसके पैर में लगी। डीएसपी डॉ गौरव कुमार ने बताया कि घटना की सूचना मिलने पर गठित टीम ने मात्र दो घंटे के अंदर घटना में शामिल दो किशोरों को पकड़ लिया। थानाध्यक्ष प्रभात रंजन सक्सेना ने बताया कि पकड़े गये किशोर की निशानदेही पर देसी कट्टा भी बरामद कर लिया गया है। पुलिस को छानबीन में पता चला कि एक किशोर के खिलाफ पूर्व में खाजेकलां थाना में दो कांड अंकित हैं। इधर, जख्मी का उपचार चल रहा है। वह खतरे से बाहर है।

# आरोपी को पकड़ने गई पुलिस टीम पर हमला

## ----दरभंगा में बच्चों को आगे कर भीड़ ने बरसाए पत्थर-----

**दरभंगा।** में शनिवार को 2 आरोपियों को पकड़ने गई लहेरियासराय थाने की पुलिस टीम पर भीड़ ने हमला कर दिया। पुलिस वालों पर लाठी-डंडे चलाए गए। पत्थर फेंके गए। हथियार छीनने की भी कोशिश की गई। पुलिस वालों ने भागकर अपनी जान बचाई। पुलिस पर ये हमला अभंडा गांव में हुआ है। पुलिस एक आरोपी जितेंद्र यादव को गिरफ्तार करने सैदनगर अभंडा गांव पहुंची थी। जितेंद्र दहेज उत्पीड़न मामले में फरार चल रहा था। पुलिस फैमिली कोर्ट से वारंट और कुर्की का आदेश लेकर गई थी। टीम जितेंद्र को गिरफ्तार कर के लौट रही थी। इसी दौरान ग्रामीणों ने

पुलिस टीम को घेर लिया और जितेंद्र को छुड़ाकर ले गए। इसके बाद सड़क पर आगजनी कर नारेबाजी करने लगे। घटना की सूचना मिलने के बाद सदर एसडीपीओ अमित कुमार और लहेरियासराय थानाध्यक्ष मौके पर पहुंचे। इस दौरान भी लगभग 30 मिनट तक पुलिस और लोगों के बीच पथराव और झड़प हुई। कभी पुलिस लोगों को खदेड़ रही थी, तो कभी लोग पथराव करते हुए पुलिस को। हमले की सूचना पर लहेरियासराय थाने की पुलिस समेत

बहादुरपुर थाना, विश्वविद्यालय थाना, बिशनपुर थाना और बेंता थाने की पुलिस मौके पर पहुंच गई। 5 थानों की पुलिस और दंगा नियंत्रण बल को तैनात कर पुलिस ने जितेंद्र यादव, उसके भाई और पिता को गिरफ्तार किया। पथराव मामले में भी नाबालिग समेत पांच को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है दरभंगा सदर SDPO अमित कुमार ने बताया कि 'लहरिया सराय थाने की पुलिस दो आरोपियों को गिरफ्तार करने आई थी। पुलिस के आने पर आरोपी और उनके परिजन की ओर से हमला किया गया। इसमें कुछ पुलिसकर्मी घायल हो गए, जिन्हें तत्काल इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। इसके बाद पुलिस की टीम दोबारा गिरफ्तार करने और हमला करने वाले लोगों को पकड़ने के लिए आई, लेकिन एक बार फिर से पुलिस पर हमला कर दिया गया। अमित कुमार ने बताया कि 'आरोपियों, उनके परिजन और स्थानीय लोगों की ओर से सड़क पर टायर जलाकर सड़क जाम किया गया। इसके बाद पुलिस पर पथराव किया गया, लेकिन फिलहाल, स्थिति पूरी तरह से हमारे नियंत्रण में है।

# क्या आप जानते हैं?

भारत का सबसे बड़ा हीरा ग्रेट मुगल जब 1650 में गोलकुंडा की खान से निकला तो इसका वजन 787 कैरेट था।

पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार 1965 में मलयालम कवि गोविन्द शंकर कुरुप को दिया गया था।

घर घर में गाई जाने वाली आरती ओम जय जगदीश हरे के रचयिता पं. श्रद्धाराम शर्मा थे।

राजस्थान में सुंधा माता नामक एक ऐसा पर्वत है, जहां खंडित मूर्तियों को रखना पवित्र माना जाता है।

बाबर अपने समय की सामान्य रूप से बोली जाने वाली भाषा फारसी में प्रवीण था, पर उसकी मातृभाषा चागताई थी और उसने अपनी आत्मकथा बाबरनामा चागताई में ही लिखी।

याहू डॉट कॉम का नाम पहले जेरीज गॉइड टू वर्ल्ड वाइड वेब था अप्रैल 1994 में इसे बदल कर याहू डॉट कॉम कर दिया गया।

आलू की खेती में विश्व में तीसरा स्थान रखने वाला भारत 16वीं शती से पहले इसके विषय में जानता तक नहीं था।

नीदरलैंड के लोग दुनिया में सबसे ऊंचे होते हैं। यहां पुरुषों की औसत ऊंचाई पांच फुट साढ़े ग्यारह इंच है, लेकिन दक्षिणी नीदरलैंड में यह औसत एक इंच कम है।

यदि आप ध्वनि की गति से तेज चलने वाले विमान कांकॉर्ड में लंदन से न्यूयॉर्क के लिए चलें तो वहां उस समय से भी दो घंटे पहले पहुंच जाएंगे, जब आप चले थे।

विश्व में पक्षियों की 8650 प्रजातियां हैं, जिसमें से 1230 भारत में पाई जाती हैं।

सदाबहार पौधा बारूद जैसे विस्फोटक को पचाकर उन्हें निर्मल कर देता है।

कुम्हड़े की प्रजाति मैक्सिमा का वजन 34 किलोग्राम से भी अधिक होता है।

मुगल उद्यान, दिल्ली में अकेले गुलाब की ही 250 से अधिक प्रजातियां हैं।

पुरी के जगन्नाथ मंदिर में प्रतिदिन इतना प्रसाद बंटता है कि 500 रसोइए और 300 सहयोगी रोज काम करते हैं।

मध्यप्रदेश के सांवेर गांव में स्थित हनुमान जी का मंदिर उलटे हनुमान के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें स्थापित मूर्ति का सिर नीचे और पैर ऊपर हैं।

कालिदास के गीतिकाव्य ऋतुसंहार के छह सर्गों में उत्तर भारत की छह ऋतुओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।

बिच्छू की लगभग 2000 जातियां होती हैं, जो न्यूजीलैंड व अंटार्कटिक छोड़कर विश्व के सभी भागों में पाई जाती हैं।

कहानी

# घर का हैप्पी बर्थडे

'हां घर को भी।' कहती हुई मम्मी जल्दी से किचन में चली गई। थोड़ी देर में ही वहां से सूजी भूनने की खुशबू आने लगी। पापा ने फटाफट काजू काटे। इलायची पीसी। नारियल कद्दूकस किया। हलवा बनाने के बाद मम्मी ने उसे प्लेट में पलटकर कलछी से गोल केक जैसा बना दिया। फिर एक छोटी मोमबत्ती भी उस पर लगा दी।

रात हो गई थी। मम्मी ने कहा, 'अंतरिक्ष, चलो दूध पिओ।' फिर कुछ याद करते पापा से बोलीं, 'अरे, मैं तो भूल ही गई। आज हमें इस घर में आए पूरे तीन साल हो गए।'

छोटे से अंतरिक्ष ने पूछा, 'तीन साल, क्या?'

'तीन साल माने क्या?' मम्मी ने दोहराया। वह कुछ बोलतीं, उससे पहले ही पापा ने कहा, 'तीन साल मतलब, आज हमारा घर तीन साल का हो गया। जैसे तुम पिछले महीने पांच साल के हुए थे न।'

'तो आपने तो मेरा हैप्पी बर्थ डे मनाया था।'

'हां, हां बिल्कुल सही कहा। आज घर का हैप्पी बर्थडे है।' मम्मी खुश होते हुए बोलीं।

'तो उसका बर्थ डे केक कहां है। और उसके दोस्त क्यों नहीं आए।'

'अरे हां, घर का बर्थडे तो उसके दोस्त, आसपास के दूसरे घर ही मना सकते हैं। बुलाओ भाई, दूसरे घरों को बुलाओ। फिर जब उनका बर्थडे होगा तो हमारा घर भी चलकर वहां जाएगा।' पापा बोले और खूब हंसे।

'लेकिन अंतरिक्ष, हम और तुम भी तो घर के दोस्त हैं। है कि नहीं?' मम्मी ने उसका खाली किया कप सिंक में रखते पूछा।

'यस, घर इज माई फ्रेंड।' अंतरिक्ष बोला तो पापा बोले, 'चलो घर को हैप्पी बर्थडे विश करते हैं।'

'नहीं, पहले केक लाओ। उस पर कैंडल लगाओ और गुब्बारे भी।'

'हां भई, अगर घर का बर्थडे ठीक से नहीं मनाया तो घर बुरा मान जाएगा। नाराज हो जाएगा। मगर इस वक्त केक लाएं कहां से। दुकानें तो बंद हो गई होंगी और ऑन लाइन अगर ऑर्डर करें तो आएगा कब।' पापा ने कहा।

उनकी बात सुनकर मम्मी ने अंतरिक्ष से पूछा, 'अंतरिक्ष क्या हलवा केक से घर का हैप्पी बर्थ-डे मनाएं!'

'हलवा केक।'

'हां, खाकर देखना बहुत मजा आएगा।'

'घर को भी।' अंतरिक्ष ने अपनी फुटबॉल में एक किक मारते हुए कहा।

'हां घर को भी।' कहती हुई मम्मी जल्दी से किचन में चली गई। थोड़ी देर में ही वहां से सूजी भूनने की खुशबू आने लगी। पापा ने फटाफट काजू काटे। इलायची पीसी। नारियल कद्दूकस किया।

हलवा बनाने के बाद मम्मी ने उसे प्लेट में पलटकर कलछी से गोल केक जैसा बना दिया। फिर एक छोटी मोमबत्ती भी उस पर लगा दी।

यह देख अंतरिक्ष बोला, 'आप तो कह रही थीं, घर का थर्ड बर्थडे है।'

'तो कोई बात नहीं। दो कैंडल घर के अगले बर्थ डे पर लगा देंगे।' पापा की बात सुनकर अंतरिक्ष खुश हो गया। वह गाने लगा, 'हैप्पी बर्थ डे माई डियर होम। हैप्पी बर्थ डे टू यू।' पापा, मम्मी ने भी साथ दिया उसका। फिर अंतरिक्ष ने हलवा केक काटा और घर को खिलाने आगे बढ़ा। तो मम्मी ने उसे रोका, 'नो अंतरिक्ष, दीवार पर कुछ मत लगाओ। गंदी हो जाएगी।'

'तो फिर घर केक कैसे खाएगा।' अंतरिक्ष ने पूछा।

'कैसे खाएगा घर?' पापा ने मम्मी से पूछा।

'ऐसा करते हैं अंतरिक्ष, घर का एक सुंदर इलस्ट्रेशन बनाओ। उसी को खिला देंगे तो घर खा लेगा।' मम्मी ने उसे फुसलाया।

'नो, वह भूखा रहेगा। इलस्ट्रेशन कुछ नहीं खा सकता, पानी भी नहीं पी सकता, यह आपने ही तो बताया था उस दिन।'

मम्मी को याद आया कि एक दिन जब अंतरिक्ष ने चिड़िया बनाई थी और उसे पानी पिलाने की कोशिश कर रहा था तो उन्होंने ही कहा था कि चित्र कुछ नहीं खा-पी सकते।

'कोई बात नहीं, करने दो न उसे। दीवार को कल साफ कर देंगे।' पापा ने पास जाकर मम्मी को धीरे से समझाया तो मम्मी ने भी हां कर दी। अंतरिक्ष ने दीवार पर हलवा चिपकाया फिर पूछा, 'टेस्टी है न।' 'घर तो बताएगा ही पहले तुम खाकर बताओ।' मम्मी की बात सुनकर अंतरिक्ष ने खाया और हां में सिर हिलाया। फिर चम्मच से खाने लगा। वह बार-बार हलवा लगी दीवार को देखता जाता कि घर ने अभी हलवा खाया है कि नहीं।

मम्मी और पापा आज बहुत खुश भी हो रहे थे। घर के हैप्पी बर्थडे के बहाने उन्होंने अंतरिक्ष को हलवा खिला दिया था। उसे हलवा बिल्कुल पसंद नहीं था। हो सकता है कि हलवे को हलवा केक कहने से वह आगे भी खाने लगे।

उस रात सोते हुए भी अंतरिक्ष मुस्करा रहा था, जैसे सपने में भी वह अपने घर से बातचीत कर रहा हो। उसका जन्मदिन मना रहा हो। दूर बैठे दादा-दादी ने जब घर के जन्मदिन मनाने के वीडियो को देखा तो वे बहुत खुश हुए। अगले दिन जब अंतरिक्ष सोकर उठा तो दौड़ते हुए मम्मी के पास गया, 'मम्मा देखो, घर ने हलवा केक खा लिया।' उसने दीवार की तरफ इशारा किया। वहां हलवे का नामोनिशान नहीं था। अंतरिक्ष को नहीं पता था कि उसके सो जाने के बाद पापा ने दीवार साफ जो कर दी थी।

## गुब्बारों के बारे में मजेदार बातें

गुब्बारे का अविष्कार साल 1824 में महान वैज्ञानिक प्रोफेसर माइकल फैराडे ने किया था।

ज्यादातर पार्टी में इस्तेमाल होने वाले गुब्बारे रबड़ के पेड़ो से मिलने वाले लेक्स से बनते हैं। इनमें सामान्य हवा या हीलियम जैसी कोई गैस भरी जाती है।

लेटेक्स से बने गुब्बारे पूरी तरह से ईको फ्रेंडली होते हैं। इन्हें बनाने के लिए पेड़ों को काटा नहीं जाता। लेटेक्स को पेड़ के तने से इकट्ठा किया जाता है। इससे पेड़ को कोई नुकसान नहीं होता। रबड़ के पेड़ आम तौर पर वर्षा वनों में उगते हैं। रबड़ का एक पेड़ तकरीबन 40 साल तक लेटेक्स का उत्पादन कर सकता है।

एक बार हवा भरकर फुलाए जाने के बाद गुब्बारे अपना वास्तविक आकार एक हफ्ते तक बनाए रख सकते हैं।

गुब्बारा अचानक फटने पर उसकी तेज आवाज से डरने वाले तुम अकेले नहीं हो। इससे ज्यादातर लोग डरते हैं। जैसे ही गुब्बारे में कोई छेद होता है, वैसे ही उसके अंदर भरी हवा एक झटके के साथ बाहर यानी कम दबाव वाले क्षेत्र की तरफ निकलती है, जिससे यह आवाज आती है। हीलियम से बने गुब्बारे हवा में तैरते हैं, क्योंकि हीलियम हवा से कहीं ज्यादा हल्की होती है।

# कुत्ते की तरह भौंकती है यह गिलहरी

प्रेरी डॉग

तुम सोच रहे होगे कि दिखने में तो यह गिलहरी जैसी है, फिर इसका नाम प्रेरी डॉग क्यों है? वो इसलिए, क्योंकि प्रेरी डॉग कुत्ते की तरह भौंक सकते हैं। किसी खतरे का अंदेशा होने पर ये भौंकना शुरू कर देते हैं, जिससे उनके दूसरे साथी सतर्क हो जाते हैं। उत्तरी अमेरिका के घास के मैदानों के नीचे सुरंग बनाकर रहने वाले इन जीवों को पारिवारिक जीव कहना गलत नहीं होगा। जानते हो क्यों, क्योंकि प्रेरी डॉग समूह में रहते हैं, एक दूसरे के साथ खाना बांटकर खाते हैं, एक दूसरे की साफ-सफाई करते हैं और जब एक-दूसरे से मिलते हैं तो नाक से नाक मिलाकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं, जैसे तुम अपने दोस्तों से मिलने पर हैंडशेक करते हो, बिल्कुल वैसे ही।

हमिंग बर्ड

यह दुनिया का सबसे छोटा पक्षी है। 25 से 3 इंच की लम्बाई वाले इस पक्षी की दुनिया में लगभग 328 प्रजातियां हैं। हमिंग बर्ड दुनिया में इकलौता ऐसा पक्षी है, जो सीधी-उल्टी, दाएं-बाएं किसी भी दिशा में उड़ सकता है। एक सेकंड में 100 बार अपने पंख फड़फड़ाने वाली यह पक्षी 25-30 मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ सकता है। ये अपनी जिंदगी का 15 फीसदी समय खाना खाने में बिताते हैं और एक दिन में करीब 1000-1500 फूलों का रस पीते है।

नेकेड मोल रैट

यह पूर्वी अफ्रीका के मरुस्थल में जमीन के नीचे रहने वाला एक जीव है, जिसे मरुस्थलीय पपी भी कहते हैं, जो देखने में चूहे या छछूंदर की तरह होता है। नेकेड मोल रैट की खास बात यह है कि इसकी आंखों की रोशनी बहुत कम होती है, फिर भी यह रात के अंधेरे में जितनी तेजी से सीधी दिशा में दौड़ सकता है, उतनी ही तेजी से उलटी दिशा में भी दौड़ सकता है।

लायरबर्ड

तुम्हें भी किसी चीज की आवाज की नकल उतारना पसंद होगा, पर कोई और भी है, जिसे ऐसा करना पसंद है। वह है ऑस्ट्रेलिया की लायरबर्ड। यह पक्षी की एक ऐसी प्रजाति है, जो आवाजों की मिमिक्री करती है। यह अन्य पक्षियों के गाने की आवाजों के साथ-साथ कैमरे के शटर, वाद्य यंत्र, कार का अलार्म, खिलौने वाली बंदूक की आवाजों के अलावा निर्माण कार्य में इस्तेमाल होने वाले औजारों की आवाज की भी हूबहू नकल उतार सकती है।

बैसलिस्क लिजर्ड

बैसलिस्क अमेरिका में पायी जाने वाली छिपकली/गिरगिट की एक प्रजाति है। लम्बी पूंछ व पीठ पर उभरी हुई जिगजैग किनारी वाली इस लिजर्ड की खासियत है कि यह पानी पर चलती है। खतरे से बचने के लिए यह लिजर्ड अपने पिछले पैरों व पूंछ की सहायता से पानी के ऊपर लगभग 5 फुट प्रति सेकंड की रफ्तार से दौड़ सकती है। और शायद इसीलिए ही इसे 'जीसस क्राइस्ट लिजर्ड' भी कहते हैं। लगभग 15 से 20 फुट तक पानी के ऊपर चलने की क्षमता रखने वाली यह बैसलिस्क लिजर्ड करीब 30 मिनट तक लगातार पानी के अंदर भी रह सकती है। है न यह एक कमाल की छिपकली!

हिसिंग कॉक्रोच

तुमने सांप के अलावा किसी कीड़े को हिस्स की आवाज निकालते हुए सुना है? मेडागास्कर में कॉक्रोच की एक ऐसी प्रजाति रहती है, जो डंक नहीं मारती, बल्कि हिस्स करती है, इसलिए इन्हें हिसिंग कॉक्रोच कहते हैं। यह कॉक्रोच की सबसे लम्बी प्रजाति है। लगभग 2 से 4 इंच तक लम्बे इन कॉक्रोच के पंख नहीं होते। वर्षा वनों में पोषक तत्वों की पुनरावृत्ति के लिए ये उपयोगी माने जाते हैं।

# क्या आप भी सर्दी में ठंडे पानी से नहाते हैं?

सर्दी का मौसम आते ही लोग अपने दिनचर्या में बदलाव करते हैं। रजाई में लिपटकर सोना, गर्म कपड़े पहनना और गर्म पानी से नहाना आदत बन जाता है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो सर्दी में भी ठंडे पानी से नहाना पसंद करते हैं, यह सोचकर कि इससे शरीर में ताजगी और ऊर्जा बनी रहती है। हालांकि, हेल्थ एक्सपर्ट्स का मानना है कि सर्दियों में ठंडे पानी से नहाना सेहत के लिए खतरनाक हो सकता है, और यह हार्ट अटैक जैसे गंभीर समस्याओं को जन्म दे सकता है।

ठंडे पानी से नहाने से दिल पर असर

ठंड के मौसम में जब तापमान गिरता है, तो शरीर को गर्म रखने के लिए दिल को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। ठंड के प्रभाव में रक्त वाहिकाएं सिकुड़ जाती हैं, जिससे शरीर में रक्त प्रवाह कम हो जाता है और दिल को ऑक्सीजन की आपूर्ति भी कम हो जाती है। अगर किसी व्यक्ति की धमनियां पहले से संकरी हैं, तो ठंड के कारण वे और ज्यादा सिकुड़ सकती हैं, जिससे रक्त प्रवाह और भी धीमा हो जाता है। इस स्थिति में हार्ट अटैक और ब्रेन स्ट्रोक का खतरा बढ़ सकता है।

क्यों बढ़ जाता है सर्दियों में हार्ट अटैक का खतरा?

एक अध्ययन के मुताबिक, सर्दी के मौसम में हार्ट अटैक का खतरा 31न बढ़ जाता है। इसका कारण यह है कि ठंड में शरीर को गर्म रखने के लिए दिल को ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। यह समस्या खासतौर पर उन लोगों के लिए ज्यादा जोखिम भरी हो सकती है, जो पहले से ही किसी दिल की बीमारी से पीड़ित हैं। ठंड में जब शरीर पर ठंडा पानी अचानक पड़ता है, तो रक्त वाहिकाएं और धमनियां सिकुड़ने लगती हैं, जिससे ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है।

ठंडे पानी से नहाने का प्रभाव

ठंडे पानी से नहाने से शरीर पर कई तरह के प्रभाव हो सकते हैं

ब्लड प्रेशर में वृद्धि- ठंडे पानी से नहाने से रक्त वाहिकाएं संकुचित हो जाती हैं, जिससे रक्त प्रवाह धीमा हो जाता है और ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है।

दिल पर अतिरिक्त दबाव- जब रक्त वाहिकाएं सिकुड़ती हैं, तो दिल को रक्त पंप करने के लिए ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है, जिससे दिल पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है।

हार्ट अटैक का खतरा- अगर धमनियों में पहले से ही कोई रुकावट या संकुचन है, तो ठंडे पानी से नहाने पर वे और ज्यादा सिकुड़ सकती हैं, जिससे हार्ट अटैक का खतरा बढ़ सकता है।

ब्रेन स्ट्रोक- अगर रक्त प्रवाह मस्तिष्क तक सही से नहीं पहुंचता, तो ब्रेन स्ट्रोक की समस्या भी हो सकती है।

किसे बचना चाहिए ठंडे पानी से नहाने से?

हेल्थ एक्सपर्ट्स का कहना है कि ठंडे पानी से नहाना उन लोगों के लिए खतरनाक हो सकता है, जो पहले से किसी दिल की बीमारी, हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज या ब्रेन स्ट्रोक जैसी समस्या से जूझ रहे हैं। ऐसे लोगों को ठंडे पानी से नहाने से बचना चाहिए। इसके अलावा, बुजुर्गों और बच्चों को भी ठंडे पानी से नहाने से दूर रहना चाहिए, क्योंकि उनकी शरीर की सुरक्षा प्रणाली उतनी मजबूत नहीं होती।

क्या करें, ताकि सेहत बनी रहे?

गर्म पानी से नहाना- सर्दी में हमेशा गर्म पानी से ही नहाएं, इससे शरीर को आराम मिलेगा और दिल पर दबाव नहीं पड़ेगा।

मध्यम तापमान बनाए रखें- अगर ठंडे पानी से नहाना पसंद है, तो पानी का तापमान थोड़ा सा ठंडा न रखें, बल्कि गर्मी और ठंडे पानी का संतुलन बनाकर नहाएं।

स्वस्थ आहार और व्यायाम- ठंड में शरीर को गर्म रखने के लिए स्वस्थ आहार लें और नियमित व्यायाम करें। यह दिल को स्वस्थ रखने में मदद करेगा।

सर्दी में ठंडे पानी से नहाना ताजगी का अहसास जरूर कराता है, लेकिन यह शरीर पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है, खासकर दिल पर। ठंडे पानी से नहाने से रक्त वाहिकाओं के सिकुड़ने और ब्लड प्रेशर के बढ़ने का खतरा होता है, जो हार्ट अटैक और ब्रेन स्ट्रोक का कारण बन सकता है। इसलिए, सर्दी में अपनी सेहत का ध्यान रखते हुए ठंडे पानी से नहाने से बचना चाहिए, खासकर अगर आपको दिल की बीमारी, हाई ब्लड प्रेशर या अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हैं।

# सिडनी टेस्ट में भारत को 145 रनों की लीड, पंत की धमाकेदार पारी ने दिल जीत लिया

**सिडनी (एजेंसी)।** सिडनी टेस्ट के दूसरे दिन शनिवार को भारत ने पलटवार कर आस्ट्रेलिया की पहली पारी को 181 रनों पर आलआउट कर 4 रन की लीड के साथ अपनी दूसरी पारी में छह विकेट खोकर 141 रन बनाए। भारत की कुल लीड अब 145 रन की हुई है। दिन का खेल खत्म होने के समय जडेजा 8 और वशिंगटन सुंदर 6 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। भारत ने पहली पारी में 185 रन बनाए थे। खेल के अंतिम सत्र में बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की दूसरी पारी का आकर्षण विकेटकीपर और बल्लेबाज रिषभ पंत (61) की धमाकेदार बल्लेबाजी रही। पंत ने ये रन मात्र 33 गेंदों पर छह चौके और चार छक्कों की मदद से बनाये। उन्होने अपना अर्धशतक मात्र 29 गेंदों में पूरा किया। वे पैट कमिंस की गेंद पर विकेटकीपर के हाथों लपके गये। वहीं विराट कोहली का बल्ला आज भी नहीं चला और वे सिर्फ 6 रन का योगदान दे सके। यशस्वी जायसवाल (22) ने भारत को तेज शुरुआत देने की कोशिश की मगर वह भी जल्द ही चलते बने। सीरीज में पहली बार खेल रहे प्रसिद्ध कृष्णा ने 42 रन देकर तीन विकेट चटकाए, जबकि मो सिराज ने 51 रन देकर 3 विकेट झटके। बुमराह और नीतीश कुमार रेड्डी ने दो दो विकेट हासिल किए। 4 रन की लीड मिलने के बावजूद बुमराह की फिटनेस ने भारत को चिंता में डाल दिया है। शनिवार को के सत्र की शुरुआत में सिर्फ 1 ओवर फेंकने के बाद बुमराह मैदान से बाहर गए और बाद में उन्हें स्कैन के लिए अस्पताल जाते देखा गया, जिससे बाकी मैच के लिए उनकी उपलब्धता संदेह में पड़ गई है। वहीं बुमराह की गैर मौजूदगी में सिराज ने शानदार गेंदबाजी की। पारी के 51वें ओवर में आखिरी खिलाड़ी स्कॉट बोलैंड को आउट करने में उनकी रफ्तार काबिल ए तारीफ थी। प्रसिद्ध कृष्णा और रेड्डी ने भी अपनी धारदार गेंदबाजी से सभी को आकर्षित किया। रेड्डी ने मिचेल स्टाकर को 1 रन पर और पैट कमिंस को 10 रन पर आउट किया। दोनों स्लिप में कैच आउट हुए। विकेटों की झड़ी के बावजूद, नवोदित ब्यू वेबस्टर (57) और एलेक्स कैरी (21) ने मजबूत इरादों के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी की। वेबस्टर ने अद्भुत संयम दिखाया और 105 गेंदों में पांच चौकों सहित 57 रन बनाए। उन्होने रेड्डी की गेंद पर शॉट लगा कर पहले ही टेस्ट मैच में पचास रन पूरे किये। दूसरी छोर पर कैरी ने कई आत्मविश्वास भरे स्ट्रोक खेले और दो बार ऑफ साइड से बाउंड्री लगाई। इससे पहले, भारत ने खेल पर मजबूत पकड़ के साथ शुरुआत की थी।

## जसप्रीत बुमराह का मेडिकल बुलेटिन आया बाहर, प्रसिद्ध कृष्णा ने दी अपडेट

**सिडनी (एजेंसी)।** तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा शनिवार को कहा कि कप्तान जसप्रीत बुमराह की पीठ में ऐंठन है और भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें टेस्ट में लक्ष्य का बचाव करते समय मेडिकल स्टाफ से इस स्टार तेज गेंदबाज की उपलब्धता को लेकर जानकारी का इंतजार कर रही है। बुमराह चोट के कारण एहतियाती स्कैन (जांच) कराने के बाद ड्रेसिंग रूम में लौट आए। उन्हें यहां लंच के बाद केवल एक ओवर गेंदबाजी करने के बाद मैदान से बाहर जाना पड़ा था। इस टेस्ट में बुमराह की गेंदबाजी भारत के लिए काफी अहम होगी क्योंकि टीम ने अपनी दूसरी पारी में 141 रन पर छह विकेट गंवा दिए है और उसकी कुल बढ़त सिर्फ 145 रन की है।

कृष्णा ने दूसरे दिन के खेल के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा कि उनकी पीठ में ऐंठन थी। वह स्कैन के लिए गए थे। मेडिकल टीम उनकी निगरानी कर रही है। जब मेडिकल टीम हमें कोई जानकारी देगी तभी इस बारे में कुछ पता चलेगा। बुमराह कुल मिलाकर 3 घंटे और 20 मिनट तक मैदान से दूर रहे, लेकिन उनकी वापसी से ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी से पहले भारतीय खेमे की चिंताएं कम हो सकती हैं। बुमराह की अनुपस्थिति में विराट कोहली ने टीम का नेतृत्व किया। बुमराह इससे पहले पीठ के निचले हिस्से में चोट के कारण 2022 और 2023 के बीच लगभग एक साल तक क्रिकेट से बाहर रहे थे।

श्रृंखला में पहले ही 32 विकेट ले चुके बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी में 10 ओवरों में 33 रन देकर 2 विकेट लिए। उन्होंने सुबह के सत्र में मार्नस लाबुशेन का विकेट लिया था। लंच के बाद अपने स्पैल में एक ओवर फेंकने के बाद बुमराह को कुछ असुविधा महसूस हुई। उन्होंने कोहली से बात की और मैदान से बाहर चले गए और फिर आधिकारिक प्रसारकों ने उन्हें टीम के सुरक्षा संपर्क अधिकारी और टीम डॉक्टर के साथ मैदान से बाहर जाते हुए दिखाया। 'फॉक्स स्पोर्ट्स% के दृश्यों में उन्हें एक एसयूवी में स्टेडियम से बाहर निकलते हुए दिखाया गया।

## एक दिन में 15 विकेट गिर गए, हम ऑस्ट्रेलिया इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटरों की तरह नहीं रोते : गावस्कर

**सिडनी (एजेंसी)।** भारत के महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर का मानना है कि सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में चल रहे 5वें टेस्ट में हरी पिच पर सवाल क्यों नहीं उठ रहे। पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि क्या यह खेल भारत में खेला जा रहा है। इस पर सवाल क्यों नहीं उठाए जा रहे। यह पिच टेस्ट क्रिकेट खेने के लिए बिल्कुल भी आदर्श नहीं है। पहले दिन 11 विकेट गिरे थे अब दूसरे दिन 15 विकेट गिर चुके हैं। बता दें कि भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 181 रन पर आउट करने के बाद पहली पारी में 4 रन की बढ़त ली थी। दूसरे दिन के खेल का अंत होने तक भारतीय टीम का स्कोर 141/6 हो गया है और उनके पास 145 रन की बढ़त है।

सुनील गावस्कर ने कहा कि अगर भारत में (एक ही दिन में) 15 विकेट गिर जाते, तो सब गड़बड़ हो जाती। हमारे पास ग्लेन मैक्ग्राथ हैं। वह बीते दिनों बोल रहे थे कि उन्होंने पहले कभी इस पिच पर इतनी घास नहीं देखी। क्या आपने भारत के किसी पूर्व क्रिकेटर को पिच के बारे में विलाप करते हुए सुना है? पूर्व (ऑस्ट्रेलियाई और अंग्रेजी क्रिकेटर) विशेषज्ञ हर समय भारतीय पिचों और परिस्थितियों के बारे में बात करते रहते हैं। हम विलाप करने वाले नहीं हैं, हम रोने वाले नहीं हैं। आप हमें कभी शिकायत करते हुए नहीं पाएंगे। लेकिन भारत में एक दिन में 15 विकेट गिर जाए तो यार यह नरक होगा। जब हम बाहर जाते हैं और क्रिकेट खेलते हैं तो हम ऐसा नहीं करते। अगर हम हारते हैं, तो हम हारते हैं। विदेशों में घरेलू टीमों को हराना बहुत मुश्किल है। मैंने कहा था कि जब हमने कल पिच देखी थी, तो इसपर इतनी घास थी कि गाएं भी चर सकती थी। यह बिल्कुल भी आदर्श टेस्ट मैच पिच नहीं है जो चौथे और पांचवें दिन तक चले। अगर बारिश नहीं होती तो मुझे नहीं लगता कि हम चौथे दिन यहां रहेंगे।

## भारतीय टीम की हालत से दुखी होंगे द्रविड़

**सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और कोच रहे राहुल द्रविड टीम की अभी की हालत देखकर दुखी होंगे। उन्होंने विश्व विजेता के तौर पर टीम को छोड़ा था और उनके जाने के बाद टीम की क्या हालत हो गयी। वह श्रीलंका में एकदिवसीय हारी जबकि न्यूजीलैंड के खिलाफ अपनी ही धरती पर उसे 3-0 से हार टेस्ट सीरीज में हार का सामना करना पड़ा। अब ऑस्ट्रेलिया में 1-2 से पिछड़ी हुई है, जबकि आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के खिताबी मुकाबले से तकरीबन बाहर हो चुकी है।

वहीं दूसरी ओर रोहित शर्मा भी सोच रहे होंगे कि अगर द्रविड़ एक साल और कोच रहते तो अच्छा रहता। द्रविड़ के कोच रहते भारतीय टीम का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा था और वह विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप, एकदिवसीय विश्वक के फाइनल में पहुंची थी जबकि टी20 विश्वकप उसने जीता था। भारतीय कप्तान रोहित को अभी खराब दौर से गुजरने के कारण टीम से बाहर तक रहना पड़ रहा है। उन्हें किसी का समर्थन भी नहीं मिलता दिख रहा है। द्रविड़ के कोच पद छोड़ने के बाद नये कोच बने गौतम गंभीर के मार्गदर्शन में टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। उसे न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में हार का सामना करना पड़ा है। ऑस्ट्रेलिया दौरे में भी टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। ऐसे में

टीम को ऑस्ट्रेलियाई मीडिया ने भी निशाना बनाया है। वह भी खिलाड़ियों का मजाक बना रही है। कोच गंभीर का रवैया भी कप्तान को लेकर अब तक सख्त रहा है। खराब फार्म के कारण रोहित दबाव में भी दिखे मेलबर्न में बल्लेबाजी के दौरान उनका अति रक्षात्मक रुख दिखा। एकदिससीय विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया से हार के बाद राहुल द्रविड़ कोचिंग छोड़ना चाहते थे पर रोहित ने उन्हें रुकने के लिए मनाया और भारतीय टीम विश्व विजेता बनी। इन दोनो की जुगल जोड़ी जीत की गारंटी जैसी लगती थी पर अभी टीम में गुटबाजी दिखती है। वह एकजुट नहीं नजर आती तो टीम के तौर पर आनी चाहिए। अभी वह समय है और जिस तरह से रोहित ने द्रविड़ को कोचिंग छोड़ने से रोका था उसी प्रकार कोई रोहित को रोके तो वह एक बार फिर पुराने में नजर आ सकते हैं। वह कोच के तौर पर द्रविड़ की कमी अनुभव कर रहे होंगे। वहीं द्रविड़ यह सोच रहे होंगे कि टीम इंडिया को किस जगह पर छोड़ा था और आज टीम कहां पहुंच गयी है।

## इंग्लैंड के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज से बाहर रह सकते हैं ये दिग्गज

लंदन। भारतीय क्रिकेट टीम इस साल इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज खेलेगी पर इसमें मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह शायद ही खेलें । बुमराह को कार्याभार प्रबंधन के कारण इस सीरीज से बाहर रहना पड़ सकता है । बुमराह के अलावा रोहित शर्मा और विराट भी इस सीरीज से बाहर रह सकते हैं । चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से पहले भारत की ये आखिरी 50 ओवर की सीरीज होगी । एक रिपोर्ट के अनुसार ऐसे में कार्यभार प्रबंधन के तहत ही बुमराह को इसलिए आराम दिया जाएगा जिससे वह चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पूरी तरह से फिट रहें । बुमराह पिछले कुछ समय से लगाता खेल रहे हैं जिसके उनके चोटिल होने का खतरा बढ़ जाता है । ऐसे में चयनकर्ता उनको लेकर कोई जोखिम नहीं लेना चाहेंगे । वहीं विराट और रोहित का प्रदर्शन टी20 विश्वकप के बाद से ही अच्छा नहीं रहा है । ऐसें में चयनर्ता इस सीरीज के लिए भी इन्हें आराम देकर युवा खिलाड़ियों का आजमा सकते हैं ।

## पंत की 184 के स्ट्राइक रेट से खेली गई पारी के दीवाने हुए सचिन

मुंबई । भारतीय टीम के स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर हो रहे मुकाबले के दौरान अपने पुराने अंदाज में दिखाई दिए। बेखौफ पंत ने ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों की जमकर धुनाई की। स्टार्क के ओवर में उन्होंने लगातार गेंदों पर छक्के लगाए, जबकि कुछ ओवरों में उन्होंने जमकर बाउंड्री ठोकी। उन्होंने 33 गेंदों का सामना कर 61 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली। जब तक वह क्रीज पर थे कंगारूओं की सांसे अटकी हुई थी। पंत की पारी की महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने भी तारीफ की है। पंत ने 29 गेंद में अर्धशतक लगाया, जोकि टेस्ट में भारत की ओर से लगाया गया दूसरा सबसे तेज अर्धशतक है। सबसे तेज शतक लगाने का रिकॉर्ड भी पंत के नाम दर्ज है, उन्होंने 2022 में बेंगलुरु में श्रीलंका के खिलाफ 28 गेंदों में फिफ्टी लगा दी थी। सिडनी टेस्ट की दूसरी पारी में पंत ने चार छक्के और 6 चौके लगाए। उनकी पारी के दौरान स्टेडियम में मौजूद फैंस का भरपूर मनोरंजन हुआ। पंत की पारी पर तेंदुलकर ने लिखा, इसतरह के विकेट पर, जहां ज्यादातर बल्लेबाजों ने 50 से भी कम स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी की, पंत की 184 के स्ट्राइक रेट से खेली गई पारी अद्भुत है। उन्होंने पहली गेंद से ऑस्ट्रेलिया को हिलाकर रख दिया। पंता को बल्लेबाजी करते देखना हमेशा मनोरंजक होता है। प्रभावशाली पारी थी।

## लवलीना अब खिलाड़ियों से जुड़े मामलों को उठाएंगी

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** ओलंपिक पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन को विश्व मुक्केबाजी संघ की नई एशियाई संस्था के एथलीट आयोग में शामिल किया गया है। ।लवलीना की जिम्मेदारी इसमें एशियाई और वैश्विक मुक्केबाजी में खिलाड़ियों से जुड़े मामलों को उठाना और उनकी बेहतरी के प्रयास करना रहेगा। नई एशियाई संस्था में भारत से लवलीना के अलावा अध्यक्ष अजय सिंह सहित भारतीय मुक्केबाजी महासंघ (बीएफआई) के अध्यक्ष अजय सिंह सहित छह अधिकारियों को शामिल किया गया है। विश्व मुक्केबाजी संघ का मानना है कि एशियाई मुक्केबाजी के भविष्य को बेहतर बनाने में बीएफआई से जुड़े अधिकारी अहम भूमिका निभा सकते हैं। इसी को देखते हुए इन्हें सात अहम समितियों में शामिल किया गया है। सिंह को बोर्ड सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है। बीएफआई महासचिव हेमंत कुमार कलिता और कोषाध्यक्ष दिग्विजय सिंह को ओलंपिक आयोग और वित्त एवं लेखा जांच समिति में अहम भूमिका मिली है। एशियाई मुक्केबाजी का निर्माण विश्व मुक्केबाजी को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकता है। इसका काम ये पक्का करना होगा कि मुक्केबाजी 2028 और उसके बाद भी ओलंपिक खेलों में शामिल रहे।'' एथलीट आयोग में शामिल लवलीन ने पूरे एशिया में एथलीटों के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे, अवसरों और सहायता प्रणालियों को बढ़ाये जाने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा, ''एशियाई मुक्केबाजी में एथलीट आयोग के सदस्य के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व करना सम्मान की बात है। यह सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है कि खिलाड़ियों की आवाज सुनी जाए और निर्णय लेने की प्रक्रिया में प्राथमिकता दी जाए।'' उन्होंने कहा, ''मेरा ध्यान पूरे एशिया में बेहतर प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे, निष्पक्ष अवसरों और मजबूत समर्थन प्रणालियों को आगे बढ़ाने पर होगा जो मुक्केबाजों को वैश्विक मंच पर उत्कृष्टता हासिल करने के लिए सशक्त बनाते हैं।''

## फखर को इन चार टीमों के सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीद

इस्लामाबाद । पाकिस्तान क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज फखर जमान ने आगामी टी20 विश्वकप के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली टीमों को लेकर भविष्य वाणी की है । फखर ने कहा है कि इसमें पाकिस्तान, भारत, अफगानिस्तान और दक्षिण अफीका जैसे टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी । फखर ने बासित अली से कहा कि पाकिस्तान के अलावा भारत, अफगानिस्तान और दक्षिण अफीका ऐसी टीमें हैं जो सेमीफाइनल में पहुंचेंगी । इसमें पाकिस्तान के साथ ही भारत और बांग्लादेश ए ग्रुप में है जबकि दक्षिण अफीका की टीम बी ग्रुप में इंग्लैंड, न ऑस्ट्रेलिया के साथ हैं । वहीं चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी को लेकर औपचारिक घोषणा के साथ ही इसको लेकर संशय भी दूर हो गया । अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने टूर्नामेंट का कार्यक्रम भी जारी कर दिया है । आठ टीमों के इस आयोजन में 50 ओवर के प्रारूप में 15 मैच शामिल होंगे और यह पाकिस्तान और दुबई में आयोजित किए जाएंगे । इसमें भारत और पाकिस्तान मुकाबला 23 फरवरी को दुबई में होगा । रावलपिंडी, लाहौर और कराची पाकिस्तान में टूर्नामेंट की मेजबानी करने वाले तीन स्थान होंगे । प्रत्येक स्थान पर तीन ग्रुप मैच आयोजित होंगे, साथ ही लाहौर दूसरे सेमीफाइनल की भी मेजबानी करेगा । लाहौर 9 मार्च को फाइनल की मेजबानी करेगा, जब तक कि भारत क्वालीफाई नहीं कर लेता, ऐसी स्थिति में फाइनल दुबई में खेला जाएगा । सेमीफाइनल और फाइनल दोनों में आरक्षित दिन होंगे । इंग्लैंड एकमात्र भाग लेने वाला देश है जिसने इस बहुप्रतीक्षित आयोजन के लिए अपनी टीम की घोषणा की है । ग्रुप ए के शुरुआती मैच में पाकिस्तान 19 फरवरी को कराची में न्यूजीलैंड से भिड़ेगा । अगले दिन दुबई चरण की शुरुआत भारत और बांग्लादेश के बीच होगी ।

## देश में इस बार खेले जाएंगे ये अहम टूर्नामेंट

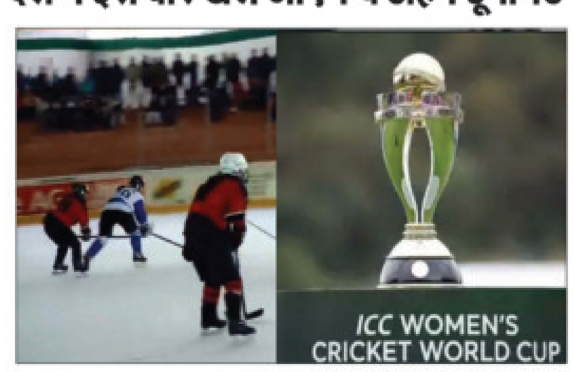


नई दिल्ली । भारत में इस साल क्रिकेट सहित अलग-अलग खेलों में बड़े-बड़े टूर्नामेंटों का आयोजन होने जा रहा है । इनमें महिला एकदिवसीय विश्वकप क्रिकेट से लेकर खो खो विश्वकप भी शामिल हैं । ऐसे में खेल प्रशंसकों को एक से बढ़कर एक मुकाबले देखने को मिलेंगे ।

खो-खो विश्वकप 2025 : नए साल की शुरुआत में ही सबसे पहले खो-खो विश्व कप का आयोजन होगा । ये टूर्नामेंट राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 13 से 19 जनवरी 2025 तक खेला जाएगा। इससे खो-खो के उभरेते हुए खिलाड़ियों को नये अवसर मिलेंगे ।

महिला एकदिवसीय विश्व कप 2025 : महिला विश्व कप क्रिकेट का आयोजन सितंबर-अक्तूबर में होगा । इस दौरान दुनिया भर की महिला टीम भारत आयेंगी और लोगों को बेहतरीन मुकाबले देखने को मिलेंगे ।

पैरा एथलेटिक्स वर्ल्ड चैंपियनशिप 2025 : पैरा एथलेटिक्स वर्ल्ड चैंपियनशिप 2025 का आयोजन भारत की राजधानी दिल्ली में होगा । 26 सितंबर से 5 अक्तूबर 2025 तक पूरी दिल्ली इसकी मेजबानी करेगी ।

खेलो इंडिया विंटर गेम्स 2025 : आइस हॉकी और आइस स्कीइंग का आयोजन 23 से 27 जनवरी तक लद्दाख में होगा । इसके बाद अल्पाइन स्कीइंग, नॉर्डिक स्कीइंग, स्की माउंटेनियरिंग और स्नोबोर्डिंग 22 से 25 फरवरी तक जम्मू-कश्मीर में आयोजित होंगे ।

आईपीएल 2025 : इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें सीजन की शुरुआत 14 मार्च से होगी । वही इसका फाइनल 25 मई को खेला जाएगा ।

## आज भारत के पास सिडनी कलंक को मिटाने का मौका, 46 सालों का सूखा हो सकता है खत्म

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारत ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी टेस्ट में खतरे की घंटी बजा दी है। भारतीय गेंदबाजों ने दूसरे दिन शानदार प्रदर्शन किया लेकिन बल्लेबाजों ने मेहनत पर पानी फेर दिया। शनिवार को स्टंप्स के समय भारत का दूसरी पारी में स्कोर 141/6 था। भारत की अभी कुल बढ़त 145 रनों की है। भारत के 185 के जवाब में ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 181 रनों पर आल आउट हो गई थी। टीम इंडिया फिलहाल मुश्किल में घिरी है। भारत का सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर रिकॉर्ड बेहद खराब रहा है। भारत पर फिर हार का खतरा मंडराने लगा है।

वैसे, सिडनी में लक्ष्य का पीछा करना कभी आसान नहीं होता। हालांकि, मेजबान ऑस्ट्रेलिया ने कई बार चुनौती पर पार पाया है। यहां सबसे बड़ा टारगेट चेज करने का रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के नाम ही दर्ज है। ऑस्ट्रेलिया ने यह कारनामा साल 2006 में किया था। कंगारुओं ने तब साउथ अफ्रीका के विरुद्ध 287 रनों का लक्ष्य हासिल कर 8 विकेट से विजयी परचम फहराया। उसके बाद से एससीजी में 21वीं सदी में कोई भी टीम 200 प्लस का टारगेट सफलतापूर्वक चेज नहीं कर सकी।

सिडनी में अभी तक छह मर्तबा 200 से अधिक का लक्ष्य हासिल हुआ है। यह कमाल भी ऑस्ट्रेलिया ने ही किया है। ऑस्ट्रेलिया ने 1898 में इंग्लैंड के विरुद्ध 276 और 1907 में 275 रन बनाकर जीत दर्ज की। कंगारू टीम ने 1985 में न्यूजीलैंड के खिलाफ 260, इंग्लैंड के विरुद्ध 1980 में 216 जबकि 1947 में 214 का टारगेट चेज किया। वहीं, इंग्लैंड ने सिडनी में 1903 में 194 रनों के लक्ष्य का सफलतापूर्वक पीछा किया था। ऑस्ट्रेलिया का सिडनी में दमदार रिकॉर्ड है। ऑस्ट्रेलिया ने 121 टेस्ट खेले हैं, 61 में जीत और 28 में हार मिली है।

सिडनी में भारतीय टीम पर एक कलंक लगा हुआ है। भारत ने इस मैदान पर पिछले 46 सालों से कोई टेस्ट मैच नहीं जीता। भारत ने सिडनी में एकमात्र जीत 1978 में हासिल की थी। भारत और ऑस्ट्रेलिया ने एससीजी में 13 टेस्ट मैच खेले हैं। ऑस्ट्रेलिया ने 5 टेस्ट जीते और 7 ड्रॉ रहे। रविवार को पांचवें टेस्ट का रिजल्ट निकलने की संभावना है। भारत को अगर सिडनी में कलंक मिटाना है, तब ऑस्ट्रेलिया को 200 से अधिक रनों का टारगेट देने पर फोकस करना होगा। ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा 8 और वॉशिंगटन सुंदर 6 रन बनाकर नाबाद हैं। पंत ने दूसरे दिन 33 गेंदों में 61 रन की तूफानी पारी खेली। विराट कोहली (6), केएल राहुल (13) और शुभमन गिल (13) का बल्ला नहीं चला। यशस्वी जायसवाल ने 23 रनों का योगदान दिया।

## ब्रिस्बेन इंटरनेशनल टेनिस में जोकोविच को ओपेल्का ने सीधे सेटों में हराया

ब्रिस्बेन । नोवाक जोकोविच को ब्रिस्बेन इंटरनेशनल टेनिस के क्वार्टर फाइनल में राइली ओपेल्का के खिलाफ सीधे सेटों में 6-7, 3-6 से हार मिली । अमेरिका के ओपेल्का ने 16 ऐस लगाकर अपने करियर की सबसे बड़ी जीत हासिल की है । 47 साल के जोकोविच ऑस्ट्रेलियन ओपन की तैयारी के लिए इस टूर्नामेंट में खेल रहे हैं । ऑस्ट्रेलियाई ओपन की शुरुआत 12 जनवरी से होगी और जोकोविच इसके 10 बार के चैम्पियन रहे हैं। ओपेल्का ने फरवरी 2022 में सर्वश्रेष्ठ करियर रैंकिंग 17 हासिल की है । कूल्हे की सर्जरी के कारण खेल से दूर रहने के कारण उनकी मौजूदा रैंकिंग 293 है । ओपेल्का के सामने सेमीफाइनल में जी एमपेत्शी पेरीकार्ड की चुनौती होगी । पेरीकार्ड ने याकूब मेनसिक को 7-5, 7-6 से हराया । दूसरे सेमीफाइनल में जिरी लेहेका का मुकाबला ग्रिगोर दिमित्रोव से होगा । लेहेका ने निकोलस जैरी को 6-4, 6-4 से हराया और जॉर्डन थॉम्पसन के रिटायर होने पर दिमित्रोव ने अंतिम चार में जगह बनाई ।

## एक नजर

### कोहरे से कोहराम, विजिबिलिटी शून्य, रेल और विमान यात्री परेशान

**नई दिल्ली:** समूचा उत्तर भारत आज कोहरे की गिरफ्त में है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लोगों को घने कोहरे से दो-चार होना पड़ा। लगातार आज दूसरे दिन दिल्ली घने कोहरे की सफेद चादर में लिपटी नजर आ रही है। इससे दिल्ली के कई इलाकों में विजिबिलिटी न के बराबर है। कुछ जगहों पर ड्राइविंग करते समय 10 मीटर दूर देखना भी संभव नहीं हो पाया। कई इलाकों में विजिबिलिटी शून्य है। खराब दृश्यता का असर रेल और हवाई यातायात पर पड़ा है और यात्रियों की परेशानी बढ़ गई है। रेलवे ने आज सुबह लगभग छह बजे दिल्ली पहुंचने वाली 49 ट्रेनों के देरी से चलने और 22 गाड़ियों के प्रस्थान समय में परिवर्तन की सूचना दी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने कहा है कि दिल्ली को कुछ दिन तक ऐसे ही मौसम का सामना करना पड़ सकता है। अगले कुछ दिनों तक न्यूनतम तापमान 7 से 9 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। विभाग ने उत्तर भारत में कोहरे का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। आज सुबह उत्तर भारत के लगभग सभी एयरपोर्ट पर विजिबिलिटी शून्य है। दिल्ली-एनसीआर में भी कई इलाकों में विजिबिलिटी शून्य दर्ज की गई। कोहरे के कारण दिल्ली एयरपोर्ट पर 100 से ज्यादा उड़ान प्रभावित हुई हैं। दिल्ली एयरपोर्ट पर अभी तक 30 उड़ानों को रद्द किया गया है। इनमें सबसे ज्यादा इंडिगो की उड़ाने हैं। विजिबिलिटी घटने का असर सड़क और रेल परिवहन सेवाओं पर भी पड़ा है।

### भीमताल में ईंधन फैक्टरी में लगी आग

**नैनीताल:** नैनीताल जनपद के भीमताल में शनिवार को अपराह्न में एक भयावह अग्नि दुर्घटना सामने आयी है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यहां सिडकुल क्षेत्र में विकास भवन व लेक्स इंटरनेशनल स्कूल के पास स्थित एक ईंधन फैक्टरी में आग लगने की घटना हुई है। फिलहाल अग्निशमन बलों की तीन गाड़ियां आग को बुझाने में जुटी हुई हैं। पुलिस एवं जल संस्थान आदि विभाग भी आग बुझाने के कार्य में जुटे हुए हैं, लेकिन अभी आग बुझाने के कार्य में सफलता नहीं मिली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार भीमताल के सिडकुल क्षेत्र में कुमाऊं विश्वविद्यालय के द्वारा कूड़े से ग्राफीन एवं तारपीन का तेल आदि बनाने की फैक्टरी एक उद्यमी के द्वारा स्थापित की गयी थी। इस फैक्टरी में अति आधुनिक तकनीक के माध्यम से प्लास्टिक सहित अन्य कई तरह के कूड़े-कचरे से अत्यधिक उपयोगी ग्राफीन एवं अन्य उत्पाद तैयार किये जाते हैं। फैक्टरी के स्वामी मारुति नंदन साह ने बताया कि यह फैक्टरी राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये उपकरणों से स्थापित की गयी थी। आग बुझाने के लिये फैक्टरी में फायर एक्सटिंगुशरों के साथ नाइट्रोजन गैस भी उपलब्ध थी।

### गुजरात के कच्छ में 3.8 तीव्रता का भूकंप

**भुज:** गुजरात के कच्छ में आज शाम 4:37 बजे तीव्र भूकंप झटके महसूस किए गए । भूकंप का केन्द्र कच्छ के दुधई के समीप बताया गया है। इंस्टीट्यूट ऑफ सिस्मिक रिसर्च (आईएसआर) की ओर से यह जानकारी दी गई है। इंस्टीट्यूट ऑफ सिस्मिक रिसर्च के अनुसार शनिवार शाम 4:37 बजे गुजरात के कच्छ जिले में 3.8 तीव्रता का भूकंप महसूस किया गया। कच्छ के दुधई के समीप नवलखा रण में जमीन से 25 किलोमीटर नीचे इसका केन्द्र दर्ज किया गया। यह स्थल कच्छ के दुधई से उत्तर-पश्चिम करीब 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्रशासनिक जानकारी के अनुसार भूकंप से किसी तरह के जानमाल के नुकसान की खबर नहीं है। इंस्टीट्यूट ऑफ सिस्मिक रिसर्च के डाटा के अनुसार पिछले एक सप्ताह में गुजरात में यह चौथा भूकंप का झटका आया है।

# मोदी सरकार ने 10 साल में 68 हजार करोड़ के आधारभूत संरचना के काम किये : अमित शाह

एजेंसी

**नई दिल्ली :** केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के शहरी विकास को नीतिगत आधार देने का काम किया है। मोदी सरकार ने 10 साल में दिल्ली में 68 हजार करोड़ रुपये के आधारभूत संरचना के काम किये हैं। अमित शाह नई दिल्ली में कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास सुषमा भवन और एडवांस पशु केयर सेंटर का उद्घाटन करने के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे। छात्रावास का नाम पूर्व विदेश मंत्री एवं भाजपा नेत्री सुषमा स्वराज के नाम पर रखा गाय है। इस अवसर पर अमित शाह ने कहा कि सुषमा स्वराज को हमेशा भाजपा के महान नेताओं में से एक के रूप में याद किया जाएगा। भारत के संसदीय राजनीति

के इतिहास में वे उन नेताओं में से एक हैं जो एनडीए-1 और एनडीए-2 दोनों सरकारों में महत्वपूर्ण विभागों की मंत्री रहीं। इस देश का लोकतांत्रिक इतिहास सुषमा स्वराज को विदेश मंत्री या स्वास्थ्य मंत्री के रूप में नहीं जानेगा, बल्कि उन्हें एक संघर्ष करने वाली विपक्ष की नेत्री के रूप में याद रखेगा। उन्होंने कहा कि यह सुषमा जी ही थीं जिन्होंने संसद में यूपीए-2 के 12 लाख करोड़ रुपये के घोटाले को संसद भवन में उजागर किया था। वह एक उदाहरण हैं कि एक विपक्ष का नेता कैसा होना चाहिए। मैं चाहूंगा कि सभी विपक्ष के नेता उनके काम का अध्ययन करें और उनके जैसे ही दिशा में काम करना शुरू करें। उन्होंने कहा, विपक्ष के नेता का पद लोकतंत्र में कितना महत्वपूर्ण होता है, इसका जब उदाहरण दिया जाएगा तब सुषमा जी को जरूर याद किया जाएगा। शाह ने एनडीएमसी क्षेत्र में तमाम विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि 2014 में प्रधानमंत्री का पद संभालने के बाद से नरेन्द्र मोदी ने देश के शहरी विकास को नीतिगत आधार देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि यह भवन प्रधानमंत्री के अर्बन डेवलपमेंड का उदाहरण है। शाह ने आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधाते हुए कहा कि जो लोग हिसाब नहीं देना चाहते और हिसाब मांगने की आदत है। उन्हें बताना चाहता हूं कि मोदी सरकार ने पिछले 10 साल में दिल्ली में 68 हजार करोड़ रुपये के आधारभूत संरचना के काम किये हैं। सड़क निर्माण पर 41 हजार करोड़ रुपये, रेलवे के काम 15 हजार करोड़, 12 हजार करोड़ रुपये के एयरपोर्ट और उसके आसपास की सेवाओं पर खर्च किये। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे अब सिर्फ 45 मिनट में पहुंच सकते हैं। आठ हजार करोड़ रुपये खर्च हुए। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे 24 घंटे की यात्रा को 12 घंटे में बदलने के लिए हाई स्पीड कोरिडोर बनाया जा रहा है। द्वारका एक्सप्रेस-वे 7500 करोड़ रुपये की लागत से बन रहा है। ईस्टर्न पेरिफेरल वे 11 हजार करोड़ की लगात से बन रहा है। 500 दिन में पूरा हुआ। पीएम उदय के तहत 1731 कालोनियों को नियमित करने की प्रक्रिया शुरू कर 40 लाख गरीबों को मालिकाना हक देने का काम किया।

# मप्र के पीथमपुर में जहरीला कचरा जलाने के विरोध में तीसरे दिन भी हुआ प्रदर्शन

एजेंसी

**जबलपुर :** मध्य प्रदेश के धार जिले में पीथमपुर में भोपाल के यूनियन कार्बाइड कारखाने के जहरीले कचरे के निष्पादन के विरोध में लगातार तीसरे दिन भी प्रदर्शन जारी है। शनिवार को सुबह करीब 10 बजे तारपुरा गांव से लगी रामकी एनवायरो इंडस्ट्रीज की फैक्टरी पर पथराव किया गया। इसमें कुछ वाहनों के कांच टूट गए। इसके बाद पुलिस ने लोगों को फैक्टरी के पास से खदेड़ा। वहीं, नागरिक उपभोक्ता मंच के अध्यक्ष डॉ. पीजी नाजपांडे और सामाजिक कार्यकर्ता रजत भार्गव ने यूनियन कार्बाइड कचरा

निस्तारण मामले में आज एनजीटी भोपाल में याचिका दायर की है, जिस पर शीघ्र सुनवाई की मांग की गई है। दरअसल, भोपाल गैस कांड के 40 साल बाद यूनियन कार्बाइड में डम्प पड़ा 337 मीट्रिक टन जहरीला कचरा निष्पादन के लिए पीथमपुर भेजा गया है। इस कचरे को रामकी एनवायरो इंडस्ट्रीज में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच जलाया जाना है, लेकिन स्थानीय लोग इसका विरोध कर रहे हैं। शुक्रवार को सुबह से लेकर देर रात लोगों ने यहां प्रदर्शन किया। इसके बाद शनिवार को भी रामकी एनवायरो इंडस्ट्रीज की फैक्टरी के पास विरोध प्रदर्शन जारी है। यहां पथराव की घटना भी हुई है। मौके पर तैनात एसडीएम प्रमोद कुमार गुर्जर ने बताया कि पथराव की वजह एक अफवाह को बताया जा रहा है। ये अफवाह फैलाई गई थी कि भोपाल से आए कंटेनरों को खोलकर यहां कचरा अनलोड किया जा रहा है। यह भी कहा गया कि अनलोडिंग में एक मजदूर घायल हुआ है लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ है। कोई कंटेनर नहीं खोला गया है। मैंने खुद सभी कंटेनरों को चेक किया है। उन्होंने कहा कि फैक्टरी परिसर और इसके 100 मीटर दायरे में प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं। इसका उल्लंघन करने वाले पर कार्रवाई की जाएगी।

### शॉर्ट सर्किट से लगी आग, नौ घर जलकर हुए राख

**अररिया :** जिले के बथनाहा वार्ड संख्या 13 में मध्य रात्रि के बाद अचानक आग लग गई। जिससे नौ परिवारों के घर सहित सारा समान जलकर राख हो गया।आगजनी में लाखों रुपयों की परिसंपत्तियां जलकर राख हो गई। आग अलगने के कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल पाया है,लेकिन पीड़ित परिवार वालों के अनुसार शॉर्ट सर्किट से आग लगी। स्थानीय लोगों के प्रयास से रात में ही आग पर काबू पाया गया। आग करीबन रात के एक बजे लगी। आगजनी में मो.मुमताज, हफिला खातून, मो.जैनुल, मो.नफील, मो.फारुख, मो.कलीम, अकीन मियां, मो.अजीम, मो.हफाजुद्दीन, मो.इशाक आदि का घर समेत घर में रखे जलकर राख हो गया। आगजनी की सूचना फारबिसगंज अंचलाधिकारी को भी आवेदन के माध्यम से देते हुए ग्रामीणों ने राहत सामग्री दिए जाने की गुहार लगाई है।

# महाकुम्भ के दौरान अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं को न हो असुविधा : मुख्यमंत्री

एजेंसी

**अयोध्या :** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को भाजपा कार्यकताओं से बैठक के उपरांत प्रशासनिक अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय कुमारगंज के सभागार में जनपद के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मुख्यमंत्री ने महाकुम्भ-2025 के दौरान अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा, क्लाइड मैनेजमेंट, आश्रय स्थल आदि को लेकर जानकारी हासिल की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रयागराज महाकुम्भ-2025 में 40-45 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इसमें से अधिकांश श्रद्धालु अयोध्या भी आएंगे। यहां श्रद्धालु रामलला, हनुमानगढ़ी, सूर्यकुंड समेत अनेक मंदिरों व स्थलों पर दर्शन करेंगे। स्थानीय प्रशासन दर्शनार्थियों की सुरक्षा, क्लाउड मैनेजमेंट, दर्शन-पूजन,

आश्रय स्थल आदि को लेकर सारी तैयारी पूर्ण कर ले। ठंड के मौसम में किसी भी श्रद्धालु को यहां परेशानी नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने स्वच्छता पर जोर दिया। साथ ही कहा कि यहां अलाव आदि की भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। मंडलायुक्त गौरव दयाल ने महाकुम्भ-2025 के संबंध में अयोध्या में होने वाली तैयारियों को लेकर प्रस्तुतिकरण भी दिया गया। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए। समीक्षा बैठक में स्थानीय प्रशासन, पुलिस व जिले के आलाधिकारी मौजूद रहे।

# पंजाब कांग्रेस के नेताओं ने दिल्ली के लोगों को आआपा के झूठे वादों के खिलाफ चेताया

एजेंसी

**नई दिल्ली :** पंजाब प्रदेश कांग्रेस प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वडिंग के नेतृत्व में वहां के कांग्रेस पार्टी से सांसदों, विधायकों और पदाधिकारियों ने शनिवार को दिल्ली में विजय चौक पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने हाथ में प्लेकार्ड थाम रखा था, जिस पर लिखा था, पंजाब की महिलाओं को देकर धोखा, झूठे मांग रहे दिल्ली में मौका। इस अवसर पर पत्रकारों से बातचीत में राजा वडिंग ने कहा कि यह प्रदर्शन दिल्ली के लोगों को आम आदमी पार्टी के झूठे वादों के प्रति सचेत करने के लिए है। उन्होंने कहा कि आआपा संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पौने तीन साल पहले पंजाब की महिलाओं को हर महीने 1000 रुपये देने का वादा किया था,

जो आज तक पूरा नहीं हुआ। अब वह दिल्ली की महिलाओं को हर माह 2100 रुपये देने का वादा कर रहे हैं, इसलिए दिल्ली के मतदाताओं उनके झांसे में आने की जरूरत नहीं है। पंजाब कांग्रेस प्रमुख ने कहा कि केजरीवाल ने सूबे के लोगों से जो चुनावी वादे किए थे, उन्हें पौने तीन साल से लोग पूरा होने का इंतजार कर रहे हैं। उन वादों पर लोगों ने भरोसा कर विधानसभा में 92 सीटें उन्हें दीं। आआपा का नारा था कि पंजाब बदलेगा, इस पर लोगों ने भरोसा किया लेकिन वो ठगे गए। उनके साथ वादा दर वादा ही किया गया। आआपा ने सूबे की महिलाओं को 1100 रुपये हर माह देने का वादा किया लेकिन यह आज तक पूरा नहीं हुआ। अब ऐसा ही वादा दिल्ली की महिलाओं के साथ कर रहे हैं। दिल्ली में वो 2100 रुपये हर माह देने का वादा कर रहे हैं।

# आईएएफ ने गुवाहाटी वायु सेना केंद्र में उद्योग आउटरीच कार्यक्रम 2025 की बनायी योजना

एजेंसी

**गुवाहाटी :** भारतीय वायु सेना भारत की रक्षा क्षमता को मजबूत करने और स्वदेशी नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक उद्योग आउटरीच कार्यक्रम 25 आयोजित करने जा रही है। यह कार्यक्रम दो दिनों के लिए तैयार किया गया है, जिसका पहला चरण 13 जनवरी को ऑनलाइन आयोजित किया जाएगा और दूसरा चरण 15 जनवरी को गुवाहाटी वायु सेना केंद्र में आयोजित किया जाएगा। आईओई25 रक्षा उद्योग के भागीदारों, नवप्रवर्तकों और स्टार्ट-अप्स को भारतीय वायु सेना से जोड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम

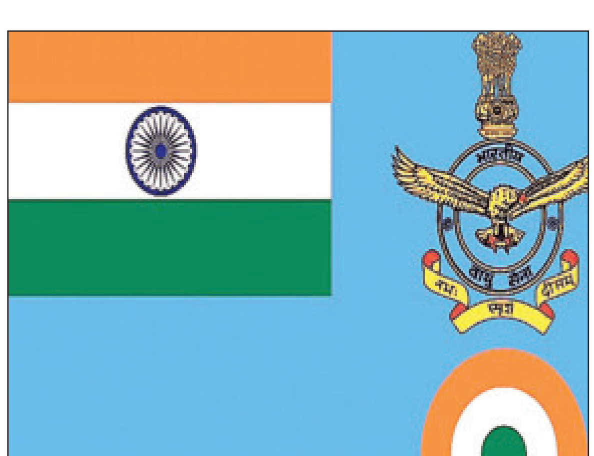

करेगा, जो रक्षा में नवाचार की जरूरत और एक आत्मनिर्भर रक्षा परितंत्र के निर्माण की दिशा में भारत सरकार के प्रयासों और दृष्टिकोण पर प्रकाश डालेगा। ऑनलाइन चरण के दौरान प्रमुख सत्रों में आईएएफ के एयरोस्पेस डिजाइन निदेशालय द्वारा 'आईएएफ की ओर से आत्मनिर्भरता पहल पर एक संक्षिप्त विवरण'; रक्षा मंत्रालय के डीआईओ द्वारा आईडीईएक्स योजनाओं, नीतियों एवं प्रक्रियाओं पर एक संक्षिप्त विवरण; डीजीएक्यूए द्वारा गुणवत्ता आश्वासन एवं प्रमाणन प्रक्रियाओं पर प्रस्तुति ; सीईएमआईएलएसी द्वारा उड़न योग्यता प्रमाणन प्रक्रिया पर प्रस्तुति और आईएएफ के एयरक्राफ्ट सिस्टम्स टेस्टिंग एस्टेब्लिशमेंट द्वारा 'एयरबोर्न और एविएशन से संबंधित प्रणालियों के लिए प्रमाणन आवश्यकताओं और परीक्षण प्रक्रियाओं का परिचय' शामिल है। आईओई25 का दूसरा चरण 15 जनवरी को गुवाहाटी वायु सेना केंद्र में आयोजित किया जाएगा, जहां ऑपरेटरों के साथ सीधे संपर्क से रक्षा उद्योग के प्रतिनिधियों को परिचालन जरूरतों को बेहतर तरीके से समझने और उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद मिलेगी, जहां वे अभिनव समाधानों के साथ योगदान दे सकते हैं। इस पहल का उद्देश्य रक्षा क्षेत्र में मौजूद अवसरों की पहचान करके रक्षा उद्योग की भागीदारी को मजबूत करना और भारत के आत्मनिर्भर बनने के रणनीतिक लक्ष्य को हासिल करने में मदद के लिए अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करना है।

## संक्षिप्त खबरें

### मणिपुर में ताजा हिंसा को लेकर कांग्रेस ने प्रधानमंत्री पर साधा निशाना

**नई दिल्ली:** कांग्रेस ने मणिपुर में ताजा हिंसा के लिए केंद्र सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। पार्टी ने दोहराया है कि मणिपुर की समस्या को सुलझाने के लिए प्रधानमंत्री को सभी राजनीतिक दलों के साथ मिल बैठकर सार्थक कोशिश करनी चाहिए। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को एक वक्तव्य में कहा कि मणिपुर में हाल ही में एक बार फिर हिंसा की वारदात देखने को मिली है। इस बार भीड़ ने पुलिस अधीक्षक पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप कांगपोकपी जिले में कई लोग घायल हो गए। खरगे ने कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने इस घटना पर खेद जताया है लेकिन यह उनके लिए शर्मनाक है। प्रधानमंत्री के मणिपुर का दौरा नहीं करने के अवसरों को वहां के मुख्यमंत्री अपने तरीके से समय-समय पर भुना रहे हैं। खरगे ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने आखिरी बार चुनावी बेला में जनवरी 2022 में प्रचार के लिए मणिपुर गए थे। राज्य में 3 मई 2023 को हिंसा भड़क उठी। 600 से ज्यादा दिन बीत चुके हैं और सैटेलाइट इमेज के जरिए मीडिया रिपोर्ट्स से पता चला है कि राज्य में कई गांवों का सफाया हो चुका है। हाल ही में एक बार फिर हिंसा की एक और घटना देखने को मिली जब भीड़ ने पुलिस अधीक्षक पर हमला किया, जिसके परिणामस्वरूप कांगपोकपी जिले में कई लोग घायल हो गए। यह खूबसूरत सीमावर्ती राज्य जिस तरह से खूनखराबे के दौर से गुजर रहा है, उसमें अबतक 250 से ज्यादा निर्दोष लोगों की मौत हो चुकी है और 60,000 लोग विस्थापित हो चुके हैं। लोग अभी भी 20 महीने से शिविरों में रह रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा है कि शांति और सामान्य स्थिति सुनिश्चित करना केंद्र और राज्य सरकारों की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है। कांग्रेसाध्यक्ष ने कहा कि 6 दिसंबर को मणिपुर के लिए इंडी गठबंधन के घटक दलों ने प्रधानमंत्री से तीन खास अनुरोध किए थे। पहला- 2024 खत्म होने से पहले मणिपुर का दौरा करें, लेकिन आपने ऐसा नहीं किया। दूसरा- दिल्ली में अपने कार्यालय में सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को बुलाएं लेकिन आपने ऐसा नहीं किया। तीसरा- मणिपुर में खुद को सीधे तौर पर शामिल करें, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि आपने ऐसा किया है। खरगे ने सख्त लहजे में कहा, श्प्रधानमंत्री मोदी अगर इनमें से कुछ भी नहीं करते हैं तो आप राजधर्म का पालन न करने के संवैधानिक दोष से बच नहीं सकते।

### नेपाल में पेट्रोलियम पदार्थ मिलने की प्रधानमंत्री ओली ने की घोषणा

**काठमांडू:** प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने नेपाल में पेट्रोलियम उत्पाद मिलने की घोषणा की है। पिछले कुछ महीने से नेपाल में पेट्रोलियम पदार्थों की संभाव्यता अध्ययन के लिए उत्खनन का काम किया जा रहा है। प्रधानमंत्री ओली ने अपने आधिकारिक फेसबुक पेज पर एक पोस्ट के माध्यम से इस बात को सार्वजनिक किया है। अपने फेसबुक पेज पर प्रधानमंत्री ओली ने लिखा है कि दैलेख जिला में किए जा रहे अन्वेषण में 402 मीटर की गहराई पर पेट्रोलियम पदार्थ का नमूना मिला है जिसे परीक्षण के लिए भेजने के बाद नेपाल में भी पेट्रोलियम पदार्थ होने की बात पक्की हो गई है। हालांकि पेट्रोलियम पदार्थ के निकाले गए नमूने को वाणिज्यिक निष्कर्षण की ओर बढ़ने से पहले प्रयोगशाला परीक्षण से गुजरना होगा। प्रधानमंत्री ओली ने इस खोज को महत्वपूर्ण बताते हुए आश्वासन दिया कि इसके उपयोग के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। बताया जा रहा है कि पिछले कई दशकों से दैलेख जिले के इस स्थान के इर्द गिर्द पृथ्वी की सतह पर गैस जल रही है और पेट्रोलियम उत्पाद बाहर निकल रहे हैं। पेट्रोलियम अन्वेषण और संवर्धन परियोजना के प्रमुख दिनेश कुमार नपीत के अनुसार यह क्षेत्र पेट्रोलियम उत्पादों के अस्तित्व की पुष्टि करने वाले कई प्रमाण मिलने के बाद खुदाई का काम मई 2024 में शुरू किया गया था।

### जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा में सेना का वाहन खाई में गिरा, तीन जवान बलिदान

**बांदीपोरा:** उत्तरी कश्मीर के बांदीपोरा जिले में शनिवार को सेना का एक वाहन खाई में गिर गया। हादसे में तीन जवानों का बलिदान हो गया, जबकि तीन घायल हैं। घायलों में दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि दुर्घटना जिले के एसके पायीन इलाके में हुई। सेना का वाहन सड़क से फिसलकर पास की खाई में गिर गया। उन्होंने बताया कि दुर्घटना के तुरंत बाद बचाव अभियान शुरू कर दिया गया था। एमएस बांदीपोरा अस्पताल के डॉ. मसरत ने बताया कि दुर्घटना में घायल हुए छह में से पांच सैन्य कर्मियों को अस्पताल लाया गया। उन्होंने बताया कि इनमें से दो को मृत घोषित कर दिया गया, जबकि तीन गंभीर घायलों को श्रीनगर रेफर किया गया। इनमें से एक और जवान ने रास्ते में दम तोड़ दिया।

### अमूल डेयरी के पशुपालकों ने किया 16,000 किलो शहद का उत्पादन

**अहमदाबाद :** गुजरात में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में किसानों को मधुमक्खी पालन जोड़ने और इसके जरिए उनकी आय में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए अनेक योजनाएं क्रियान्वित की गई हैं। ह्यमिशन मधुमक्खी कार्यक्रम में एक बड़ी पहल है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अमूल डेयरी के पशुपालकों ने 16,000 किलो शहद का उत्पादन किया है, जो इस योजना की उल्लेखनीय सफलता को दशार्ता है। मिशन मधुमक्खी कार्यक्रम को खेड़ा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ, आणंद के माध्यम से कार्यान्वित किया गया है। इस प्रोजेक्ट से श्वेत क्रांति के बाद मधु क्रांति की दिशा में एक बड़ी पहल की गई है। अमूल डेयरी ने इस वर्ष की शुरूआत में प्रति लाभार्थी 10,000 रुपये के योगदान के साथ आणंद, खेड़ा और महिसागर जिले के 284 सभासद पशुपालक किसानों को मधुमक्खी पालन के इस प्रोजेक्ट में शामिल किया। डेयरी की ओर से प्रत्येक सभासद को मधुमक्खी के 10 बॉक्स और 5 सभासदों के बीच एक हनी एक्सट्रैक्टर भी दिया गया। इन 284 पशुपालकों ने अब तक लगभग 16,000 किलो शहद का रिकॉर्ड उत्पादन कर प्रोजेक्ट की सफलता का एक नया अध्याय लिखा है। अमूल डेयरी की प्रोसेसिंग और पैकिंग इकाई ने इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत अब तक करीब 2 टन शहद की प्रोसेसिंग की है। इतना ही नहीं, ये सभासद पशुपालक अमूल के अलावा सीधे बिक्री के माध्यम से भी आय अर्जित कर रहे हैं। खास बात यह है कि इन सभासदों ने पहले ही वर्ष के दौरान मधुमक्खी पालन के लिए योगदान के रूप में निवेश की गई पूंजी का लगभग 75 फीसदी वापस पा लिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मन की बात में मीठी क्रांति का उल्लेख कर चुके हैं, जो मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की एक बड़ी पहल है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के अधिक से अधिक किसानों से मधुमक्खी पालन से जुड़ने का आह्वान किया है। प्रधानमंत्री के इस आह्वान को गुजरात ने हाथों हाथ लिया है। मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए मधुमक्खी समूह कॉलोनी तथा मधुमक्खी बॉक्स और हनी एक्सट्रैक्टर की जरूरत पड़ती है। आम तौर पर दस मधुमक्खी समूह कॉलोनी और बॉक्स तथा एक हनी एक्सट्रैक्टर के लिए लगभग 60 से 70 हजार रुपये तक की लागत आती है। मधुमक्खी से शहद के अलावा मोम, राज अवलेह (रॉयल जेली), मधुमक्खी विष और गोंद का उत्पादन करने से अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। मधुमक्खी पालन से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अपार अवसर पैदा हुए हैं। किसानों को खेती के साथ ही अतिरिक्त आय का स्रोत मिला है, ऐसे में उनकी आय को दोगुना करने का प्रधानमंत्री का संकल्प पूरा हो रहा है।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** ( *पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**